بسم الله الرحمن الرحيم

सुनन व नवाफ़िल

क़ुरआनी आयतें

قَالَ اللهُ تَعَالٰى: ﴿وَمِنَ الَّيْلِ فَتَهَجَّدْ بِهٖ نَافِلَةً لَّكَ ۖ عَسٰٓى اَنْ يَّبْعَثَكَ رَبُّكَ مَقَامًا مَّحْمُوْدًا﴾ [بني اسرائيل:٧٩]

अल्लाह तआ़ला ने अपने रसूल ﷺ से ख़िताब फ़रमाया : और रात के बाज़ हिस्से में बेदार हो कर तहज्जुद की नमाज़ पढ़ा करें, जो कि आपके लिए पांच नमाज़ों के अलावा एक ज़ाइद नमाज़ है। उम्मीद है कि इस तहज्जुद पढ़ने की वजह से आप के रब आपको मक़ामे महमूद में जगह देंगे।

(बनी इसराईल : 79)

फ़ायदा : क़ियामत में जब सब लोग परेशान होंगे, तो रसूलुल्लाह ﷺ की सिफ़ारिश पर इस परेशानी से नजात मिलेगी और हिसाब-किताब शुरू होगा। इस सिफ़ारिश के हक़ को मक़ामे महमूद कहते हैं।

(ब्यानुल क़ुरआन)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿وَالَّذِيْنَ يَبِيْتُوْنَ لِرَبِّهِمْ سُجَّدًا وَّقِيَامًا﴾ [الفرقان:٦٤]

(अल्लाह तआ़ला ने अपने नेक बन्दों की एक सिफ़त यह ब्यान फ़रमाई कि) वे लोग अपने रब के सामने सज्दे में और खड़े हो कर रात गुज़ारते हैं।

(फ़ुरक़ान : 64)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿تَتَجَافٰى جُنُوْبُهُمْ عَنِ الْمَضَاجِعِ يَدْعُوْنَ رَبَّهُمْ خَوْفًا وَّطَمَعًا ز وَّمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ○ فَلَا تَعْلَمُ نَفْسٌ مَّآ اُخْفِيَ لَهُمْ مِّنْ قُرَّةِ اَعْيُنٍ ج جَزَآءً ۢ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ﴾ [السجدة:١٦،١٧]

अल्लाह तआला का इर्शाद है कि वे लोग रातों को अपने बिस्तरों से उठ कर अपने रब को अज़ाब के डर से और सवाब की उम्मीद से पुकारते रहते हैं (यानी नमाज़, ज़िक्र, दुआ में लगे रहते हैं) और जो कुछ हमने उनको दिया है, उसमें से ख़ैरात किया करते हैं। ऐसे लोगों के लिए आंखों की ठंढक का जो सामान ग़ैबी ख़ज़ाने में मौजूद है उसकी किसी शख़्स को भी ख़बर नहीं। यह उनको उन आमाल का बदला मिलेगा, जो किया करते थे।

(सज्दा : 16-17)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿اِنَّ الْمُتَّقِيْنَ فِيْ جَنّٰتٍ وَّعُيُوْنٍ○ اٰخِذِيْنَ مَآ اٰتٰهُمْ رَبُّهُمْ ط اِنَّهُمْ كَانُوْا قَبْلَ ذٰلِكَ مُحْسِنِيْنَ○ كَانُوْا قَلِيْلًا مِّنَ الَّيْلِ مَا يَهْجَعُوْنَ○ وَبِالْاَسْحَارِ هُمْ يَسْتَغْفِرُوْنَ﴾ [الذّريٰت:١٥-١٨]

अल्लाह तआला का इर्शाद है : मुत्तक़ी लोग बाग़ों और चश्मों में होंगे उनके रब ने उन्हें जो सवाब अता किया होगा वह उसे ख़ुशी-ख़ुशी ले रहे होंगे। वे लोग इससे पहले यानी दुनिया में नेकी करने वाले थे। वे लोग रात में बहुत ही कम सोया करते थे (यानी रात का अक्सर हिस्सा इबादत में मशग़ूल रहते थे) और शब के आख़िरी हिस्से में इस्तग़फ़ार किया करते थे।

(ज़ारियात : 15-18)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿يٰٓاَيُّهَا الْمُزَّمِّلُ○ قُمِ الَّيْلَ اِلَّا قَلِيْلًا○ نِّصْفَهٗٓ اَوِ انْقُصْ مِنْهُ قَلِيْلًا○ اَوْ زِدْ عَلَيْهِ وَرَتِّلِ الْقُرْاٰنَ تَرْتِيْلًا○ اِنَّا سَنُلْقِيْ عَلَيْكَ قَوْلًا ثَقِيْلًا○ اِنَّ نَاشِئَةَ الَّيْلِ هِيَ اَشَدُّ وَطْاً وَّاَقْوَمُ قِيْلًا○ اِنَّ لَكَ فِي النَّهَارِ سَبْحًا طَوِيْلًا﴾ [المزمل:١-٧]

अल्लाह तआला ने रसूलुल्लाह ﷺ से ख़िताब फ़रमाया : ऐ चादर ओढ़ने वाले! रात को तहज्जुद की नमाज़ में खड़े रहा करें, मगर कुछ देर आराम फ़रमा लें यानी आधी रात या आधी रात से कुछ कम या आधी रात से कुछ

ज़्यादा आराम फ़रमा लें। और (इस तहज्जुद की नमाज़ में) कुरआन मजीद को ठहर-ठहर कर पढ़ा कीजिए। (तहज्जुद के हुक्म की एक हिकमत यह है कि रात के उठने के मुजाहदे की वजह से तबीयत में भारी कलाम बर्दाश्त करने की इस्तेदाद ख़ूब कामिल हो जाए, क्योंकि) हम अंक़रीब आप पर एक भारी कलाम यानी कुरआन मजीद नाज़िल करने वाले हैं। (दूसरी हिकमत यह है कि) रात का उठना नफ़्स को ख़ूब कुचलता है और उस वक़्त बात ठीक निकलती है यानी क़िरअत, ज़िक्र और दुआ के अल्फ़ाज़ ख़ूब इत्मीनान से अदा होते हैं और उन आमाल में जी लगता है। (तीसरी हिक्मत यह है कि) आपको दिन में बहुत से मशाग़िल रहते हैं (जैसे तब्लीग़ी मशग़ला, लिहाज़ा रात का वक़्त तो यक्सूई के साथ अल्लाह की इबादत के लिए होना चाहिए)। (मुज़्ज़म्मिल : 1-8)

नबी ﷺ की हदीसें

﴾132﴿ عَنْ اَبِی اُمَامَةَ رَضِیَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ النَّبِیُّ ﷺ: مَا اَذِنَ اللهُ لِعَبْدٍ فِیْ شَیْءٍ اَفْضَلَ مِنْ رَكْعَتَیْنِ یُصَلِّیْهِمَا، وَاِنَّ الْبِرَّ لَیُذَرُّ عَلٰی رَاْسِ الْعَبْدِ مَادَامَ فِیْ صَلَاتِهٖ وَمَا تَقَرَّبَ الْعِبَادُ اِلَی اللهِ عَزَّوَجَلَّ بِمِثْلِ مَا خَرَجَ مِنْهُ. قَالَ اَبُو النَّضْرِ: یَعْنِی الْقُرْآنَ.

رواه الترمذي، باب ماتقرب العباد الى الله بمثل ما خرج منه، رقم: ٢٩١١

132. हज़रत अबू उमामा رضي الله عنه से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अल्लाह तआला किसी बन्दे को दो रकअत नमाज़ की तौफ़ीक़ दे दें उससे बेहतर कोई चीज़ नहीं है। बन्दा जब तक नमाज़ में मशग़ूल रहता है भलाइयां उसके सर पर बिखेर दी जाती हैं और बन्दे अल्लाह तआला का क़ुर्ब उस चीज़ से बढ़कर किसी और चीज़ के ज़रिए हासिल नहीं कर सकते, जो ख़ुद अल्लाह तआला की ज़ात से निकली है, यानी क़ुरआन शरीफ़। (तिर्मिज़ी)

फ़ायदा : हदीस शरीफ़ का मतलब यह है कि अल्लाह तआला का सबसे ज़्यादा क़ुर्ब क़ुरआन शरीफ़ की तिलावत से हासिल होता है।

﴾133﴿ عَنْ اَبِیْ هُرَیْرَةَ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ اَنَّ رَسُوْلَ اللّٰهِ ﷺ مَرَّ بِقَبْرٍ فَقَالَ: مَنْ صَاحِبُ هٰذَا الْقَبْرِ؟ فَقَالُوْا: فُلَانٌ فَقَالَ: رَكْعَتَانِ اَحَبُّ اِلٰى هٰذَا مِنْ بَقِیَّةِ دُنْیَاكُمْ.

رواه الطبراني في الاوسط ورجاله ثقات، مجمع الزوائد ٢/٥١٦

133. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ एक क़ब्र के पास से गुज़रे। आप ﷺ ने दरयाफ़्त फ़रमाया : यह क़ब्र किस शख़्स की है? सहाबा : ने अर्ज़ किया : फ़्लां शख़्स की है। आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : इस क़ब्र वाले शख़्स के नज़दीक दो रकअ़तों का पढ़ना तुम्हारी दुनिया की बाक़ी तमाम चीज़ों से ज़्यादा पसन्दीदा है। (तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

फ़ायदा : रसूलुल्लाह ﷺ के इर्शाद का मक़सद यह है कि दो रकअ़त की क़ीमत दुनिया के साज़ व सामान से ज़्यादा है, इसका सही इल्म क़ब्र में पहुंचकर होगा।

﴾134﴿ عَنْ اَبِیْ ذَرٍّ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ اَنَّ النَّبِیَّ ﷺ خَرَجَ زَمَنَ الشِّتَاءِ، وَالْوَرَقُ یَتَهَافَتُ فَاَخَذَ بِغُصْنَیْنِ مِنْ شَجَرَةٍ قَالَ: فَجَعَلَ ذٰلِكَ الْوَرَقُ یَتَهَافَتُ، قَالَ: فَقَالَ: یَا اَبَاذَرٍّ! قُلْتُ: لَبَّیْكَ یَا رَسُوْلَ اللّٰهِ قَالَ: اِنَّ الْعَبْدَ الْمُسْلِمَ لَیُصَلِّی الصَّلَاةَ یُرِیْدُ بِهَا وَجْهَ اللّٰهِ فَتَهَافَتُ عَنْهُ ذُنُوْبُهُ كَمَا یَتَهَافَتُ هٰذَا الْوَرَقُ عَنْ هٰذِهِ الشَّجَرَةِ. رواه احمد ٥/١٧٩

134. हज़रत अबूज़र ﷺ फ़रमाते हैं कि एक मर्तबा नबी करीम ﷺ सर्दी के मौसम में बाहर तशरीफ़ लाए, पत्ते दरख़्तों से गिर रहे थे। आप ﷺ ने एक दरख़्त की दो टहनियां हाथ में लीं, उनके पत्ते और भी गिरने लगे। नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अबूज़र! मैंने अर्ज़ किया : लब्बैक या रसूलुल्लाह! आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : मुसलमान बन्दा जब अल्लाह तआला को राज़ी करने के लिए नमाज़ पढ़ता है तो उससे उसके गुनाह ऐसे ही गिरते हैं जैसे ये पत्ते इस दरख़्त से गिर रहे हैं। (मुस्नद अहमद)

﴾135﴿ عَنْ عَائِشَةَ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهَا عَنِ النَّبِیِّ ﷺ قَالَ: مَنْ ثَابَرَ عَلٰى اثْنَتَیْ عَشْرَةَ رَكْعَةً بَنَى اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ لَهُ بَیْتًا فِی الْجَنَّةِ، اَرْبَعًا قَبْلَ الظُّهْرِ وَرَكْعَتَیْنِ بَعْدَ الظُّهْرِ وَرَكْعَتَیْنِ بَعْدَ الْمَغْرِبِ وَرَكْعَتَیْنِ بَعْدَ الْعِشَاءِ وَرَكْعَتَیْنِ قَبْلَ الْفَجْرِ.

رواه النسائي، باب ثواب من صلى في اليوم والليلة ثنتي عشرة ركعة ...، رقم: ١٧٩٦

135. हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा रसूलुल्लाह ﷺ का इर्शाद नक़ल फ़रमाती हैं : जो बारह रकअ़तें पढ़ने की पाबंदी करता है अल्लाह तआ़ला उसके लिए जन्नत में महल बनाते हैं। चार रकअ़त ज़ुह्र से पहले, दो रकअ़त ज़ुह्र के बाद, दो रकअ़त मग़्रिब के बाद, दो रकअ़त इशा के बाद और दो रकअ़त फ़ज्र से पहले। (नसाई)

﴿136﴾ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا اَنَّ النَّبِيَّ ﷺ لَمْ يَكُنْ عَلٰى شَيْءٍ مِنَ النَّوَافِلِ اَشَدَّ مُعَاهَدَةً مِنْهُ عَلٰى رَكْعَتَيْنِ قَبْلَ الصُّبْحِ.

رواه مسلم، باب استحباب ركعتي سنة الفجر .....، رقم: ١٦٨٦

136. हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ को नफ़्लों (और सुन्नतों) में से किसी नमाज़ का इतना ज़्यादा एहतमाम न था, जितना कि फ़ज्र की नमाज़ से पहले दो रकअ़त सुन्नत पढ़ने का एहतमाम था। (मुस्लिम)

﴿137﴾ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ اَنَّهُ قَالَ فِيْ شَاْنِ الرَّكْعَتَيْنِ عِنْدَ طُلُوْعِ الْفَجْرِ: لَهُمَا اَحَبُّ اِلَيَّ مِنَ الدُّنْيَا جَمِيْعًا.

رواه مسلم، استحباب ركعتي سنة الفجر .....، رقم: ١٦٨٩

137. हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने फ़ज्र की दो रकअ़त सुन्नतों के बारे में इर्शाद फ़रमाया : ये दो रकअ़तें मुझे सारी दुनिया से ज़्यादा महबूब हैं। (मुस्लिम)

﴿138﴾ عَنْ اُمِّ حَبِيْبَةَ بِنْتِ اَبِيْ سُفْيَانَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَنْ حَافَظَ عَلٰى اَرْبَعِ رَكَعَاتٍ قَبْلَ الظُّهْرِ وَاَرْبَعٍ بَعْدَهَا حَرَّمَهُ اللهُ تَعَالٰى عَلَى النَّارِ.

رواه النسائي، باب الاختلاف على اسماعيل بن ابي خالد، رقم: ١٨١٧

138. हज़रत उम्मे हबीबा रज़ियल्लाहु अन्हा से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स ज़ुह्र से पहले चार रकअ़तें और ज़ुह्र के बाद चार रकअ़तें पाबंदी से पढ़ता है, अल्लाह तआ़ला उस पर दोज़ख़ की आग हराम फ़रमा देते हैं। (नसाई)

फ़ायदा : ज़ुह्र से पहले की चार रकअ़तें सुन्नते मुअक्किदा हैं और ज़ुह्र के बाद की चार रकअ़तों में दो रकअ़तें सुन्नते मुअक्किदा हैं और दो नफ़्ल हैं।

﴿139﴾ عَنْ اُمِّ حَبِيْبَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا عَنْ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ اَنَّهُ قَالَ: مَامِنْ عَبْدٍ مُؤْمِنٍ

يُصَلِّيْ اَرْبَعَ رَكَعَاتٍ بَعْدَ الظُّهْرِ فَتَمَسُّ وَجْهَهُ النَّارُ اَبَدًا اِنْ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ.

رواه النسائي، باب الاختلاف على اسماعيل بن ابى خالد، رقم: ١٨١٤

139. हज़रत उम्मे हबीबा रज़ियल्लाहु अन्हा से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो मोमिन बन्दा भी ज़ुह्र के बाद चार रकअ़तें पढ़ता है उसे जहन्नम की आग इंशाअल्लाह कभी नहीं छूएगी। (नसाई)

﴿140﴾ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ السَّائِبِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ اَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ كَانَ يُصَلِّيْ اَرْبَعًا بَعْدَ اَنْ تَزُوْلَ الشَّمْسُ قَبْلَ الظُّهْرِ وَقَالَ: اِنَّهَا سَاعَةٌ تُفْتَحُ فِيْهَا اَبْوَابُ السَّمَاءِ وَاُحِبُّ اَنْ يَصْعَدَ لِيْ فِيْهَا عَمَلٌ صَالِحٌ. رواه الترمذي وقال: حديث عبدالله بن السائب حديث حسن غريب، باب ماجاء في الصلاة عند الزوال، رقم: ٤٧٨ الجامع الصحيح وهو سنن الترمذي

140. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन साइब ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ज़ुह्र से पहले ज़वाल के बाद चार रकअ़त पढ़ते थे और आपने इर्शाद फ़रमाया : यह वह घड़ी है जिसमें आसमान के दरवाज़े खोल दिए जाते हैं, इसलिए मैं चाहता हूं कि इस घड़ी में मेरा कोई नेक अ़मल आसमान की तरफ़ जाए। (तिर्मिज़ी)

फ़ायदा : ज़ुह्र से पहले की चार रकअ़त से मुराद चार रकअ़त सुन्नते मुअक्कदा हैं और बाज़ उलमा के नज़दीक ज़वाल के बाद ये चार रकअ़तें ज़ुह्र की सुन्नते मुअक्कदा के अलावा हैं।

﴿141﴾ عَنْ عُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ يَقُوْلُ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: اَرْبَعٌ قَبْلَ الظُّهْرِ بَعْدَ الزَّوَالِ تُحْسَبُ بِمِثْلِهِنَّ مِنْ صَلَاةِ السَّحَرِ قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: وَلَيْسَ مِنْ شَيْءٍ اِلَّا وَهُوَ يُسَبِّحُ اللهَ تِلْكَ السَّاعَةَ ثُمَّ قَرَاَ: ﴿يَتَفَيَّؤُا ظِلٰلُهُ عَنِ الْيَمِيْنِ وَالشَّمَآئِلِ سُجَّدًا لِّلّٰهِ وَهُمْ دٰخِرُوْنَ﴾ [النحل: ٤٨] الآية كُلَّهَا رواه الترمذي وقال: هذا حديث غريب، باب ومن سورة النحل، رقم: ٣١٢٨

141. हज़रत उमर बिन ख़त्ताब ﷺ फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : ज़वाल के बाद ज़ुह्र से पहले की चार रकअ़तें तहज्जुद की चार रकअ़तों के बराबर हैं। रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : उस वक़्त हर चीज़ अल्लाह तआ़ला की तस्बीह करती है। फिर आयते करीमा तिलावत फ़रमाई, जिसका तर्जुमा यह है : सायादार चीज़ें और उनके साये (ज़वाल के वक़्त) [illegible]

को और कभी दूसरी तरफ़ को आजिज़ी के साथ अल्लाह तआ़ला को सज्दा करते हुए झुके जाते हैं। (तिर्मिज़ी)

﴿142﴾ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: رَحِمَ اللهُ امْرَأً صَلَّى قَبْلَ الْعَصْرِ اَرْبَعًا. رواه ابو داؤد، باب الصلاة قبل العصر، رقم:١٢٧١

142. हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अल्लाह तआ़ला उस शख़्स पर रहम फ़रमाएं, जो अ़स्र से पहले चार रकअ़त पढ़ता है। (अबूदाऊद)

﴿143﴾ عَنْ اَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ اَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: مَنْ قَامَ رَمَضَانَ اِيْمَانًا وَاحْتِسَابًا غُفِرَ لَهُ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْبِهِ. رواه البخاري، باب تطوع قيام رمضان من الايمان، رقم:٣٧

143. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो रमज़ान की रात में अल्लाह तआ़ला के वादों पर यक़ीन करते हुए और उसके अज्र व इनाम के शौक़ में नमाज़ पढ़ता है, उसके पिछले सब गुनाह माफ़ हो जाते हैं। (बुख़ारी)

﴿144﴾ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمٰنِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ اَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ ذَكَرَ شَهْرَ رَمَضَانَ فَقَالَ: شَهْرٌ كَتَبَ اللهُ عَلَيْكُمْ صِيَامَهُ، وَسَنَنْتُ لَكُمْ قِيَامَهُ فَمَنْ صَامَهُ وَقَامَهُ اِيْمَانًا وَاحْتِسَابًا خَرَجَ مِنْ ذُنُوْبِهِ كَيَوْمٍ وَلَدَتْهُ اُمُّهُ. رواه ابن ماجه، باب ماجاء في قيام شهر رمضان، رقم:١٣٢٨

144. हज़रत अब्दुर्रहमान ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने (एक मर्तबा) रमज़ान के महीने का ज़िक्र करते हुए इर्शाद फ़रमाया : यह ऐसा महीना है कि जिसके रोज़ों को अल्लाह तआ़ला ने तुम पर फ़र्ज़ किया है और मैंने तुम्हारे लिए इसकी तरावीह को सुन्नत क़रार दिया है। जो शख़्स अल्लाह तआ़ला के वादों पर यक़ीन करते हुए और उसके अज्र व इनाम के शौक़ में इस महीने के रोज़े रखता है और तरावीह पढ़ता है, वह गुनाहों से इस तरह पाक साफ़ हो जाता है जैसा कि अपनी मां से आज ही पैदा हुआ हो। (इब्ने माजा)

﴿145﴾ عَنْ اَبِي فَاطِمَةَ الْاَزْدِيِّ اَوِ الْاَسَدِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ لِيَ النَّبِيُّ ﷺ: يَا اَبَا فَاطِمَةَ! اِنْ اَرَدْتَ اَنْ تَلْقَانِيْ فَاَكْثِرِ السُّجُوْدَ. رواه احمد ٣/٤٢٨

145. हज़रत अबू फ़ातिमा ﷺ फ़रमाते हैं कि मुझसे नबी करीम ﷺ ने इर्शाद

फ़रमाया : अबू फ़ातिमा! अगर तुम मुझसे (आख़िरत में) मिलना चाहते हो तो सज्दे ज़्यादा करो, यानी नमाज़ें कसरत से पढ़ा करो। (मुस्नद अहमद)

﴿146﴾ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: إِنَّ أَوَّلَ مَا يُحَاسَبُ بِهِ الْعَبْدُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ مِنْ عَمَلِهِ صَلَاتُهُ، فَإِنْ صَلُحَتْ فَقَدْ أَفْلَحَ وَأَنْجَحَ، وَإِنْ فَسَدَتْ فَقَدْ خَابَ وَخَسِرَ، فَإِنِ انْتَقَصَ مِنْ فَرِيْضَتِهِ شَيْءٌ قَالَ الرَّبُّ عَزَّوَجَلَّ: انْظُرُوا هَلْ لِعَبْدِي مِنْ تَطَوُّعٍ؟ فَيُكَمِّلُ بِهَا مَا انْتَقَصَ مِنَ الْفَرِيْضَةِ، ثُمَّ يَكُوْنُ سَائِرُ عَمَلِهِ عَلَى ذٰلِكَ.

رواه الترمذي وقال: هذا حديث حسن غريب، باب ماجاء ان اول ما يحاسب به العبد يوم القيامة الصلاة، رقم:٤١٣

146. हज़रत अबू हुरैरह رضي الله عنه फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : क़ियामत के दिन आदमी के आमाल में सबसे पहले नमाज़ का हिसाब किया जाएगा। अगर नमाज़ अच्छी हुई तो वह शख़्स कामयाब और बामुराद होगा और अगर नमाज़ ख़राब हुई तो वह नाकाम व नामुराद होगा। अगर फ़र्ज़ नमाज़ में कुछ कमी हुई तो अल्लाह तआला इर्शाद फ़रमाएंगे : देखो! क्या मेरे बन्दे के पास कुछ नफ़्लें भी हैं, जिनसे फ़र्ज़ों की कमी पूरी कर दी जाए। अगर नफ़्लें होंगी तो अल्लाह तआला उनसे फ़र्ज़ों की कमी पूरी फ़रमा देंगे। उसके बाद फिर इसी तरह बाक़ी आमाल रोज़ा, ज़कात वग़ैरह का हिसाब होगा, यानी फ़र्ज़ रोज़ों की कमी नफ़्ल रोज़ों से पूरी की जाएगी और ज़कात की कमी नफ़्ली सदक़ात से पूरी की जाएगी। (तिर्मिज़ी)

﴿147﴾ عَنْ أَبِي أُمَامَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: إِنَّ أَغْبَطَ أَوْلِيَائِي عِنْدِي لَمُؤْمِنٌ خَفِيْفُ الْحَاذِ ذُوْحَظٍّ مِنَ الصَّلَاةِ، أَحْسَنَ عِبَادَةَ رَبِّهِ وَأَطَاعَهُ فِي السِّرِّ وَكَانَ غَامِضًا فِي النَّاسِ لَا يُشَارُ إِلَيْهِ بِالْأَصَابِعِ، وَكَانَ رِزْقُهُ كَفَافًا فَصَبَرَ عَلَى ذٰلِكَ ثُمَّ نَقَرَ بِإِصْبَعَيْهِ فَقَالَ: عُجِّلَتْ مَنِيَّتُهُ قَلَّتْ بَوَاكِيْهِ قَلَّ تُرَاثُهُ.

رواه الترمذي وقال: هذا حديث حسن، باب ماجاء في الكفاف، رقم:٢٣٤٧

147. हज़रत अबू उमामा رضي الله عنه से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : मेरे दोस्तों में मेरे नज़दीक ज़्यादा रश्क के क़ाबिल वह मोमिन है जो हल्का फुल्का हो, यानी दुनिया के साज़ व सामान और अह्ल व अयाल का ज़्यादा बोझ न हो, नमाज़ में उसको बड़ा हिस्सा मिला हो यानी नवाफ़िल कसरत से पढ़ता हो। अपने रब की इबादत अच्छी तरह करता हो, अल्लाह तआला की इताअत (जिस तरह ज़ाहिर में

करता हो उसी तरह) तन्हाई में भी करता हो, लोगों में गुमनाम हो, उसकी तरफ़ उंगलियों से इशारे न किए जाते हों, यानी लोगों में मशहूर न हो, रोज़ी सिर्फ़ गुज़ारे के क़ाबिल हो, जिस पर सब्र करके उम्र गुज़ार दे। फिर रसूलुल्लाह ﷺ ने अपने हाथ से चुटकी बजाई (जैसे किसी चीज़ के जल्द हो जाने पर चुटकी बजाते हैं) और इर्शाद फ़रमाया : उसे मौत जल्दी आ जाए, न उसपर रोने वालियां ज़्यादा हों और न मीरास ज़्यादा हो। (तिर्मिज़ी)

﴿148﴾ عَنْ عَبْدِ اللّٰهِ بْنِ سَلْمَانَ رَحِمَهُ اللّٰهُ اَنَّ رَجُلًا مِنْ اَصْحَابِ النَّبِيِّ ﷺ حَدَّثَهُ قَالَ: لَمَّا فَتَحْنَا خَيْبَرَ اَخْرَجُوا غَنَائِمَهُمْ مِنَ الْمَتَاعِ وَالسَّبْيِ فَجَعَلَ النَّاسُ يَتَبَايَعُوْنَ غَنَائِمَهُمْ فَجَاءَ رَجُلٌ، فَقَالَ: يَارَسُوْلَ اللّٰهِ! لَقَدْ رَبِحْتُ رِبْحًا مَارَبِحَ الْيَوْمَ مِثْلَهُ اَحَدٌ مِنْ اَهْلِ هٰذَا الْوَادِيْ قَالَ: وَيْحَكَ وَمَا رَبِحْتَ؟ قَالَ: مَازِلْتُ اَبِيْعُ وَ اَبْتَاعُ حَتّٰى رَبِحْتُ ثَلَاثَمِائَةِ اُوْقِيَةٍ، فَقَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: اَنَا اُنَبِّئُكَ بِخَيْرِ رَجُلٍ رَبِحَ، قَالَ: مَاهُوَ يَارَسُوْلَ اللّٰهِ؟ قَالَ: رَكْعَتَيْنِ بَعْدَ الصَّلَاةِ.

رواه ابو داؤد، باب في التجارة في الغزو، رقم:٢٦٦٧ مختصر سنن ابي داؤد للمنذري

148. हज़रत अब्दुल्लाह बिन सलमान रह० से रिवायत है कि एक सहाबी ؓ ने मुझे बताया कि हम लोग जब ख़ैबर फ़तह कर चुके तो लोगों ने अपना माले ग़नीमत निकाला, जिसमें मुख़्तलिफ़ सामान और क़ैदी थे और ख़रीद व फ़रोख़्त शुरू हो गई (कि हर शख़्स अपनी ज़रूरत की चीज़ें ख़रीदने लगा और दूसरी ज़ाइद चीज़ें फ़रोख़्त करने लगा)। इतने में एक सहाबी ؓ ख़िदमत में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! मुझे आज की इस तिजारत में इस क़द्र नफ़ा हुआ कि यहां तमाम लोगों में से किसी को भी इतना नफ़ा नहीं हुआ। रसूलुल्लाह ﷺ ने ताज्जुब से पूछा कि कितना कमाया? उन्होंने अर्ज़ किया कि मैं सामान ख़रीदता रहा और बेचता रहा जिसमें तीन सौ औक़िया चांदी नफ़ा में बेची। रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : मैं तुम्हें बेहतरीन नफ़ा हासिल करने वाला शख़्स बताता हूं। उन्होंने अर्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! वह नफ़ा क्या है (जिसे उस आदमी ने हासिल किया)? इर्शाद फ़रमाया : फ़र्ज़ नमाज़ के बाद दो रकअत नफ़्ल। (अबूदाऊद)

फ़ायदा : एक औक़िया चालीस दिरहम और एक दिरहम तक़रीबन तीन ग्राम चांदी का होता है। इस तरह तक़रीबन तीन हज़ार तोला चांदी हुई।

﴾149﴿ عَنْ اَبِیْ هُرَيْرَةَ رَضِیَ اللهُ عَنْهُ اَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: يَعْقِدُ الشَّيْطَانُ عَلٰى قَافِيَةِ رَأْسِ اَحَدِكُمْ اِذَا هُوَ نَامَ، ثَلَاثَ عُقَدٍ يَضْرِبُ مَكَانَ كُلِّ عُقْدَةٍ: عَلَيْكَ لَيْلٌ طَوِيْلٌ فَارْقُدْ فَاِنِ اسْتَيْقَظَ فَذَكَرَ اللهَ انْحَلَّتْ عُقْدَةٌ، فَاِنْ تَوَضَّأَ انْحَلَّتْ عُقْدَةٌ، فَاِنْ صَلّٰى انْحَلَّتْ عُقَدُهُ، فَاَصْبَحَ نَشِيْطًا طَيِّبَ النَّفْسِ وَاِلَّا اَصْبَحَ خَبِيْثَ النَّفْسِ كَسْلَانَ. رواه ابوداؤد، باب قيام الليل،رقم:١٣٠٦ وفي رواية ابن ماجه: فَيُصْبِحُ نَشِيْطًا طَيِّبَ النَّفْسِ قَدْ اَصَابَ خَيْرًا وَاِنْ لَمْ يَفْعَلْ، اَصْبَحَ كَسِلًا خَبِيْثَ النَّفْسِ لَمْ يُصِبْ خَيْرًا. باب ماجاء في قيام الليل،رقم:١٣٢٩

149. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : ...ममें से जब कोई शख़्स सोता है तो शैतान उसकी गुद्दी पर तीन गिरहें लगा देता है। हर गिरह पर यह फूंक देता है, "अभी रात बहुत पड़ी है, सोता रह"। अगर इंसान ...दार होकर अल्लाह तआला का नाम ले लेता है, तो एक गिरह खुल जाती है। अगर ...ज़ू कर लेता है तो दूसरी गिरह भी खुल जाती है, फिर अगर तहज्जुद पढ़ लेता है ...तो तमाम गिरहें खुल जाती हैं। चुनांचे सुबह को चुस्त हश्शाश-बश्शाश होता है उसे ...हुत बड़ी ख़ैर मिल चुकी होती है और अगर तहज्जुद नहीं पढ़ता, तो सुस्त रहता है, तबीयत बोझल होती है और बहुत बड़ी ख़ैर से महरूम हो जाता है।

(अबूदाऊद, इब्ने माजा)

﴾150﴿ عَنْ عُقْبَةَ بْنِ عَامِرٍ رَضِیَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: رَجُلَانِ مِنْ اُمَّتِیْ يَقُوْمُ اَحَدُهُمَا مِنَ اللَّيْلِ فَيُعَالِجُ نَفْسَهُ اِلَى الطُّهُوْرِ، وَعَلَيْهِ عُقَدٌ فَيَتَوَضَّأُ، فَاِذَا وَضَّأَ يَدَيْهِ انْحَلَّتْ عُقْدَةٌ، وَاِذَا وَضَّأَ وَجْهَهُ انْحَلَّتْ عُقْدَةٌ، وَاِذَا مَسَحَ رَأْسَهُ انْحَلَّتْ عُقْدَةٌ، وَاِذَا وَضَّأَ رِجْلَيْهِ انْحَلَّتْ عُقْدَةٌ، فَيَقُوْلُ الرَّبُّ عَزَّوَجَلَّ لِلَّذِيْنَ وَرَاءَ الْحِجَابِ: انْظُرُوْا اِلٰى عَبْدِیْ هٰذَا يُعَالِجُ نَفْسَهُ مَاسَاَلَنِیْ عَبْدِیْ هٰذَا فَهُوَ لَهُ. رواه احمد، الفتح الرباني ١٠/٣٠٤

...0. हज़रत उक़्बा बिन आमिर ﷺ फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह ...र्शाद फ़रमाते हुए सुना : मेरी उम्मत के दो आदमियों में से एक रात को उठता है ...और तबीयत के न चाहते हुए अपने आपको इस हाल में वुज़ू पर आमादा करता है ... उस पर शैतान की तरफ़ से गिरहें लगी होती हैं। जब वुज़ू में अपने दोनों हाथ धोता है तो एक गिरह खुल जाती है, जब चेहरा धोता है तो दूसरी गिरह खुल जाती ... जब सर का मसह करता है तो एक और गिरह खुल जाती है, जब पांव धोता है ...तो एक और गिरह खुल जाती है। फिर अल्लाह तआला फ़रिश्तों से फ़रमाते हैं, जो इंसानों की निगाहों से ओझल हैं, मेरे उस बन्दे को देखो कि वह किस ...

उठा रहा है। मेरा यह बन्दा मुझसे जो मांगेगा वह उसे मिलेगा।

(मुस्नद अहमद, फ़त्हुर्रब्बानी)

﴿151﴾ عَنْ عُبَادَةَ بْنِ الصَّامِتِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: مَنْ تَعَارَّ مِنَ اللَّيْلِ فَقَالَ: لَآ إِلٰهَ إِلَّا اللهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ، لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ، اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ وَسُبْحَانَ اللهِ، وَلَآ اِلٰهَ اِلَّا اللهُ، وَاللهُ اَكْبَرُ، وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللهِ، ثُمَّ قَالَ: اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِيْ، اَوْ دَعَا اسْتُجِيْبَ، فَاِنْ تَوَضَّاَ وَصَلّٰى قُبِلَتْ صَلَاتُهُ.

رواه البخاري، باب فضل من تعارّ من الليل فصلّى رقم: ١١٥٤

151. हज़रत उबादा बिन सामित ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जिसकी रात को आंख खुल जाए और फिर वह यह पढ़ ले : *'ला इला-ह इल्लल्लाहु वह्दहू ला-शरी-क लहू लहुल मुल्कु व लहुल हम्दु व हु-व अ़ला कुल्लि शैइन क़दीर० अलहम्दु लिल्लाह, सुब्हानल्लाह, ला इला-ह इल्लल्लाहु अल्लाहु अकबर, ला हौ-ल व ला कुव्व-त इल्ला बिल्लाह'* और उसके बाद 'अल्लाहुम-मग़्फ़िरली' (ऐ अल्लाह मेरी मग़्फ़िरत फ़रमा दीजिए) कहे या कोई और दुआ करे तो उसकी दुआ क़ुबूल की जाती है। फिर अगर वुज़ू करके नमाज़ पढ़ने लग जाए तो उसकी नमाज़ क़ुबूल की जाती है। (बुख़ारी)

﴿152﴾ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: كَانَ النَّبِيُّ ﷺ إِذَا قَامَ مِنَ اللَّيْلِ يَتَهَجَّدُ قَالَ: اَللّٰهُمَّ لَكَ الْحَمْدُ، اَنْتَ قَيِّمُ السَّمٰوَاتِ وَالْاَرْضِ وَمَنْ فِيْهِنَّ وَلَكَ الْحَمْدُ لَكَ مُلْكُ السَّمٰوَاتِ وَالْاَرْضِ وَمَنْ فِيْهِنَّ، وَلَكَ الْحَمْدُ، اَنْتَ نُوْرُ السَّمٰوَاتِ وَالْاَرْضِ، وَلَكَ الْحَمْدُ اَنْتَ مَلِكُ السَّمٰوَاتِ وَالْاَرْضِ، وَلَكَ الْحَمْدُ اَنْتَ الْحَقُّ وَوَعْدُكَ الْحَقُّ، وَلِقَاؤُكَ حَقٌّ وَقَوْلُكَ حَقٌّ، وَالْجَنَّةُ حَقٌّ، وَالنَّارُ حَقٌّ، وَالنَّبِيُّوْنَ حَقٌّ وَمُحَمَّدٌ ﷺ حَقٌّ، وَالسَّاعَةُ حَقٌّ اَللّٰهُمَّ لَكَ اَسْلَمْتُ وَبِكَ آمَنْتُ، وَعَلَيْكَ تَوَكَّلْتُ، وَاِلَيْكَ اَنَبْتُ، وَبِكَ خَاصَمْتُ، وَاِلَيْكَ حَاكَمْتُ، فَاغْفِرْ لِيْ مَا قَدَّمْتُ وَمَا اَخَّرْتُ، وَمَا اَسْرَرْتُ وَمَا اَعْلَنْتُ، اَنْتَ الْمُقَدِّمُ وَاَنْتَ الْمُؤَخِّرُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ، اَوْ لَآ اِلٰهَ غَيْرُكَ، قال سفيان: وزاد عبد الكريم ابو امية: وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللهِ

رواه البخاري، باب التهجد بالليل رقم: ١١٢٠

152. हज़रत इब्ने अ़ब्बास ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ रात को जब तहज्जुद के लिए उठते तो यह दुआ पढ़ते :

तर्जुमा : 'ऐ अल्लाह! तमाम तारीफ़ें आप ही के लिए हैं, आप ही आसमानों और ज़मीन के और जो मख़्लूक़ उनमें आबाद हैं, उनके संभालने वाले हैं। तमाम तारीफ़ें आप ही के लिए हैं, ज़मीन व आसमान और उनकी तमाम मख़्लूक़ात पर हुकूमत सिर्फ़ आप ही की है। तमाम तारीफ़ें आप ही के लिए हैं आप ज़मीन व आसमान के रौशन करने वाले हैं। तमाम तारीफ़ें आप ही के लिए हैं आप ज़मीन व आसमान के बादशाह हैं। तमाम तारीफ़ें आप ही के लिए हैं, असल वुजूद आप ही का है, आप का वादा हक़ है (टल नहीं सकता) आप से मुलाक़ात ज़रूर होगी, आप का फ़रमान हक़ है, जन्नत का वुजूद हक़ है, जहन्नम का वुजूद हक है, सारे अम्बिया ﷺ बरहक़ हैं, मुहम्मद ﷺ बरहक़ (रसूल) हैं और क़ियामत ज़रूर आएगी। ऐ अल्लाह! मैंने अपने आपको आप के सुपुर्द कर दिया, मैंने आप को दिल से माना, मैंने आप ही पर भरोसा किया, आप ही की तरफ़ मुतवज्जह हुआ, (न मानने वालों में से) जिससे झगड़ा किया आप ही की मदद से किया और आप ही की बारगाह में फ़रयाद लाया हूं, लिहाज़ा मेरे उन गुनाहों को माफ़ कर दीजिए जो अब से पहले किए और जो उसके बाद करूं और जो गुनाह मैंने छुपा कर किए और जो ऐलानिया किए। आप ही तौफ़ीक़ देकर दीनी आमाल में आगे बढ़ाने वाले हैं और आप ही तौफ़ीक़ छीन कर पीछे हटाने वाले हैं। आपके सिवा कोई माबूद नहीं है। भलाई करने की ताक़त और बुराई से बचने की क़ुव्वत सिर्फ़ अल्लाह तआला ही की तरफ़ से है। (बुख़ारी)

﴿153﴾ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: أَفْضَلُ الصِّيَامِ بَعْدَ رَمَضَانَ، شَهْرُ اللهِ الْمُحَرَّمُ، وَأَفْضَلُ الصَّلٰوةِ بَعْدَ الْفَرِيْضَةِ، صَلٰوةُ اللَّيْلِ.

رواه مسلم، باب فضل صوم المحرم، رقم: ٢٧٥٥

153. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : रमज़ानुल मुबारक के बाद सबसे अफ़ज़ल रोज़े माहे मुहर्रम के हैं और फ़र्ज़ नमाज़ों के बाद सबसे अफ़ज़ल नमाज़ रात की है। (मुस्लिम)

﴿154﴾ عَنْ إِيَاسِ بْنِ مُعَاوِيَةَ الْمُزَنِيِّ رَحِمَهُ اللهُ أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: لَا بُدَّ مِنْ صَلٰوةٍ بِلَيْلٍ وَلَوْ حَلْبَ شَاةٍ، وَمَا كَانَ بَعْدَ صَلٰوةِ الْعِشَاءِ فَهُوَ مِنَ اللَّيْلِ.

رواه الطبراني في الكبير وفيه: محمد بن اسحاق وهو مدلس وبقية رجاله ثقات، مجمع الزوائد ٢/٥٢١، وهو ثقة، ١/٩٢

154. हज़रत इयास बिन मुआविया मुज़नी रहिमहुल्लाह से रिवायत है कि रसूलुल्लाह

ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : तहज्जुद ज़रूर पढ़ा करो, अगरचे इतनी थोड़ी देर ही के लिए हो जितनी देर में बकरी का दूध दूहा जाता है और जो नमाज़ भी इशा के बाद पढ़ी जाए, वह तहज्जुद में शामिल है। (तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

फ़ायदा : सो कर उठने के बाद जो नफ़्ल नमाज़ पढ़ी जाए, उसे तहज्जुद कहते हैं।

बाज़ उलमा के नज़दीक इशा के बाद सोने से पहले जो नफ़्ल पढ़ लिए जाएं, वह भी तहज्जुद है। (आलाउस्सुनन)

﴿155﴾ عَنْ عَبْدِ اللّٰهِ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: فَضْلُ صَلٰوةِ اللَّيْلِ عَلٰى صَلٰوةِ النَّهَارِ كَفَضْلِ صَدَقَةِ السِّرِّ عَلٰى صَدَقَةِ الْعَلَانِيَةِ.

رواه الطبراني في الكبير ورجاله ثقات، مجمع الزوائد ٢/١٩/٥

155. हज़रत अब्दुल्लाह ؓ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : रात की नफ़्ल नमाज़ दिन की नफ़्ल नमाज़ से ऐसी ही अफ़ज़ल है जैसा कि छुप कर दिया हुआ सदक़ा ऐलानिया सदक़ा से अफ़ज़ल है। (तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿156﴾ عَنْ اَبِي اُمَامَةَ الْبَاهِلِيِّ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ عَنْ رَسُوْلِ اللّٰهِ ﷺ قَالَ: عَلَيْكُمْ بِقِيَامِ اللَّيْلِ، فَاِنَّهُ دَاْبُ الصَّالِحِيْنَ قَبْلَكُمْ، وَهُوَ قُرْبَةٌ لَكُمْ اِلٰى رَبِّكُمْ، وَمَكْفَرَةٌ لِلسَّيِّئَاتِ، وَمَنْهَاةٌ عَنِ الْاِثْمِ.

رواه الحاكم وقال: هذا حديث صحيح على شرط البخاري ولم يخرجاه ووافقه الذهبي ١/٣٠٨

156. हज़रत अबू उमामा बाहिली ؓ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : तहज्जुद ज़रूर पढ़ा करो। वह तुम से पहले के नेक लोगों का तरीक़ा रहा है, उससे तुम्हें अपने रब का क़ुर्ब हासिल होगा, गुनाह माफ़ होंगे और गुनाहों से बचे रहोगे। (मुस्तदरक हाकिम)

﴿157﴾ عَنْ اَبِي الدَّرْدَاءِ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ثَلَاثَةٌ يُحِبُّهُمُ اللّٰهُ، وَيَضْحَكُ اِلَيْهِمْ، وَيَسْتَبْشِرُ بِهِمُ الَّذِيْ اِذَا انْكَشَفَتْ فِئَةٌ، قَاتَلَ وَرَاءَهَا بِنَفْسِهِ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ، فَاِمَّا اَنْ يُقْتَلَ، وَاِمَّا اَنْ يَنْصُرَهُ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ وَيَكْفِيَهُ، فَيَقُوْلُ: انْظُرُوْا اِلٰى عَبْدِيْ هٰذَا كَيْفَ صَبَرَ لِيْ بِنَفْسِهِ؟ وَالَّذِيْ لَهُ امْرَاَةٌ حَسَنَةٌ، وَفِرَاشٌ لَيِّنٌ حَسَنٌ، فَيَقُوْمُ مِنَ اللَّيْلِ فَيَقُوْلُ: يَذَرُ شَهْوَتَهُ، وَيَذْكُرُنِيْ، وَلَوْ شَاءَ رَقَدَ، وَالَّذِيْ اِذَا كَانَ فِيْ سَفَرٍ، وَكَانَ مَعَهُ رَكْبٌ فَسَهِرُوْا ثُمَّ هَجَعُوْا فَقَامَ مِنَ السَّحَرِ فِيْ ضَرَّاءَ وَسَرَّاءَ.

رواه الطبراني في الكبير باسناد حسن، الترغيب ١/٤٣٤

157. हज़रत अबुद्दर्दा ﷜ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : तीन शख़्स ऐसे हैं जिनसे अल्लाह तआ़ला मुहब्बत फ़रमाते हैं और उन्हें देखकर बेहद ख़ुश होते हैं। उनमें से एक वह शख़्स है, जो जिहाद में अल्लाह तआ़ला की ख़ुशनूदी के लिए अकेला लड़ता रहे, जबकि उसके सब साथी मैदान छोड़ जाएं, फिर या तो वह शहीद हो जाए या अल्लाह तआ़ला उसकी मदद फ़रमाएं और उसे ग़लबा अता फ़रमाएं। अल्लाह तआ़ला (फ़रिश्तों से) फ़रमाते हैं : मेरे उस बन्दे को देखो! मेरी ख़ुशनूदी के ख़ातिर किस तरह मैदान में जमा रहा। दूसरा वह शख़्स है जिसके पहलू में ख़ूबसूरत बीवी हो और बेहतरीन नर्म बिस्तर मौजूद हो और फिर वह (उन सबको छोड़कर) तहज्जुद में मशग़ूल हो जाए। अल्लाह तआ़ला फ़रमाते हैं : देखो! अपनी चाहतों को छोड़ रहा है और मुझे याद कर रहा है, अगर चाहता तो सोता रहता। तीसरा वह शख़्स है, जो सफ़र में क़ाफ़िले के साथ हो और क़ाफ़िले वाले रात देर तक जाग कर सो चुके हों। यह अख़ीर शब में तबीयत चाहे न चाहे, हर हाल में तहज्जुद के लिए उठ खड़ा हो। (तबरानी, तर्ग़ीब)

﴿158﴾ عَنْ أَبِي مَالِكٍ الْأَشْعَرِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: إِنَّ فِي الْجَنَّةِ غُرَفًا يُرَى ظَاهِرُهَا مِنْ بَاطِنِهَا، وَبَاطِنُهَا مِنْ ظَاهِرِهَا، أَعَدَّهَا اللهُ لِمَنْ أَطْعَمَ الطَّعَامَ، وَأَفْشَى السَّلَامَ، وَصَلَّى بِاللَّيْلِ وَالنَّاسُ نِيَامٌ. رواه ابن حبان، قال المحقق: اسناده قوى ٢/٢٦٢

158. हज़रत अबू मालिक अशअ़री ﷜ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जन्नत में ऐसे बालाख़ाने हैं, जिनमें अन्दर की चीज़ें बाहर से और बाहर की चीज़ें अन्दर से नज़र आती हैं। ये बालाख़ाने अल्लाह तआ़ला ने उन लोगों के लिए तैयार फ़रमाए हैं, जो लोगों को खाना खिलाते हैं, ख़ूब इस्लाम फैलाते हैं और रात को उस वक़्त नमाज़ पढ़ते हैं जब लोग सो रहे होते हैं। (इब्ने हब्बान)

﴿159﴾ عَنْ سَهْلِ بْنِ سَعْدٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: جَاءَ جِبْرَئِيلُ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ فَقَالَ: يَا مُحَمَّدُ: عِشْ مَا شِئْتَ فَإِنَّكَ مَيِّتٌ، وَاعْمَلْ مَاشِئْتَ فَإِنَّكَ مَجْزِيٌّ بِهِ، وَأَحْبِبْ مَنْ شِئْتَ فَإِنَّكَ مُفَارِقُهُ، وَاعْلَمْ أَنَّ شَرَفَ الْمُؤْمِنِ قِيَامُ اللَّيْلِ، وَعِزَّهُ اسْتِغْنَاؤُهُ عَنِ النَّاسِ.

رواه الطبراني في الاوسط واسناده حسن، الترغيب ١/٤٢١

159. हज़रत सह्ल बिन साद ﷜ फ़रमाते हैं कि हज़रत जिबरील ؑ नबी करीम ﷺ की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अ़र्ज़ किया : मुहम्मद ﷺ! आप जितना भी ज़िन्दा रहें, एक दिन मौत आनी है। आप जो चाहें अ़मल करें उसका

दिया जाएगा। जिससे चाहें मोहब्बत करें आख़िर एक दिन उससे जुदा होना है। जान लीजिए कि मोमिन की बुज़ुर्गी तहज्जुद पढ़ने में है और मोमिन की इज़्ज़त लोगों से बेनियाज़ रहने में है। (तबरानी, तर्ग़ीब)

﴿160﴾ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَمْرِو بْنِ الْعَاصِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ لِي رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: يَا عَبْدَ اللهِ لَا تَكُنْ مِثْلَ فُلَانٍ كَانَ يَقُوْمُ مِنَ اللَّيْلِ فَتَرَكَ قِيَامَ اللَّيْلِ.

رواه البخاري، باب ما يكره من ترك قيام الليل لمن كان يقومه، رقم: ١١٥٢

160. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उम्र बिन आ़स ﷺ फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने मुझसे इर्शाद फ़रमाया : अ़ब्दुल्लाह! तुम फ़लां की तरह मत हो जाना कि वह रात को तहज्जुद पढ़ा करता था, फिर तहज्जुद छोड़ दी। (बुख़ारी)

फ़ायदा : मतलब यह है कि बिला किसी उ़ज़्र के अपने दीनी मामूल को छोड़ना अच्छी बात नहीं है। (मज़ाहिरे हक़)

﴿161﴾ عَنِ الْمُطَّلِبِ بْنِ رَبِيْعَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا اَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: صَلَاةُ اللَّيْلِ مَثْنَى مَثْنَى وَاِذَا صَلَّى اَحَدُكُمْ فَلْيَتَشَهَّدْ فِيْ كُلِّ رَكْعَتَيْنِ ثُمَّ لْيُلْحِفْ فِي الْمَسْاَلَةِ ثُمَّ اِذَا دَعَا فَلْيَتَمَسْكَنْ وَلْيَتَبَاْسْ وَلْيَتَضَعَّفْ فَمَنْ لَمْ يَفْعَلْ ذٰلِكَ فَذَاكَ الْخِدَاجُ اَوْ كَالْخِدَاجِ.

رواه احمد ٤/١٦٧

161. हज़रत मुत्तलिब बिन रबीया ﷺ फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमायाः रात की नमाज़ दो-दो रकअ़तें हैं, लिहाज़ा जब तुममें से कोई नमाज़ पढ़े तो हर दो रकअ़तों के अख़ीर में तशह्हुद पढ़े। फिर दुआ़ में इसरार करे, मस्कनत अख़्तियार करे, बेकसी और कमज़ोरी का इज़्हार करे। जिसने ऐसा न किया, उसकी नमाज़ अधूरी है। (मुस्नद अहमद)

फ़ायदा : तशह्हुद के बाद दुआ़, नमाज़ में भी और सलाम के बाद भी मांगी जा सकती है।

﴿162﴾ عَنْ حُذَيْفَةَ بْنِ الْيَمَانِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ اَنَّهُ مَرَّ بِالنَّبِيِّ ﷺ لَيْلَةً وَهُوَ يُصَلِّي فِي الْمَسْجِدِ فِي الْمَدِيْنَةِ قَالَ: فَقُمْتُ اُصَلِّي وَرَاءَهُ يُخَيَّلُ اِلَيَّ اَنَّهُ لَا يَعْلَمُ، فَاسْتَفْتَحَ سُوْرَةَ الْبَقَرَةِ، فَقُلْتُ اِذَا جَاءَ مِائَةَ آيَةٍ رَكَعَ، فَجَاءَهَا فَلَمْ يَرْكَعْ، فَقُلْتُ اِذَا جَاءَ مِائَتَيْ آيَةٍ رَكَعَ، فَجَاءَهَا فَلَمْ يَرْكَعْ، فَقُلْتُ اِذَا خَتَمَهَا رَكَعَ، فَخَتَمَ فَلَمْ يَرْكَعْ، فَلَمَّا خَتَمَ قَالَ: اَللّٰهُمَّ!

لَكَ الْحَمْدُ، اَللّٰهُمَّ! لَكَ الْحَمْدُ، وِتْرًا ثُمَّ افْتَتَحَ آلَ عِمْرَانَ، فَقُلْتُ اِنْ خَتَمَهَا رَكَعَ، فَخَتَمَهَا وَلَمْ يَرْكَعْ، وَقَالَ: اَللّٰهُمَّ! لَكَ الْحَمْدُ ثَلَاثَ مَرَّاتٍ، ثُمَّ افْتَتَحَ سُوْرَةَ الْمَائِدَةِ، فَقُلْتُ: اِذَا خَتَمَ رَكَعَ، فَخَتَمَهَا فَرَكَعَ، فَسَمِعْتُهُ يَقُوْلُ: سُبْحَانَ رَبِّيَ الْعَظِيْمِ، وَيُرَجِّعُ شَفَتَيْهِ فَاَعْلَمُ اَنَّهُ يَقُوْلُ غَيْرَ ذٰلِكَ، ثُمَّ سَجَدَ فَسَمِعْتُهُ يَقُوْلُ: سُبْحَانَ رَبِّيَ الْاَعْلٰى، وَيُرَجِّعُ شَفَتَيْهِ فَاَعْلَمُ اَنَّهُ يَقُوْلُ غَيْرَ ذٰلِكَ فَلَا اَفْهَمُ غَيْرَهُ ثُمَّ افْتَتَحَ سُوْرَةَ الْاَنْعَامِ فَتَرَكْتُهُ وَذَهَبْتُ.

رواه عبد الرزاق في مصنفه ٢/١٤٧

162. हज़रत हुज़ैफ़ा बिन यमान ﷺ फ़रमाते हैं कि एक रात मैं नबी करीम ﷺ के पास से गुज़रा। आप ﷺ मदीना मुनव्वरा में मस्जिद में नमाज़ पढ़ रहे थे। मैं भी आप ﷺ के पीछे नमाज़ पढ़ने खड़ा हो गया और मुझे यह ख़्याल था कि आप ﷺ को यह मालूम नहीं कि मैं आपके पीछे नमाज़ पढ़ रहा हूं। आप ﷺ ने सूरः बक़रः शुरू फ़रमाई। मैंने (अपने दिल में कहा) कि सौ आयतों पर रुकूअ़ फ़रमाएंगे लेकिन जब आप ﷺ ने सौ आयतें पढ़ लीं और रुकूअ़ न फ़रमाया, तो मैंने सोचा कि दो सौ आयतों पर रुकूअ़ फ़रमाएंगे, मगर दो सौ आयातें पर भी रुकूअ न फ़रमाया, तो मुझे ख़्याल हुआ कि सूरः के ख़त्म होने पर रुकूअ़ फ़रमाएंगे। जब आपने सूरः ख़त्म फ़रमाई 'अल्लाहुम-म ल-कल हम्द, अल्लाहुम-म ल-कल हम्द' तीन मर्तबा पढ़ा। फिर सूरः आले इमरान शुरू फ़रमाई तो मैंने ख़्याल किया कि उसके ख़त्म होने पर तो रुकूअ़ फ़रमा ही लेंगे। नबी करीम ने यह सूरः ख़त्म फ़रमाई, लेकिन रुकूअ़ नहीं फ़रमाया और तीन मर्तबा 'अल्लाहुम-म ल-कल हम्द' पढ़ा। फिर सूरः माइदा शुरू फ़रमा दी। मैंने सोचा, सूरः माइदा के ख़त्म पर रुकूअ़ फ़रमाएंगे। चुनांचे आप ﷺ ने सूरः माइदा के ख़त्म होने पर रुकूअ़ फ़रमाया, तो मैंने आप ﷺ को रुकूअ़ में 'सुब्हा-न रब्बियल अ़ज़ीम' पढ़ते सुना और आप अपने होठों को हिला रहे थे (जिसकी वजह से) मैं समझा कि आप ﷺ उस के साथ कुछ और भी पढ़ रहे हैं। फिर आप ﷺ ने सज्दा फ़रमाया और मैंने आप ﷺ को सज्दा में 'सुब्हा-न रब्बियल आ़ला' पढ़ते सुना और आप अपने होठों को हिला रहे थे (जिसकी वजह से) मैं समझा कि आप ﷺ उसके साथ कुछ और भी पढ़ रहे हैं, जिसको मैं नहीं समझ रहा था। फिर (दूसरी रकअ़त में) सूरः अन्आम शुरू फ़रमाई, तो मैं आप ﷺ को नमाज़ पढ़ते हुए छोड़कर चला आया (क्योंकि मैं मज़ीद रसूलुल्लाह ﷺ के साथ नमाज़ पढ़ने की हिम्मत न कर सका)। (मुसन्निफ़ अब्दुर्रज़्ज़ाक़)

﴿163﴾ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمَا قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللّٰهِ ﷺ يَقُوْلُ لَيْلَةً حِيْنَ

فَرَغَ مِنْ صَلَاتِهِ: اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْاَلُكَ رَحْمَةً مِنْ عِنْدِكَ تَهْدِیْ بِهَا قَلْبِیْ، وَتَجْمَعُ بِهَا اَمْرِیْ، وَتَلُمُّ بِهَا شَعَثِیْ، وَتُصْلِحُ بِهَا غَائِبِیْ، وَتَرْفَعُ بِهَا شَاهِدِیْ، وَتُزَكِّیْ بِهَا عَمَلِیْ، وَتُلْهِمُنِیْ بِهَا رُشْدِیْ، وَتَرُدُّ بِهَا اُلْفَتِیْ، وَتَعْصِمُنِیْ بِهَا مِنْ كُلِّ سُوْءٍ، اَللّٰهُمَّ اَعْطِنِیْ اِیْمَانًا وَیَقِیْنًا لَیْسَ بَعْدَهٗ كُفْرٌ، وَرَحْمَةً اَنَالُ بِهَا شَرَفَ كَرَامَتِكَ فِی الدُّنْیَا وَالْاٰخِرَةِ، اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْاَلُكَ الْفَوْزَ فِی الْقَضَاءِ وَنُزُلَ الشُّهَدَاءِ وَعَیْشَ السُّعَدَاءِ، وَالنَّصْرَ عَلَی الْاَعْدَاءِ، اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اُنْزِلُ بِكَ حَاجَتِیْ وَاِنْ قَصُرَ رَأْیِیْ وَضَعُفَ عَمَلِی افْتَقَرْتُ اِلٰی رَحْمَتِكَ، فَاَسْاَلُكَ یَا قَاضِیَ الْاُمُوْرِ، وَیَا شَافِیَ الصُّدُوْرِ، كَمَا تُجِیْرُ بَیْنَ الْبُحُوْرِ، اَنْ تُجِیْرَنِیْ مِنْ عَذَابِ السَّعِیْرِ، وَمِنْ دَعْوَةِ الثُّبُوْرِ، وَمِنْ فِتْنَةِ الْقُبُوْرِ. اَللّٰهُمَّ مَا قَصُرَ عَنْهُ رَأْیِیْ وَلَمْ تَبْلُغْهُ نِیَّتِیْ، وَلَمْ تَبْلُغْهُ مَسْاَلَتِیْ مِنْ خَیْرٍ وَعَدْتَهٗ اَحَدًا مِنْ خَلْقِكَ اَوْ خَیْرٍ اَنْتَ مُعْطِیْهِ اَحَدًا مِنْ عِبَادِكَ فَاِنِّیْ اَرْغَبُ اِلَیْكَ فِیْهِ وَاَسْاَلُكَهٗ بِرَحْمَتِكَ رَبَّ الْعَالَمِیْنَ، اَللّٰهُمَّ ذَا الْحَبْلِ الشَّدِیْدِ، وَالْاَمْرِ الرَّشِیْدِ، اَسْاَلُكَ الْاَمْنَ یَوْمَ الْوَعِیْدِ، وَالْجَنَّةَ یَوْمَ الْخُلُوْدِ مَعَ الْمُقَرَّبِیْنَ الشُّهُوْدِ، الرُّكَّعِ السُّجُوْدِ، الْمُوْفِیْنَ بِالْعُهُوْدِ، اِنَّكَ رَحِیْمٌ وَدُوْدٌ، وَاِنَّكَ تَفْعَلُ مَا تُرِیْدُ، اَللّٰهُمَّ اجْعَلْنَا هَادِیْنَ مُهْتَدِیْنَ غَیْرَ ضَالِّیْنَ وَلَا مُضِلِّیْنَ سِلْمًا لِاَوْلِیَائِكَ وَعَدُوًّا لِاَعْدَائِكَ نُحِبُّ بِحُبِّكَ مَنْ اَحَبَّكَ وَنُعَادِیْ بِعَدَاوَتِكَ مَنْ خَالَفَكَ، اَللّٰهُمَّ هٰذَا الدُّعَاءُ وَعَلَیْكَ الْاِجَابَةُ وَهٰذَا الْجُهْدُ وَعَلَیْكَ التُّكْلَانُ. اَللّٰهُمَّ اجْعَلْ لِّیْ نُوْرًا فِیْ قَلْبِیْ وَنُوْرًا فِیْ قَبْرِیْ وَنُوْرًا مِنْ بَیْنِ یَدَیَّ، وَنُوْرًا مِنْ خَلْفِیْ، وَنُوْرًا عَنْ یَمِیْنِیْ، وَنُوْرًا عَنْ شِمَالِیْ، وَنُوْرًا مِنْ فَوْقِیْ، وَنُوْرًا مِنْ تَحْتِیْ، وَنُوْرًا فِیْ سَمْعِیْ، وَنُوْرًا فِیْ بَصَرِیْ، وَنُوْرًا فِیْ شَعْرِیْ، وَنُوْرًا فِیْ بَشَرِیْ، وَنُوْرًا فِیْ لَحْمِیْ، وَنُوْرًا فِیْ دَمِیْ، وَنُوْرًا فِیْ عِظَامِیْ، اَللّٰهُمَّ اَعْظِمْ لِیْ نُوْرًا وَاَعْطِنِیْ نُوْرًا وَاجْعَلْ لِّیْ نُوْرًا، سُبْحَانَ الَّذِیْ تَعَطَّفَ الْعِزَّ وَقَالَ بِهٖ، سُبْحَانَ الَّذِیْ لَبِسَ الْمَجْدَ وَتَكَرَّمَ بِهٖ، سُبْحَانَ الَّذِیْ لَا یَنْبَغِی التَّسْبِیْحُ اِلَّا لَهٗ، سُبْحَانَ ذِی الْفَضْلِ وَالنِّعَمِ، سُبْحَانَ ذِی الْمَجْدِ وَالْكَرَمِ، سُبْحَانَ ذِی الْجَلَالِ وَالْاِكْرَامِ. رواه الترمذي وقال: هذا حديث غريب،

باب منه دعاء: اللّٰهم اني اسئلك رحمة من عندك ...... رقم: ٣٤١٩

163. हज़रत इब्ने अब्बास ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ एक रात तहज्जुद की नमाज़ से फ़ारिग़ हुए, तो मैंने आपको यह दुआ मांगते हुए सुना : तर्जुमा : ऐ अल्लाह! मैं आप से आप की ख़ास रहमत मांगता हूं, जिससे आप मेरे दिल को हिदायत नसीब फ़रमा दीजिए और उसके ज़रिए मेरे काम को आसान फ़रमा दीजिए और मेरी परेशानहाली को इस रहमत के ज़रिए दूर फ़रमा दीजिए और मेरी ग़ैर

हाज़िरी के मामलों की निगहबानी फ़रमाइए और जो चीज़ें मेरे पास हैं उनको इस रहमत के ज़रिए बुलन्दी और इज़्ज़त नसीब फ़रमा दीजिए और मेरे अमल को उस रहमत के ज़रिए (शिर्क व रिया) से पाक फ़रमा दीजिए और मेरे दिल में उस रहमत के ज़रिए वही बात डाल दीजिए जो मेरे लिए सही और मुनासिब हो और जिस चीज़ से मुझे मुहब्बत हो, वह मुझे उस रहमत के ज़रिए अता फ़रमा दीजिए और उस रहमत के ज़रिए मेरी हर बुराई से हिफ़ाज़त फ़रमा दीजिए। या अल्लाह! मुझे ऐसा ईमान और यक़ीन नसीब फ़रमा दीजिए जिसके बाद किसी क़िस्म का भी कुफ़्र न हो और मुझे अपनी वह रहमत अता फ़रमाइए, जिसके तुफ़ैल मुझे दुनिया व आख़िरत में आपकी जानिब से इज़्ज़त व शरफ़ का मक़ाम हासिल हो जाए। या अल्लाह! मैं आपसे फ़ैसलों की दुरुस्तगी, और आपके यहां शहीदों वाली मेहमानी, और ख़ुशनसीबों वाली ज़िन्दगी और दुश्मनों के मुक़ाबला में आपकी मदद का सवाल करता हूं। या अल्लाह! मैं आपके सामने अपनी हाजत पेश करता हूं अगरचे मेरी अक़्ल नाक़िस है और मेरा अमल कमज़ोर है, मैं आपकी रहमत का मुहताज हूं। ऐ काम बनाने वाले और दिलों को शिफ़ा देने वाले! जिस तरह आप अपनी क़ुदरत से (एक साथ बहने वाले) समुन्दरों को एक दूसरे से जुदा रखते हैं (कि खारा मीठे से अलग रहता है और मीठा खारे से अलग) उसी तरह मैं आप से सवाल करता हूं कि आप मुझे दोज़ख़ की आग से और उस अज़ाब से जिसको देखकर आदमी वावैला करने (मौत की दुआ मांगने) लगे और क़ब्र के अज़ाब से दूर रखिए। या अल्लाह! जिस भलाई तक मेरी अक़्ल न पहुंच सकी, और मेरा अमल उस भलाई के हासिल करने में कमज़ोर रहा, और मेरी नीयत भी उस तक न पहुंची, और मैंने आप से उस भलाई की दरख़्वास्त भी न की हो जिसका आपने अपनी मख़्लूक़ में किसी बन्दे से वादा फ़रमाया हो या कोई ऐसी भलाई हो कि उसको आप अपने बन्दों में किसी को देने वाले हों, ऐ तमाम जहानों के पालने वाले! मैं भी आपसे उस भलाई का ख़्वाहिशमंद हूं और उसको आपकी रहमत के वसीले से मांगता हूं। ऐ मज़बूत अहद वाले और नेक कामों के मालिक अल्लाह! मैं आपसे अज़ाब के दिन अम्न का, और क़ियामत के दिन जन्नत में उन लोगों के साथ रहने का सवाल करता हूं जो आप के मुक़र्रब, और आपके दरबार में हाज़िर रहने वाले, रुकूअ्-सज्दे में पड़े रहने वाले और अहदों को पूरा करने वाले हैं। बेशक आप बड़े मेहरबान और बहुत मुहब्बत फ़रमाने वाले हैं और बिलाशुबहा आप जो चाहते हैं, करते हैं। या अल्लाह! हमें दूसरों को ख़ैर की राह दिखाने वाला और ख़ुद हिदायतयाफ़्ता बना दीजिए, ऐसा न कीजिए कि हम ख़ुद भी

गुमराह हों और दूसरों को भी गुमराह करने वाले हों। जो आप से मुहब्बत रखे, हम आपकी उस मुहब्बत की वजह से उससे मुहब्बत करें और जो आपका मुख़ालिफ़ हो हम आपकी उस दुश्मनी की वजह से उससे दुश्मनी करें। ऐ अल्लाह! यह दुआ करना मेरा काम है और क़ुबूल करना आपका काम है और यह मेरी कोशिश है और भरोसा आपकी ज़ात पर है। या अल्लाह! मेरे दिल में नूर डाल दीजिए, और मेरी क़ब्र को नूरानी कर दीजिए मेरे आगे नूर, मेरे पीछे नूर, मेरे दाएं नूर, मेरे बाएं नूर, मेरे ऊपर नूर और मेरे नीचे नूर यानी मेरे हर तरफ़ आपका ही नूर हो, और मेरे कानों में नूर, मेरी आंखों में नूर, मेरे रुएं-रुएं में नूर, मेरी खाल में नूर, मेरे गोश्त में नूर, मेरे ख़ून में नूर, और मेरी हड्डी-हड्डी में नूर ही नूर कर दें। ऐ अल्लाह! मेरे नूर को बढ़ा दीजिए, मुझको नूर अता फ़रमा दीजिए और मेरे लिए नूर मुक़द्दर फ़रमा दीजिए। पाक है वह ज़ात, इज़्ज़त जिसकी चादर है और उसका फ़रमान इज़्ज़त वाला है, शराफ़त व बुज़ुर्गी जिसका लिबास है और उसकी बख़्शिश है। पाक है वह ज़ात कि हर ऐब से पाकी सिर्फ़ उसी की शायाने शान है। पाक है वह ज़ात जो बड़े फ़ज़्ल और नेमतों वाली है। पाक है वह ज़ात जो बड़े शरफ़ व करम वाली है और पाक है वह ज़ात जो बड़े जलाल व इकराम की मालिक है। (तिर्मिज़ी)

﴾164﴿ عَنْ اَبِیْ هُرَیْرَةَ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: مَنْ صَلّٰی فِیْ لَیْلَةٍ بِمِائَةِ آیَةٍ لَمْ یُکْتَبْ مِنَ الْغَافِلِیْنَ، وَمَنْ صَلّٰی فِیْ لَیْلَةٍ بِمِائَتَیْ آیَةٍ فَاِنَّهُ یُکْتَبُ مِنَ الْقَانِتِیْنَ الْمُخْلِصِیْنَ. رواه الحاكم وقال: صحيح على شرط مسلم ووافقه الذهبي ١/٣٠٩

164. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स किसी रात नमाज़ में सौ आयतें पढ़ लेता है, वह उस रात अल्लाह तआला की इबादत से ग़ाफ़िल रहने वालों में शुमार नहीं होता और जो शख़्स किसी रात नमाज़ में दो सौ आयतें पढ़ लेता है, वह उस रात मुख़्लिस इबादतगुज़ारों में शुमार होता है। (मुस्तदरक हाकिम)

﴾165﴿ عَنْ عَبْدِ اللّٰهِ بْنِ عَمْرِوبْنِ الْعَاصِ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُمَا عَنْ رَسُوْلِ اللّٰهِ ﷺ اَنَّهُ قَالَ: مَنْ قَامَ بِعَشْرِ آیَاتٍ لَمْ یُکْتَبْ مِنَ الْغَافِلِیْنَ، وَمَنْ قَامَ بِمِائَةِ آیَةٍ کُتِبَ مِنَ الْقَانِتِیْنَ، وَمَنْ قَرَأَ بِاَلْفِ آیَةٍ کُتِبَ مِنَ الْمُقَنْطِرِیْنَ. رواه ابن خزيمة في صحيحه ٢/١٨١

165. हज़रत अब्दुल्लाह बिन उम्र बिन आस ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स तहज्जुद में दस आयतें पढ़ लेता है वह उस रात

ग़ाफ़िलों में शुमार नहीं होता। जो सौ आयतें पढ़ लेता है, उसका शुमार इबादतगुज़ारों में होता है और जो हज़ार आयतें पढ़ लेता है वह उन लोगों में शुमार होता है, जिनको क़िन्तार बराबर सवाब मिलता है। (इब्ने खुज़ैमा)

﴿166﴾ عَنْ اَبِیْ هُرَیْرَةَ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ اَنَّ رَسُوْلَ اللّٰهِ ﷺ قَالَ: اَلْقِنْطَارُ اثْنَا عَشَرَ اَلْفَ اُوْقِیَةٍ، کُلُّ اُوْقِیَةٍ خَیْرٌ مِمَّا بَیْنَ السَّمَاءِ وَالْاَرْضِ. رواه ابن حبان، قال المحقق: اسناده حسن ٦/٣١١

166. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : क़िन्तार बारह हज़ार औक़िया का होता है। हर औक़िया ज़मीन व आसमान के दर्मियान की तमाम चीज़ों से बेहतर है। (इब्ने हब्बान)

﴿167﴾ عَنْ اَبِیْ هُرَیْرَةَ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: رَحِمَ اللّٰهُ رَجُلًا قَامَ مِنَ اللَّیْلِ فَصَلّٰی ثُمَّ اَیْقَظَ امْرَاَتَهُ فَصَلَّتْ، فَاِنْ اَبَتْ نَضَحَ فِیْ وَجْهِهَا الْمَاءَ، وَرَحِمَ اللّٰهُ امْرَاَةً قَامَتْ مِنَ اللَّیْلِ فَصَلَّتْ ثُمَّ اَیْقَظَتْ زَوْجَهَا فَصَلّٰی، فَاِنْ اَبٰی نَضَحَتْ فِیْ وَجْهِهِ الْمَاءَ. رواه النسائی، باب الترغیب فی قیام اللیل، رقم: ١٦١١

167. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अल्लाह तआला उस शख़्स पर रहमत फ़रमाएं, जो रात को उठकर तहज्जुद पढ़े, फिर अपनी बीवी को भी जगाए और वह भी नमाज़ पढ़े और अगर (नींद के ग़लबे की वजह से) वह न उठी तो उसके मुंह पर पानी का हल्का-सा छींटा देकर जगा दे और उसी तरह अल्लाह तआला उस औरत पर रहमत फ़रमाएं, जो रात को उठकर तहज्जुद पढ़े, फिर अपने शौहर को जगाए और वह भी नमाज़ पढ़े और अगर वह न उठे तो उसके मुंह पर पानी का हल्का-सा छींट दे कर उठा दे। (नसाई)

फ़ायदा : इस हदीस का ताल्लुक़ उन मियां-बीवी से है जो तहज्जुद का शौक़ रखते हों और इस तरह उठाना उनके दर्मियान नागवारी का सबब न हो। (मआरिफ़ुल हदीस)

﴿168﴾ عَنْ اَبِیْ سَعِیْدٍ وَاَبِیْ هُرَیْرَةَ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُمَا قَالَا: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: اِذَا اَیْقَظَ الرَّجُلُ اَهْلَهُ مِنَ اللَّیْلِ فَصَلَّیَا اَوْصَلّٰی رَکْعَتَیْنِ جَمِیْعًا کُتِبَ فِی الذَّاکِرِیْنَ وَالذَّاکِرَاتِ. رواه ابوداؤد، باب قیام اللیل، رقم: ١٣٠٩

168. हज़रत अबू हुरैरह और हज़रत अबू सईद ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह

ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जब आदमी रात में अपने घर वालों को जगाता है और मियां-बीवी दोनों तहज्जुद की (कम-से-कम) दो रकअ़त पढ़ लेते हैं तो उन दोनों का शुमार कसरत से ज़िक्र करने वालों में हो जाता है। (अबूदाऊद)

﴿169﴾ عَنْ عَطَاءٍ رَحِمَهُ اللهُ قَالَ: قُلْتُ لِعَائِشَةَ: أَخْبِرِيْنِي بِأَعْجَبِ مَا رَأَيْتِ مِنْ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ، قَالَتْ: وَأَيُّ شَأْنِهِ لَمْ يَكُنْ عَجَبًا؟! إِنَّهُ أَتَانِي لَيْلَةً فَدَخَلَ مَعِيَ لِحَافِيْ ثُمَّ قَالَ: ذَرِيْنِي أَتَعَبَّدُ لِرَبِّيْ، فَقَامَ فَتَوَضَّأَ ثُمَّ قَامَ يُصَلِّي، فَبَكَى حَتَّى سَالَتْ دُمُوْعُهُ عَلَى صَدْرِهِ، ثُمَّ رَكَعَ فَبَكَى، ثُمَّ سَجَدَ فَبَكَى ثُمَّ رَفَعَ رَأْسَهُ فَبَكَى، فَلَمْ يَزَلْ كَذَلِكَ حَتَّى جَاءَ بِلَالٌ يُؤْذِنُهُ بِالصَّلَاةِ، فَقُلْتُ: يَارَسُوْلَ اللهِ، وَمَا يُبْكِيْكَ وَقَدْ غَفَرَ اللهُ لَكَ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْبِكَ وَمَا تَأَخَّرَ؟ قَالَ: أَفَلَا أَكُوْنُ عَبْدًا شَكُوْرًا، وَلِمَ لَا أَفْعَلُ وَقَدْ أَنْزَلَ اللهُ عَلَيَّ هٰذِهِ اللَّيْلَةَ: ﴿إِنَّ فِيْ خَلْقِ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ وَاخْتِلَافِ الَّيْلِ وَالنَّهَارِ لَاٰيٰتٍ لِّأُولِي الْأَلْبَابِ﴾ الآيات.

اخرجه ابن حبان في صحيحه اقامة الحجة ص ١١٢

169. हज़रत अ़ता रह० फ़रमाते हैं, मैंने हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा से अ़र्ज़ किया कि रसूलुल्लाह ﷺ की कोई अजीब बात जो आपने देखी हो, वह सुना दें। हज़रत आ़इशा रज़ि० ने फ़रमाया कि रसूलुल्लाह ﷺ की कौन-सी बात अजीब न थी। एक रात मेरे पास तशरीफ़ लाए और मेरे साथ लिहाफ़ में लेट गए। फिर फ़रमाने लगे छोड़ो मैं तो अपने रब की इबादत करूंगा। यह फ़रमा कर बिस्तर से उठे, वुज़ू फ़रमाया, फिर नमाज़ के लिए खड़े हो गए और रोना शुरू कर दिया, यहां तक कि आंसू सीना मुबारक तक बहने लगे, फिर रुकूअ़ फ़रमाया, उसमें भी उसी तरह रोते रहे। फिर सज्दा फ़रमाया उसमें भी इसी तरह रोते रहे। फिर सज्दा से उठे और उसी तरह रोते रहे, यहां तक कि हज़रत बिलाल ؓ ने आकर सुबह की नमाज़ के लिए आवाज़ दी। मैंने अ़र्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! आप इतना क्यों रो रहे हैं जब कि आपके अगले पिछले गुनाह (अगर होते भी तो) अल्लाह तआ़ला ने माफ़ फ़रमा दिए हैं। आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : तो क्या फिर मैं शुक्रगुज़ार बन्दा न बनूं? और मैं ऐसा क्यों न करूं जबकि आज रात मुझ पर 'इन-न फ़ी ख़ल्क़िस्समावाति वल अर्ज़ि व ख़्तिलाफ़िल्लैलि वन्नहारि ल आयातिल्लि उलि अलबाब' से सूरः आले इमरान के ख़त्म तक की आयतें नाज़िल हुई हैं। (इब्ने हब्बान इक़ामतुल हुज्जः)

﴿170﴾ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: مَا مِنِ امْرِىءٍ تَكُوْنُ لَهُ صَلٰوةٌ بِلَيْلٍ فَغَلَبَهُ عَلَيْهَا نَوْمٌ إِلَّا كَتَبَ اللهُ لَهُ أَجْرَ صَلٰوتِهِ وَكَانَ نَوْمُهُ صَدَقَةً عَلَيْهِ.

رواه النسائي، باب من كان له صلاة بالليل رقم: ١٧٨٥

170. हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स तहज्जुद पढ़ने का आदी हो और नींद के ग़लबे की वजह से (किसी रात) आंख न खुली तो अल्लाह तआला उसके लिए तहज्जुद का सवाब लिख देते हैं और उसका सोना अल्लाह तआला की तरफ़ से उस पर एक इनाम है कि बग़ैर तहज्जुद पढ़े उसे (उस रात) तहज्जुद का सवाब मिल जाता है। (नसाई)

﴿171﴾ عَنْ أَبِي الدَّرْدَاءِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ يَبْلُغُ بِهِ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ: مَنْ أَتَى فِرَاشَهُ وَهُوَ يَنْوِي أَنْ يَقُومَ، يُصَلِّي مِنَ اللَّيْلِ فَغَلَبَتْهُ عَيْنَاهُ حَتَّى أَصْبَحَ، كُتِبَ لَهُ مَا نَوَى وَكَانَ نَوْمُهُ صَدَقَةً عَلَيْهِ مِنْ رَبِّهِ عَزَّوَجَلَّ. رواه النسائي، باب من أتى فراشه وهو ينوي القيام فنام، رقم: ١٧٨٨

171. हज़रत अबुद्दर्दा ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स रात को सोने के लिए बिस्तर पर आए और उसकी नीयत रात को तहज्जुद पढ़ने की थी, लेकिन वह ऐसा सोया कि सुबह ही जागा तो उसको उसकी नीयत पर तहज्जुद का सवाब मिलता है और उसका सोना अल्लाह तआला की तरफ़ से एक इनाम है। (नसाई)

﴿172﴾ عَنْ مُعَاذِ بْنِ أَنَسٍ الْجُهَنِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: مَنْ قَعَدَ فِي مُصَلَّاهُ حِينَ يَنْصَرِفُ مِنْ صَلَاةِ الصُّبْحِ حَتَّى يُسَبِّحَ رَكْعَتَيِ الضُّحَى لَا يَقُولُ إِلَّا خَيْرًا غُفِرَ لَهُ خَطَايَاهُ، وَإِنْ كَانَتْ أَكْثَرَ مِنْ زَبَدِ الْبَحْرِ. رواه ابو داؤد، باب صلوة الضحى، رقم: ١٢٨٧

172. हज़रत मुआज़ बिन अनस जुहनी ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स फ़ज्र की नमाज़ से फ़ारिग़ होकर उसी जगह बैठा रहता है, ख़ैर के अलावा कोई बात नहीं करता, फिर दो रकअत इशराक़ की नमाज़ पढ़ता है, उसके गुनाह माफ़ हो जाते हैं, चाहे वह समुन्दर के झाग से ज़्यादा ही हों। (अबूदाऊद)

﴿173﴾ عَنِ الْحَسَنِ بْنِ عَلِيٍّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ يَقُولُ: مَنْ صَلَّى الْغَدَاةَ ثُمَّ ذَكَرَ اللهَ عَزَّوَجَلَّ حَتَّى تَطْلُعَ الشَّمْسُ، ثُمَّ صَلَّى رَكْعَتَيْنِ أَوْ أَرْبَعَ رَكَعَاتٍ لَمْ تَمَسَّ جِلْدَهُ النَّارُ. رواه البيهقي في شعب الايمان ٣/٤٢٠

173. हज़रत हसन बिन अली ﷺ से नबी करीम ﷺ का यह इर्शाद नक़ल किया गया है : जो शख़्स फ़ज्र की नमाज़ पढ़कर सूरज निकलने तक अल्लाह तआला के

ज़िक्र में मश्गूल रहता है फिर दो या चार रकअ़त (इश्राक़ की नमाज़) पढ़ता है तो उसकी खाल को (भी) दोज़ख़ की आग न छूएगी। (बैहक़ी)

﴿174﴾ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَنْ صَلَّى الْفَجْرَ فِي جَمَاعَةٍ ثُمَّ قَعَدَ يَذْكُرُ اللهَ حَتَّى تَطْلُعَ الشَّمْسُ ثُمَّ صَلَّى رَكْعَتَيْنِ كَانَتْ لَهُ كَأَجْرِ حَجَّةٍ وَ عُمْرَةٍ، قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: تَامَّةٍ تَامَّةٍ تَامَّةٍ. رواه الترمذي وقال:

هذا حديث حسن غريب، باب ما ذكر مما يستحب من الجلوس ......، رقم: ٥٨٦

174. हज़रत अनस बिन मालिक ﷺ से रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स फ़ज्र की नमाज़ जमाअ़त से पढ़ता है, फिर आफ़ताब निकलने तक अल्लाह तआ़ला के ज़िक्र में मश्गूल रहता है फिर दो रकअ़त नफ़्ल पढ़ता है तो उसे हज और उमरा का सवाब मिलता है। हज़रत अनस ﷺ फ़रमाते हैं कि नबी करीम ﷺ ने तीन मर्तबा इर्शाद फ़रमाया : कामिल हज और उमरे का सवाब, कामिल हज और उमरे का सवाब, कामिल हज और उमरे का सवाब मिलता है। (तिर्मिज़ी)

﴿175﴾ عَنْ أَبِي الدَّرْدَاءِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: إِنَّ اللهَ عَزَّوَجَلَّ يَقُوْلُ: ابْنَ آدَمَ لَا تَعْجِزَنَّ مِنْ أَرْبَعِ رَكَعَاتٍ مِنْ أَوَّلِ النَّهَارِ أَكْفِكَ آخِرَهُ.

رواه احمد و رجاله ثقات، مجمع الزوائد ٢/٤٩٢

175. हज़रत अबुद्दर्दा ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अल्लाह तआ़ला फ़रमाते हैं : आदम के बेटे! दिन के शुरू में चार रकअ़त पढ़ने से आजिज़ न बनो, मैं तुम्हारे दिन भर के काम बना दूंगा।(मुस्नद अहमद, मज्मउज़्ज़वाइद)

फ़ायदा : यह फ़ज़ीलत इश्राक़ की नमाज़ की है और यह भी मुम्किन है कि इससे मुराद चाश्त की नमाज़ हो।

﴿176﴾ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: بَعَثَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ بَعْثًا فَأَعْظَمُوا الْغَنِيْمَةَ، وَأَسْرَعُوا الْكَرَّةَ، فَقَالَ رَجُلٌ: يَا رَسُوْلَ اللهِ، مَا رَأَيْنَا بَعْثًا قَطُّ أَسْرَعَ كَرَّةً وَلَا أَعْظَمَ غَنِيْمَةً مِنْ هٰذَا الْبَعْثِ! فَقَالَ: أَلَا أُخْبِرُكُمْ بِأَسْرَعَ كَرَّةً مِنْهُ، وَأَعْظَمَ غَنِيْمَةً؟ رَجُلٌ تَوَضَّأَ فِي بَيْتِهِ فَأَحْسَنَ الْوُضُوْءَ ثُمَّ عَمِدَ إِلَى الْمَسْجِدِ فَصَلَّى فِيْهِ الْغَدَاةَ، ثُمَّ عَقَّبَ بِصَلَاةِ الضُّحْوَةِ فَقَدْ أَسْرَعَ الْكَرَّةَ، وَأَعْظَمَ الْغَنِيْمَةَ.

رواه ابو يعلى ورجاله رجال الصحيح، مجمع الزوائد ٢/٤٩١

176. हज़रत अबू हुरैरह ﷛ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने एक लश्कर भेजा, जो बहुत ही जल्द ग़नीमत का सारा माल लेकर वापस लौट आया। एक सहाबी ﷛ ने अ़र्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! हमने कोई ऐसा लश्कर नहीं देखा, जो इतनी जल्दी ग़नीमत का इतना सारा माल लेकर वापस लौट आया हो। रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : क्या मैं तुम्हें इससे भी कम वक़्त में इस माल से बहुत ज़्यादा ग़नीमत कमाने वाला शख़्स न बताऊं? यह वह शख़्स है जो अपने घर से अच्छी तरह वुज़ू करके मस्जिद जाता है, फ़ज्र की नमाज़ पढ़ता है, फिर (सूरज निकले के बाद) इश्राक़ की नमाज़ पढ़ता है तो यह बहुत थोड़े वक़्त में बहुत ज़्यादा नफ़ा कमाने वाला है। (अबू याला, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴾177﴿ عَنْ اَبِیْ ذَرٍّ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ عَنِ النَّبِیِّ ﷺ اَنَّہٗ قَالَ: یُصْبِحُ عَلٰی کُلِّ سُلَامٰی مِنْ اَحَدِکُمْ صَدَقَۃٌ، فَکُلُّ تَسْبِیْحَۃٍ صَدَقَۃٌ، وَکُلُّ تَحْمِیْدَۃٍ صَدَقَۃٌ، وَکُلُّ تَہْلِیْلَۃٍ صَدَقَۃٌ، وَکُلُّ تَکْبِیْرَۃٍ صَدَقَۃٌ، وَاَمْرٌ بِالْمَعْرُوْفِ صَدَقَۃٌ، وَنَہْیٌ عَنِ الْمُنْکَرِ صَدَقَۃٌ، وَیُجْزِئُ مِنْ ذٰلِکَ رَکْعَتَانِ یَرْکَعُہُمَا مِنَ الضُّحٰی۔ رواہ مسلم، باب استحباب صلاۃ الضحی ...... رقم: ١٦٧١

177. हज़रत अबूज़र ﷛ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : तुममें से हर शख़्स के ज़िम्मे उसके जिस्म के एक-एक जोड़ की सलामती के शुक्राने में रोज़ाना सुबह को एक सदक़ा होता है। हर सुब्हानल्लाह कहना सदक़ा है, हर बार अलहम्दु लिल्लाह कहना सदक़ा है, हर बार ला इला-ह इल्लल्लाह कहना सदक़ा है, हर बार अल्लाहु अकबर कहना सदक़ा है, भलाई का हुक्म करना सदक़ा है, बुराई से रोकना सदक़ा है और हर जोड़ के शुक्र की अदाइगी के लिए चाश्त के वक़्त दो रकअ़तें पढ़ना काफ़ी हो जाती हैं। (मुस्लिम)

﴾178﴿ عَنْ بُرَیْدَۃَ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللّٰہِ ﷺ یَقُوْلُ: فِی الْاِنْسَانِ ثَلٰثُمِائَۃٍ وَسِتُّوْنَ مَفْصِلًا، فَعَلَیْہِ اَنْ یَتَصَدَّقَ عَنْ کُلِّ مَفْصِلٍ مِنْہُ بِصَدَقَۃٍ قَالُوْا: وَمَنْ یُطِیْقُ ذٰلِکَ یَانَبِیَّ اللّٰہِ؟ قَالَ: اَلنُّخَاعَۃُ فِی الْمَسْجِدِ تَدْفِنُہَا، وَالشَّیْءُ تُنَحِّیْہِ عَنِ الطَّرِیْقِ، فَاِنْ لَمْ تَجِدْ فَرَکْعَتَا الضُّحٰی تُجْزِئُکَ۔ رواہ ابو داؤد، باب فی اماطۃ الاذی عن الطریق، رقم: ٥٢٤٢

178. हज़रत बुरैदा ﷛ फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : आदमी में तीन सौ साठ जोड़ हैं। उसके ज़िम्मे ज़रूरी है कि हर जोड़ की सलामती के शुक्राने में एक सदक़ा अदा किया करे। सहाबा रज़ि० ने अ़र्ज़ किया :

या रसूलुल्लाह! इतने सदक़े कौन अदा कर सकता है? इर्शाद फ़रमाया : मस्जिद में अगर थूक पड़ा हो तो उसे दफ़न कर देना सदक़े का सवाब रखता है, रास्ते से तकलीफ़ देने वाली चीज़ का हटा देना भी सदक़ा है। अगर इन अमलों का मौक़ा न मिले, तो चाश्त की दो रकअ़त नमाज पढ़ना इन सब सदक़ों के बदले तुम्हारे लिए काफ़ी है। (अबूदाऊद)

﴿179﴾ عَنْ اَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَنْ حَافَظَ عَلٰى شُفْعَةِ الضُّحٰى غُفِرَتْ لَهٗ ذُنُوْبُهٗ، وَاِنْ كَانَتْ مِثْلَ زَبَدِ الْبَحْرِ.

رواه ابن ماجه، باب ماجاء في صلوة الضحى، رقم: ١٣٨٢

179. हज़रत अबू हुरैरह رضي الله عنه से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो चाश्त की दो रकअ़त पढ़ने का एहतमाम करता है उसके गुनाह माफ़ कर दिए जाते हैं, अगरचे वे समुन्दर के झाग के बराबर हों। (इब्ने माजा)

﴿180﴾ عَنْ اَبِي الدَّرْدَاءِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَنْ صَلَّى الضُّحٰى رَكْعَتَيْنِ لَمْ يُكْتَبْ مِنَ الْغَافِلِيْنَ، وَمَنْ صَلّٰى اَرْبَعًا كُتِبَ مِنَ الْعَابِدِيْنَ، وَمَنْ صَلّٰى سِتًّا كُفِيَ ذٰلِكَ الْيَوْمَ، وَمَنْ صَلّٰى ثَمَانِيًا كَتَبَهُ اللهُ مِنَ الْقَانِتِيْنَ، وَمَنْ صَلّٰى ثِنْتَيْ عَشْرَةَ بَنَى اللهُ لَهٗ بَيْتًا فِي الْجَنَّةِ، وَمَا مِنْ يَوْمٍ وَلَيْلَةٍ اِلَّا لِلّٰهِ مَنٌّ يَمُنُّ بِهٖ عَلٰى عِبَادِهٖ وَصَدَقَةٌ، وَمَا مَنَّ اللهُ عَلٰى اَحَدٍ مِنْ عِبَادِهٖ اَفْضَلُ مِنْ اَنْ يُلْهِمَهٗ ذِكْرَهٗ.

رواه الطبراني في الكبير وفيه موسى بن يعقوب الزمعي، وثقه ابن معين وابن حبان، وضعفه ابن المديني وغيره، وبقية رجاله ثقات، مجمع الزوائد ٢/٤٩٤

180. हज़रत अबुद्दर्दा رضي الله عنه रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स चाश्त के दो नफ़्ल पढ़ता है, वह अल्लाह तआ़ला की इबादत से ग़ाफ़िल रहने वालों में शुमार नहीं होता, जो चार नफ़्ल पढ़ता है वह इबादतगुज़ारों में लिखा जाता है, जो छः नफ़्ल पढ़ता है उसके उस दिन के कामों में मदद की जाती है, जो आठ नफ़्ल पढ़ता है, अल्लाह तआ़ला उसे फ़रमांबरदारों में लिख देते हैं और जो बारह नफ़्ल पढ़ता है अल्लाह तआ़ला उसके लिए जन्नत में महल बना देते हैं। हर दिन और रात में अल्लाह तआ़ला अपने बन्दों पर सदक़ा और एहसान फ़रमाते हैं और अल्लाह तआ़ला का अपने बन्दे पर सबसे बड़ा एहसान यह होता है कि उसे अपने

ज़िक्र की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमा दें। (तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿181﴾ عَنْ اَبِیْ هُرَيْرَةَ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: مَنْ صَلّٰى بَعْدَ الْمَغْرِبِ سِتَّ رَكَعَاتٍ لَمْ يَتَكَلَّمْ فِيْمَا بَيْنَهُنَّ بِسُوْءٍ عُدِلْنَ لَهُ بِعِبَادَةِ ثِنْتَيْ عَشْرَةَ سَنَةً.

رواه الترمذی وقال: حدیث ابی هريرة حديث غريب، باب ماجاء فی فضل التطوع ......، رقم: ٤٣٥

181. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स मग़्रिब की नमाज़ के बाद छः रकअ़तें इस तरह पढ़ता है कि उनके दर्मियान कोई फ़ुज़ूल बात नहीं करता तो उसे बारह साल की इबादत के बराबर सवाब मिलता है। (तिर्मिज़ी)

फ़ायदा : मग़रिब के बाद दो रकअ़त सुन्नते मुअक्कदा के अलावा चार रकअ़त नफ़्लें और पढ़ी जाएं तो छः हो जाएंगी। बाज़ उलमा के नज़दीक ये छः रकअ़तें, मग़्रिब की दो रकअ़त सुन्नत मुअक्कदा के अलावा हैं। (मिरक़ात, मज़ाहिरे हक़)

﴿182﴾ عَنْ اَبِیْ هُرَيْرَةَ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ اَنَّ النَّبِیَّ ﷺ قَالَ لِبِلَالٍ عِنْدَ صَلٰوةِ الْفَجْرِ: يَا بِلَالُ، حَدِّثْنِیْ بِاَرْجٰى عَمَلٍ عَمِلْتَهُ فِی الْاِسْلَامِ، فَاِنِّیْ سَمِعْتُ دَفَّ نَعْلَيْكَ بَيْنَ يَدَیَّ فِی الْجَنَّةِ قَالَ: مَا عَمِلْتُ عَمَلًا اَرْجٰى عِنْدِیْ اَنِّیْ لَمْ اَتَطَهَّرْ طُهُوْرًا فِیْ سَاعَةِ لَيْلٍ اَوْنَهَارٍ اِلَّا صَلَّيْتُ بِذٰلِكَ الطُّهُوْرِ مَاكُتِبَ لِیْ اَنْ اُصَلِّیَ.

رواه البخاری، باب فضل الطهور بالليل والنهار ......، رقم: ١١٤٩

182. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ से रिवायत है कि एक दिन रसूलुल्लाह ﷺ ने हज़रत बिलाल रज़ि० से फ़ज्र की नमाज़ के वक़्त दरयाफ़्त फ़रमाया : बिलाल! इस्लाम लाने के बाद अपना वह अ़मल बताओ जिससे तुम्हें सवाब की सबसे ज़्यादा उम्मीद हो, क्योंकि मैंने जन्नत में अपने आगे-आगे तुम्हारे जूतों की आहट रात ख़्वाब में सुनी है। हज़रत बिलाल ﷺ ने अ़र्ज़ किया कि मुझे अपने आमाल में सबसे ज़्यादा उम्मीद जिस अ़मल से है वह यह है कि मैंने रात या दिन में जब किसी वक़्त भी वुज़ू किया है तो उस वुज़ू से इतनी (तहिय्यतुल वुज़ू) ज़रूर पढ़ी है जितनी मुझे अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से उस वक़्त तौफ़ीक़ मिली। (बुख़ारी)

सलातुत्तस्बीह

﴿183﴾ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمَا اَنَّ رَسُوْلَ اللّٰهِ ﷺ قَالَ لِلْعَبَّاسِ بْنِ عَبْدِ الْمُطَّلِبِ: يَاعَبَّاسُ! يَا عَمَّاهُ! اَلَا اُعْطِيْكَ؟ اَلَا اَمْنَحُكَ؟ اَلَا اَحْبُوْكَ؟ اَلَا اَفْعَلُ بِكَ عَشْرَ خِصَالٍ اِذَا اَنْتَ فَعَلْتَ ذٰلِكَ غَفَرَ اللّٰهُ لَكَ ذَنْبَكَ اَوَّلَهُ وَآخِرَهُ قَدِيْمَهُ وَحَدِيْثَهُ خَطَاَهُ وَعَمْدَهُ، صَغِيْرَهُ وَكَبِيْرَهُ سِرَّهُ وَعَلَانِيَتَهُ. عَشْرَ خِصَالٍ. اَنْ تُصَلِّيَ اَرْبَعَ رَكَعَاتٍ تَقْرَاُ فِيْ كُلِّ رَكْعَةٍ فَاتِحَةَ الْكِتَابِ وَسُوْرَةً، فَاِذَا فَرَغْتَ مِنَ الْقِرَاءَةِ فِيْ اَوَّلِ رَكْعَةٍ وَاَنْتَ قَائِمٌ قُلْتَ: سُبْحَانَ اللّٰهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ وَلَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ اَكْبَرُ خَمْسَ عَشْرَةَ مَرَّةً، ثُمَّ تَرْكَعُ فَتَقُوْلُهَا وَاَنْتَ رَاكِعٌ عَشْرًا ثُمَّ تَرْفَعُ رَاْسَكَ مِنَ الرُّكُوْعِ فَتَقُوْلُهَا عَشْرًا ثُمَّ تَهْوِيْ سَاجِدًا فَتَقُوْلُهَا وَاَنْتَ سَاجِدٌ عَشْرًا ثُمَّ تَرْفَعُ رَاْسَكَ مِنَ السُّجُوْدِ فَتَقُوْلُهَا عَشْرًا ثُمَّ تَسْجُدُ فَتَقُوْلُهَا عَشْرًا ثُمَّ تَرْفَعُ رَاْسَكَ فَتَقُوْلُهَا عَشْرًا فَذٰلِكَ خَمْسٌ وَسَبْعُوْنَ، فِيْ كُلِّ رَكْعَةٍ تَفْعَلُ ذٰلِكَ فِيْ اَرْبَعِ رَكَعَاتٍ، اِنِ اسْتَطَعْتَ اَنْ تُصَلِّيَهَا فِيْ كُلِّ يَوْمٍ مَرَّةً فَافْعَلْ، فَاِنْ لَمْ تَفْعَلْ فَفِيْ كُلِّ جُمُعَةٍ مَرَّةً، فَاِنْ لَمْ تَفْعَلْ فَفِيْ كُلِّ شَهْرٍ مَرَّةً، فَاِنْ لَمْ تَفْعَلْ فَفِيْ كُلِّ سَنَةٍ مَرَّةً، فَاِنْ لَمْ تَفْعَلْ فَفِيْ عُمُرِكَ مَرَّةً.

رواه ابوداؤد، باب صلوة التسبيح، رقم: ١٢٩٧

183. हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने हज़रत अ़ब्बास ﷺ से फ़रमाया : अ़ब्बास! मेरे चचा! क्या मैं आपको एक अ़तीया न करूं? क्या एक हदिया न करूं? क्या एक तोहफ़ा पेश न करूं? क्या मैं आपको ऐसा अ़मल न बताऊं जब आप उसको करेंगे तो आपको दस फ़ायदे हासिल होंगे, यानी अल्लाह तआ़ला आपके अगले, पिछले, पुराने, नए, ग़लती से किए हुए, जान-बूझकर किए हुए, छोटे, बड़े, छुप कर किए हुए, खुल्लम खुल्ला किए हुए गुनाह सब ही माफ़ फ़रमा देंगे। वह अ़मल यह है कि आप चार रकअ़त (सलातुत्तस्बीह) पढ़ें और हर रकअ़त में सूरः फ़ातिहा और दूसरी कोई सूरत पढ़ें। जब आप पहली रकअ़त में क़िरअत से फ़ारिग़ हो जाएं तो क़ियाम ही की हालत में रुकूअ़ से पहले सुब्हानल्लाह वलहम्दु लिल्लाह व ला इला-ह इल्लल्लाहु वल्लाहु अकबर पन्द्रह मर्तबा कहें। फिर रुकूअ़ करें और रुकूअ़ में भी यही कलिमे दस मर्तबा कहें। फिर रुकूअ़ से उठकर क़ौमा में भी यही कलिमे दस मर्तबा कहें। फिर सज्दे में चले जाएं और उसमें भी ये कलिमे दस मर्तबा कहें। फिर सज्दे से उठकर जल्सा में यही कलिमे

दस मर्तबा कहें। फिर दूसरे सज्दे में भी यही कलिमे दस मर्तबा कहें। फिर दूसरे सज्दे के बाद भी खड़े होने से पहले बैठे-बैठे यही कलिमे दस मर्तबा कहें। चारों रकअ़त इसी तरह पढ़ें और इस तरतीब से हर रकअ़त में ये कलिमे पचहत्तर मर्तबा कहें। (मेरे चचा) अगर आपसे हो सके तो रोज़ाना यह नमाज़ एक मर्तबा पढ़ा करें। अगर रोज़ाना न पढ़ सकें तो हर जुमा के दिन पढ़ लिया करें। अगर आप यह भी न कर सकें तो साल में एक मर्तबा पढ़ लिया करें। अगर यह भी न हो सके तो ज़िन्दगी में एक मर्तबा ही पढ़ लें। (अबूदाऊद)

﴾184﴿ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: وَجَّهَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ جَعْفَرَبْنَ اَبِيْ طَالِبٍ اِلٰى بِلَادِ الْحَبْشَةِ فَلَمَّا قَدِمَ اعْتَنَقَهُ، وَقَبَّلَ بَيْنَ عَيْنَيْهِ ثُمَّ قَالَ: اَلَا اَهَبُ لَكَ، اَلَا اُبَشِّرُكَ اَلَا اَمْنَحُكَ اَلَا اُتْحِفُكَ؟ قَالَ: نَعَمْ: يَارَسُوْلَ اللهِ ثُمَّ ذَكَرَ نَحْوَ مَا تَقَدَّمَ.

اخرجه الحاكم وقال: هذا اسناد صحيح لا غبار عليه ومما يستدل به على صحة هذا الحديث استعمال الائمة من اتباع التابعين الى عصرنا هذا اياه ومواظبتهم عليه وتعليمهم الناس منهم عبدالله بن المبارك رحمه الله، قال الذهبي: هذا اسناد صحيح لا غبار عليه ١/٣١٩

184. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर ﷺ फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने हज़रत जाफ़र बिन अबी तालिब ﷺ को हब्शा रवाना फ़रमाया। जब वह वहां से मदीना तय्यबा आए तो आप ﷺ ने उनको गले लगाया और पेशानी पर बोसा दिया, फिर इर्शाद फ़रमाया : क्या मैं तुम्हें एक हदिया न दूं? क्या मैं तुम्हें एक ख़ुशख़बरी न सुनाऊं? क्या मैं तुम्हें एक तोहफ़ा न दूं? उन्होंने अ़र्ज़ किया : ज़रूर, इर्शाद फ़रमाइए। फिर आप ﷺ ने सलातुत्तस्बीह की तफ़सील ब्यान फ़रमाई। (मुस्तदरक हाकिम)

﴾185﴿ عَنْ فَضَالَةَ بْنِ عُبَيْدٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: بَيْنَا رَسُوْلُ اللهِ ﷺ قَاعِدٌ اِذْ دَخَلَ رَجُلٌ فَصَلّٰى فَقَالَ: اَللّٰهُمَّ اغْفِرْلِيْ وَارْحَمْنِيْ فَقَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: عَجِلْتَ اَيُّهَا الْمُصَلِّيْ اِذَا صَلَّيْتَ فَقَعَدْتَ فَاحْمَدِ اللهَ بِمَا هُوَ اَهْلُهُ وَصَلِّ عَلَيَّ ثُمَّ ادْعُهُ، قَالَ: ثُمَّ صَلّٰى رَجُلٌ آخَرُ بَعْدَ ذٰلِكَ فَحَمِدَ اللهَ وَصَلّٰى عَلَى النَّبِيِّ ﷺ، فَقَالَ لَهُ النَّبِيُّ ﷺ: اَيُّهَا الْمُصَلِّيْ ادْعُ تُجَبْ.

رواه الترمذي وقال: هذا حديث حسن، باب في ايجاب الدعاء ...، رقم: ٣٤٧٦

185. हज़रत फ़ज़ाला बिन उबैद ﷺ फ़रमाते हैं कि एक दिन रसूलुल्लाह ﷺ तशरीफ़ फ़रमा थे कि एक शख़्स मस्जिद में दाख़िल हुए और नमाज़ पढ़ी। फिर यह

दुआ मांगी 'अल्लाहुम्मग़्फ़िर ली वर्हम्नी' ('ऐ अल्लाह मेरी मग़्फ़िरत फ़रमाइए, मुझ पर रहम फ़रमाइए') रसूलुल्लाह ﷺ ने नमाज़ी से इर्शाद फ़रमाया : तुमने दुआ मांगने में जल्दी की, जब तुम नमाज़ पढ़कर बैठो तो पहले अल्लाह तआला की शायाने शान तारीफ़ करो और मुझ पर दुरूद भेजो, फिर दुआ मांगो।

हज़रत फ़ज़ाला رضي الله عنه फ़रमाते हैं, फिर एक और साहब ने नमाज़ पढ़ी, उन्होंने अल्लाह तआला की तारीफ़ ब्यान की और नबी करीम ﷺ पर दुरूद भेजा। आप ﷺ ने उन साहब से इर्शाद फ़रमाया : अब तुम दुआ करो, क़ुबूल होगी। (तिर्मिज़ी)

﴿186﴾ عَنْ اَنَسِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ اَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ مَرَّ بِاَعْرَابِيٍّ، وَهُوَ يَدْعُوْ فِيْ صَلَاتِهِ، وَهُوَ يَقُوْلُ: يَامَنْ لَا تَرَاهُ الْعُيُوْنُ، وَلَا تُخَالِطُهُ الظُّنُوْنُ، وَلَا يَصِفُهُ الْوَاصِفُوْنَ، وَلَا تُغَيِّرُهُ الْحَوَادِثُ، وَلَا يَخْشَى الدَّوَائِرَ، يَعْلَمُ مَثَاقِيْلَ الْجِبَالِ، وَمَكَايِيْلَ الْبِحَارِ، وَعَدَدَ قَطْرِ الْاَمْطَارِ، وَعَدَدَ وَرَقِ الْاَشْجَارِ، وَعَدَدَ مَا اَظْلَمَ عَلَيْهِ اللَّيْلُ، وَاَشْرَقَ عَلَيْهِ النَّهَارُ، وَلَا تُوَارِيْ مِنْهُ سَمَاءٌ سَمَاءً، وَلَا اَرْضٌ اَرْضًا، وَلَا بَحْرٌ مَا فِيْ قَعْرِهِ، وَلَا جَبَلٌ مَا فِيْ وَعْرِهِ، اِجْعَلْ خَيْرَ عُمُرِيْ آخِرَهُ، وَخَيْرَ عَمَلِيْ خَوَاتِيْمَهُ، وَخَيْرَ اَيَّامِيْ يَوْمَ اَلْقَاكَ فِيْهِ، فَوَكَّلَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ بِالْاَعْرَابِيِّ رَجُلًا فَقَالَ: اِذَا صَلّٰى فَائْتِنِيْ بِهِ، فَلَمَّا صَلّٰى اَتَاهُ، وَقَدْ كَانَ اُهْدِيَ لِرَسُوْلِ اللهِ ﷺ ذَهَبٌ مِنْ بَعْضِ الْمَعَادِنِ، فَلَمَّا اَتَاهُ الْاَعْرَابِيُّ وَهَبَ لَهُ الذَّهَبَ، وَقَالَ: مِمَّنْ اَنْتَ يَا اَعْرَابِيُّ؟ قَالَ: مِنْ بَنِيْ عَامِرِ بْنِ صَعْصَعَةَ يَا رَسُوْلَ اللهِ، قَالَ، هَلْ تَدْرِيْ لِمَ وَهَبْتُ لَكَ الذَّهَبَ؟ قَالَ: لِلرَّحِمِ بَيْنَنَا وَبَيْنَكَ يَا رَسُوْلَ اللهِ، قَالَ: اِنَّ لِلرَّحِمِ حَقًّا، وَلٰكِنْ وَهَبْتُ لَكَ الذَّهَبَ بِحُسْنِ ثَنَائِكَ عَلَى اللهِ عَزَّوَجَلَّ.

رواه الطبراني في الاوسط ورجاله رجال الصحيح غير عبدالله بن محمد بن ابى عبد الرحمن الاذرمي وهو ثقة، مجمع الزوائد ١/٢٤٢

186. हज़रत अनस رضي الله عنه से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ देहात के रहने वाले एक शख़्स के पास से गुज़रे, जो नमाज़ में यूं दुआ मांग रहे थे :

तर्जुमा: ऐ वह ज़ात, जिसको आंखें देख नहीं सकतीं और किसी का ख़्याल व गुमान उस तक पहुंच नहीं सकता और न ही तारीफ़ ब्यान करने वाले उसकी तारीफ़ ब्यान कर सकते हैं और न ज़माने की मुसीबतें उस पर असर अन्दाज़ हो सकती हैं और न उसे ज़माने की आफ़तों का कोई ख़ौफ़ है, (ऐ वह ज़ात) जो पहाड़ों

के वज़न, दरियाओं के पैमाने, बारिशों के क़तरों की तादाद और दरख़्तों के पत्तों की तादाद को जानती है और (ऐ वह ज़ात, जो) उन तमाम चीज़ों को जानती है जिन पर रात का अंधेरा छा जाता है और जिन पर दिन रोशनी डालता है, न उससे एक आसमान दूसरे आसमान को छुपा सकता है और न एक ज़मीन दूसरी ज़मीन को और न समुन्दर उस चीज़ को छुपा सकते हैं जो उनकी तह में हैं और न कोई पहाड़ उन चीज़ों को छुपा सकता है जो उस की सख़्त चट्टानों में हैं, आप मेरी उम्र के आख़िरी हिस्से को सबसे बेहतरीन हिस्सा बना दीजिए और मेरे आख़िरी अ़मल को सबसे बेहतरीन अ़मल बना दीजिए और मेरा बेहतरीन दिन वह बना दीजिए, जिस दिन मेरी आपसे मुलाक़ात हो, यानी मौत का दिन।

रसूलुल्लाह ﷺ ने एक साहब को मुक़र्रर फ़रमाया कि जब यह शख़्स नमाज़ से फ़ारिग़ हो जाएं, तो उन्हें मेरे पास ले आना। चुनांचे वह नमाज़ के बाद रसूलुल्लाह ﷺ की ख़िदमत में हाज़िर हुए। रसूलुल्लाह ﷺ के पास एक खान से कुछ सोना हदिया में आया हुआ था। आपने उन्हें वह सोना हदिया में दिया। फिर उन देहात के रहने वाले शख़्स से पूछा : तुम किस क़बीले के हो? उन्होंने अ़र्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! क़बीला बनू आमिर से हूं। आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : क्या तुम जानते हो कि यह सोना मैंने तुम्हें क्यों हदिया किया है? उन्होंने अ़र्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! इस वजह से कि हमारी आपकी रिश्तादारी है। आपने इर्शाद फ़रमाया : रिश्तेदारी का भी हक़ होता है, लेकिन मैंने तुम्हें सोना इस वजह से हदिया किया कि तुमने बहुत अच्छे अंदाज़ में अल्लाह तआ़ला की तारीफ़ की। (तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

फ़ायदा : नफ़्ल नमाज़ के हर रुक्न में इस तरह की दुआएं पढ़ी जा सकती हैं।

﴿187﴾ عَنْ اَبِیْ بَکْرٍ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللّٰہِ ﷺ یَقُوْلُ: مَامِنْ عَبْدٍ یُذْنِبُ ذَنْبًا فَیُحْسِنُ الطُّھُوْرَ ثُمَّ یَقُوْمُ فَیُصَلِّیْ رَکْعَتَیْنِ، ثُمَّ یَسْتَغْفِرُ اللّٰہَ اِلَّا غَفَرَ اللّٰہُ لَہٗ، ثُمَّ قَرَاَ ھٰذِہِ الْاٰیَۃَ: ﴿وَالَّذِیْنَ اِذَا فَعَلُوْا فَاحِشَۃً اَوْ ظَلَمُوْٓا اَنْفُسَھُمْ﴾ اِلٰی آخِرِ الْاٰیَۃِ

[اٰل عمران:١٣٥] رواہ ابو داؤد، باب فی الاستغفار، رقم:١٥٢١

187. हज़रत अबूबक्र ﷺ फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : जिस शख़्स से कोई गुनाह हो जाए, फिर वह अच्छी तरह वुज़ू करे और उठकर दो रक्अ़त पढ़े, फिर अल्लाह तआ़ला से माफ़ी मांगे तो अल्लाह तआ़ला उसे माफ़ फ़रमा देते हैं। उसके बाद आप ﷺ ने यह आयत तिलावत फ़रमाई : तर्जुमा : और

वे बन्दे (जिनका हाल यह है) कि जब उनसे कोई गुनाह हो जाता है या कोई बुरा काम करके वे अपने ऊपर ज़ुल्म कर बैठते हैं तो जल्द ही उन्हें अल्लाह तआला याद आ जाते हैं, फिर वह अल्लाह तआला से अपने गुनाहों की माफ़ी के तालिब होते हैं, और बात यह भी है कि सिवाए अल्लाह तआला के कौन गुनाहों को माफ़ कर सकता है? और बुरे काम पर वे अड़ते नहीं, और वे यक़ीन रखते हैं (कि तौबा से गुनाह माफ़ हो जाते हैं)। (अबूदाऊद)

﴾188﴿ عَنِ الْحَسَنِ رَحِمَهُ اللهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَا اَذْنَبَ عَبْدٌ ذَنْبًا ثُمَّ تَوَضَّأَ فَاَحْسَنَ الْوُضُوْءَ ثُمَّ خَرَجَ اِلٰى بَرَازٍ مِنَ الْاَرْضِ فَصَلّٰى فِيْهِ رَكْعَتَيْنِ، وَاسْتَغْفَرَ اللهَ مِنْ ذٰلِكَ الذَّنْبِ اِلَّا غَفَرَ اللهُ لَهُ. رواه البيهقي في شعب الايمان ٥/٤٠٣

188. हज़रत हसन रहमतुल्लाहि अलैह रसूलुल्लाह ﷺ का इर्शाद नक़ल फ़रमाते हैं : जिस शख़्स से कोई गुनाह हुआ, फिर उसने अच्छी तरह वुज़ू किया और खुले मैदान में जाकर दो रकअत पढ़कर अल्लाह तआला से उस गुनाह की माफ़ी चाही, तो अल्लाह तआला उसे ज़रूर माफ़ फ़रमा देते हैं। (बैहक़ी)

﴾189﴿ عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: كَانَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ يُعَلِّمُنَا الْاِسْتِخَارَةَ فِي الْاُمُوْرِ كَمَا يُعَلِّمُنَا السُّوْرَةَ مِنَ الْقُرْآنِ، يَقُوْلُ: اِذَا هَمَّ اَحَدُكُمْ بِالْاَمْرِ فَلْيَرْكَعْ رَكْعَتَيْنِ مِنْ غَيْرِ الْفَرِيْضَةِ، ثُمَّ لْيَقُلْ: اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَسْتَخِيْرُكَ بِعِلْمِكَ، وَاَسْتَقْدِرُكَ بِقُدْرَتِكَ وَاَسْاَلُكَ مِنْ فَضْلِكَ الْعَظِيْمِ، فَاِنَّكَ تَقْدِرُ وَلَا اَقْدِرُ، وَتَعْلَمُ وَلَا اَعْلَمُ وَاَنْتَ عَلَّامُ الْغُيُوْبِ، اَللّٰهُمَّ اِنْ كُنْتَ تَعْلَمُ اَنَّ هٰذَا الْاَمْرَ خَيْرٌ لِّيْ فِيْ دِيْنِيْ وَمَعَاشِيْ وَعَاقِبَةِ اَمْرِيْ. اَوْ قَالَ: عَاجِلِ اَمْرِيْ وَآجِلِهٖ. فَاقْدُرْهُ لِيْ وَيَسِّرْهُ لِيْ ثُمَّ بَارِكْ لِيْ فِيْهِ، وَاِنْ كُنْتَ تَعْلَمُ اَنَّ هٰذَا الْاَمْرَ شَرٌّ لِّيْ فِيْ دِيْنِيْ وَمَعَاشِيْ وَعَاقِبَةِ اَمْرِيْ. اَوْ قَالَ: فِيْ عَاجِلِ اَمْرِيْ وَآجِلِهٖ. فَاصْرِفْهُ عَنِّيْ وَاصْرِفْنِيْ عَنْهُ، وَاقْدُرْ لِيَ الْخَيْرَ حَيْثُ كَانَ ثُمَّ اَرْضِنِيْ بِهٖ، قَالَ: وَيُسَمِّيْ حَاجَتَهُ. رواه البخاري، باب ماجاء في التطوع مثنى مثنى، رقم:١١٦٢

189. हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह رضي الله عنه फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ हमें अपने मामलों में इस्तिख़ारा करने का तरीक़ा ऐसे ही एहतमाम से सिखाते थे, जिस एहतमाम से हमें क़ुरआन मजीद की सूरः सिखाते थे। आप ﷺ फ़रमाते थे : जब तुममें से कोई शख़्स किसी काम का इरादा करे (और उसके नतीजे के बारे में

फ़िक्रमंद हो, तो उसको इस तरह इस्तिख़ारा करना चाहिए कि) वह पहले दो नफ़्ल नमाज़ पढ़े उसके बाद इस तरह दुआ करे :

तर्जुमा : या अल्लाह! मैं आपसे आपके इल्म के ज़रिए ख़ैर चाहता हूं, आप की क़ुदरत के ज़रिए क़ुव्वत चाहता हूं और आप के बड़े फ़ज़्ल का आप से सवाल करता हूं, क्योंकि आप तो हर काम की क़ुदरत रखते हैं और मैं किसी भी काम की क़ुदरत नहीं रखता। आप सब कुछ जानते हैं और मैं कुछ नहीं जानता और आप ही तमाम पोशीदा बातों को ख़ूब अच्छी तरह जानने वाले हैं। या अल्लाह! अगर आप के इल्म में यह काम मेरे दीन, मेरी दुनिया और अंजाम के लिहाज़ से मेरे लिए बेहतर हो तो उसको मेरे लिए मुक़द्दर फ़रमा दीजिए और आसान भी फ़रमा दीजिए, फिर इसमें मेरे लिए बरकत भी दे दीजिए। अगर आप के इल्म में यह काम मेरे दीन, मेरी दुनिया और अंजाम के लिहाज़ से मेरे लिए बेहतर न हो, तो इस काम को मुझ से अलग रखिए और मुझे इससे रोक दीजिए और जहां भी जिस काम में भी मेरे लिए बेहतरी हो, वह मुझे नसीब फ़रमा दीजिए, फिर मुझे उस काम से राज़ी और मुतमइन कर दीजिए। (दुआ में दोनों जगह जब 'हाज़ल अम्र' पर पहुंचे तो अपनी ज़रूरत का ध्यान रखे, जिसके लिए इस्तिख़ारा कर रहा है)। (बुख़ारी)

﴾190﴿ عَنْ اَبِی بَكْرَةَ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: خَسَفَتِ الشَّمْسُ عَلٰی عَهْدِ النَّبِيِّ ﷺ فَخَرَجَ يَجُرُّ رِدَاءَهٗ حَتّٰی انْتَهٰی اِلَی الْمَسْجِدِ وَثَابَ النَّاسُ اِلَيْهِ فَصَلّٰی بِهِمْ رَكْعَتَيْنِ، فَانْجَلَتِ الشَّمْسُ فَقَالَ: اِنَّ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ آيَتَانِ مِنْ آيَاتِ اللّٰهِ وَاِنَّهُمَا لَا يَخْسِفَانِ لِمَوْتِ اَحَدٍ، وَاِذَا كَانَ ذٰلِكَ فَصَلُّوْا وَادْعُوْا حَتّٰی يَنْكَشِفَ مَابِكُمْ، وَذٰلِكَ اَنَّ ابْنًا لِلنَّبِيِّ ﷺ مَاتَ يُقَالُ لَهٗ: اِبْرَاهِيْمُ فَقَالَ النَّاسُ فِي ذٰلِكَ

رواه البخاري، باب الصلاة في كسوف القمر، رقم:١٠٦٣

190. हज़रत अबूबक्रः ﵁ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ के ज़माने में सूर्य ग्रहण हुआ। आप अपनी चादर घसीटते हुए (तेज़ी से) मस्जिद में पहुंचे। सहाबा रज़ि० आपके पास जमा हो गए। आप ﷺ ने उन्हें दो रकअत नमाज़ पढ़ाई और ग्रहण भी ख़त्म हो गया। उसके बाद आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : सूरज और चांद अल्लाह तआला की निशानियों में से दो निशानियां हैं। किसी की मौत की वजह से ये ग्रहण नहीं होते (बल्कि ज़मीन व आसमान की दूसरी मख़्लूक़ों की तरह उन पर भी अल्लाह तआला का हुक्म चलता है और उनकी रोशनी व तारीकी अल्लाह तआला के हाथ

में है) इसलिए जब सूरज और चांद ग्रहण हों, तो उस वक़्त तक नमाज़ और दुआ में मशग़ूल रहो, जब तक उनका ग्रहण ख़त्म न हो जाए। चूंकि रसूलुल्लाह ﷺ के साहबज़ादे हज़रत इब्राहीम رضي الله عنه की वफ़ात (इसी दिन) हुई थी और बाज़ लोग यह कहने लगे थे कि ग्रहण उनकी मौत की वजह से हुआ है, इसलिए यह बात रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाई। (बुख़ारी)

﴿191﴾ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ زَيْدٍ الْمَازِنِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ يَقُوْلُ: خَرَجَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ إِلَى الْمُصَلّٰى فَاسْتَسْقٰى، وَحَوَّلَ رِدَاءَهُ حِيْنَ اسْتَقْبَلَ الْقِبْلَةَ.

رواه مسلم، باب كتاب صلاة الاستسقاء، رقم: ٢٠٧٠

191. हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ैद माज़िनी رضي الله عنه फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ बारिश की दुआ मांगने के लिए ईदगाह तशरीफ़ ले गए, और आप ﷺ ने क़िब्ला की तरफ़ रुख़ करके अपनी चादर मुबारक को उल्टा (यह गोया नेक फ़ाल थी कि अल्लाह तआला हमारा हाल इस तरह बदल दें)। (मुस्लिम)

﴿192﴾ عَنْ حُذَيْفَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: كَانَ النَّبِيُّ ﷺ إِذَا حَزَبَهُ أَمْرٌ صَلّٰى.

رواه أبو داود، باب وقت قيام النبي ﷺ من الليل، رقم: ١٣١٩

192. हज़रत हुज़ैफ़ा رضي الله عنه फ़रमाते हैं नबी करीम ﷺ का मामूल मुबारक था कि जब कोई अहम मामला पेश आता, तो आप फ़ौरन नमाज़ में मशग़ूल हो जाते।

(अबूदाऊद)

﴿193﴾ عَنْ مَعْمَرٍ عَنْ رَجُلٍ مِنْ قُرَيْشٍ قَالَ: كَانَ النَّبِيُّ ﷺ إِذَا دَخَلَ عَلٰى أَهْلِهِ بَعْضُ الضِّيْقِ فِي الرِّزْقِ أَمَرَ أَهْلَهُ بِالصَّلٰوةِ ثُمَّ قَرَأَ هٰذِهِ الْآيَةَ ﴿وَأْمُرْ أَهْلَكَ بِالصَّلٰوةِ﴾

اتحاف السادة المتقين عن مصنف عبد الرزاق وعبد بن حميد ٣/١١

193. हज़रत मामर रहमुतल्लाह अलैह एक क़ुरैशी साहब से रिवायत करते हैं कि जब नबी करीम ﷺ के घर वालों पर ख़र्च की कुछ तंगी होती तो आप ﷺ उनको नमाज़ का हुक्म फ़रमाते और फिर यह आयत तिलावत फ़रमाते :

तर्जुमा : अपने घर वालों को नमाज़ का हुक्म दीजिए और ख़ुद भी नमाज़ के पाबंद रहिए। हम आपसे मआश नहीं चाहते, मआश तो आपको हम देंगे, और बेहतर अंजाम तो परहेज़गारी ही का है। (मुसन्निफ़ अब्दुर्रज्ज़ाक, इत्तिहाफ़)

﴿194﴾ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ اَبِيْ اَوْفَى الْاَسْلَمِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: خَرَجَ عَلَيْنَا رَسُوْلُ اللهِ ﷺ فَقَالَ: مَنْ كَانَتْ لَهُ حَاجَةٌ إِلَى اللهِ اَوْ إِلَى اَحَدٍ مِنْ خَلْقِهِ فَلْيَتَوَضَّأْ وَلْيُصَلِّ رَكْعَتَيْنِ ثُمَّ لْيَقُلْ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللهُ الْحَلِيْمُ الْكَرِيْمُ سُبْحَانَ اللهِ رَبِّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ، اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَسْئَلُكَ مُوْجِبَاتِ رَحْمَتِكَ وَعَزَائِمَ مَغْفِرَتِكَ وَالْغَنِيْمَةَ مِنْ كُلِّ بِرٍّ وَالسَّلَامَةَ مِنْ كُلِّ اِثْمٍ، اَسْئَلُكَ اَلَّا تَدَعَ لِيْ ذَنْبًا اِلَّا غَفَرْتَهُ وَلَا هَمًّا اِلَّا فَرَّجْتَهُ وَلَا حَاجَةً هِيَ لَكَ رِضًا اِلَّا قَضَيْتَهَا لِيْ، ثُمَّ يَسْاَلُ اللهَ مِنْ اَمْرِ الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ مَاشَاءَ فَاِنَّهُ يُقَدَّرُ. رواه ابن ماجه، باب ماجاء في صلوة الحاجة، رقم: ١٣٨٤ قال البوصيري: قلت: رواه الترمذي من طريق فائد به دون قوله. ثُمَّ يَسْاَلُ اللهَ مِنْ اَمْرِ الدُّنْيَا الى آخره ورواه الحاكم في المستدرك باختصار وزاد بعد قوله: وَعَزَائِمَ مَغْفِرَتِكَ وَالْعِصْمَةَ مِنْ كُلِّ ذَنْبٍ، وله شاهد من حديث انس رواه الاصبهاني ورواه ابويعلى الموصلي في مسنده من طريق فائد به ..... مصباح الزجاجة ٢٤٦/١

194. हज़रत अब्दुल्लाह बिन अबी औफ़ा अस्लमी ﷺ फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ हमारे पास तशरीफ़ लाए और इर्शाद फ़रमाया : जिस शख़्स को कोई भी ज़रूरत पेश आए जिसका ताल्लुक़ अल्लाह तआला से हो या मख़्लूक़ में किसी से हो तो उसको चाहिए कि वह वुज़ू करे, फिर दो रकअत नमाज़ पढ़े, फिर इस तरह दुआ करे: ''अल्लाह तआला के सिवा कोई माबूद नहीं, वह बड़े हिल्म वाले और बड़े करीम हैं। अल्लाह तआला हर ऐब से पाक हैं अर्शे अज़ीम के मालिक हैं। सब तारीफ़ें अल्लाह तआला के लिए हैं जो तमाम जहानों के रब हैं। या अल्लाह! मैं आपसे उन तमाम चीज़ों का सवाल करता हूं, जो आपकी रहमत को लाज़िम करने वाली हैं और जिन से आपकी मग़फ़िरत फ़रमाना यक़ीनी हो जाता है। मैं आपसे हर नेकी में से हिस्सा लेने का और हर गुनाह से महफ़ूज़ रहने का सवाल करता हूं। मैं आप से इस बात का भी सवाल करता हूं कि आप मेरा कोई गुनाह बाक़ी न छोड़िए जिसको आप बख़्श न दें और न कोई फ़िक्र जिसे आप दूर न फ़रमा दें और न ही कोई ज़रूरत बाक़ी छोड़िए जिसमें आपकी रज़ामंदी हो जिसे आप मेरे लिए पूरा न फ़रमा दें''। इस दुआ के बाद अल्लाह तआला से दुनिया व आख़िरत के बारे में जो चाहे मांगे उसे मिलेगा।

(इब्ने माजा)

﴿195﴾ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ مَسْعُوْدٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: جَاءَ رَجُلٌ اِلَى النَّبِيِّ ﷺ فَقَالَ يَا رَسُوْلَ اللهِ: اِنِّيْ اُرِيْدُ اَنْ اَخْرُجَ اِلَى الْبَحْرَيْنِ فِيْ تِجَارَةٍ فَقَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: صَلِّ رَكْعَتَيْنِ. رواه الطبراني في الكبير ورجاله موثقون، مجمع الزوائد ٥٧٢/٢

195. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद ﷺ फ़रमाते हैं कि एक शख़्स ने नबी करीम ﷺ की ख़िदमत में हाज़िर होकर अ़र्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! मैं बहरैन तिजारत के लिए जाना चाहता हूं। रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : (सफ़र से पहले) दो रकअ़त नफ़्ल पढ़ लेना। (तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴾196﴿ عَنْ اَبِیْ هُرَیْرَةَ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِیِّ ﷺ قَالَ: اِذَا دَخَلْتَ مَنْزِلَكَ فَصَلِّ رَكْعَتَیْنِ تَمْنَعَانِكَ مَدْخَلَ السُّوْءِ، وَاِذَا خَرَجْتَ مِنْ مَنْزِلِكَ فَصَلِّ رَكْعَتَیْنِ تَمْنَعَانِكَ مَخْرَجَ السُّوْءِ. رواه البزار ورجاله موثقون، مجمع الزوائد ٢/٥٧٢

196. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जब तुम घर में दाख़िल हो तो दो रकअ़त नमाज़ पढ़ लिया करो, ये दो रकअ़तें तुम्हें घर में दाख़िल होने के बाद की बुराई से बचा लेंगी। इसी तरह घर से निकलने से पहले दो रकअ़त पढ़ लिया करो। ये दो रकअ़तें तुम्हें घर से बाहर निकलने के बाद की बुराई से बचा लेंगी। (बज़्ज़ार, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴾197﴿ عَنْ اُبَیِّ بْنِ كَعْبٍ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ لَهٗ: كَیْفَ تَقْرَاُ فِی الصَّلَاةِ، فَقَرَاْتُ عَلَیْهِ اُمَّ الْقُرْآنِ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: وَالَّذِیْ نَفْسِیْ بِیَدِهٖ مَا اَنْزَلَ اللّٰهُ فِی التَّوْرَاةِ وَلَا فِی الْاِنْجِیْلِ وَلَا فِی الزَّبُوْرِ وَلَا فِی الْقُرْآنِ مِثْلَهَا وَاِنَّهَا لَسَبْعُ الْمَثَانِیْ.

رواه احمد، الفتح الربانی ١٨/٦٥

197. हज़रत उबई बिन काब ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने मुझसे इर्शाद फ़रमाया : तुम नमाज़ के शुरू में क्या पढ़ते हो? हज़रत काब रज़ि० फ़रमाते हैं कि मैंने सूरः फ़ातिहा पढ़ी। रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : क़सम है उस ज़ात की, जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है, अल्लाह तआ़ला ने न तौरात, न इंजील, न ज़बूर और न बाक़ी क़ुरआन में इस जैसी कोई सूरः उतारी है और यही वह (सूरः फ़ातिहा की) सात आयतें हैं जो हर नमाज़ की हर रकअ़त में दुहराई जाती हैं।

(मुस्नद अहमद, फ़त्हुर्रब्बानी)

﴾198﴿ عَنْ اَبِیْ هُرَیْرَةَ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللّٰهِ ﷺ یَقُوْلُ: قَالَ اللّٰهُ تَعَالٰی: قَسَمْتُ الصَّلَاةَ بَیْنِیْ وَبَیْنَ عَبْدِیْ نِصْفَیْنِ، وَلِعَبْدِیْ مَاسَاَلَ، فَاِذَا قَالَ الْعَبْدُ: ﴿اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ﴾ قَالَ اللّٰهُ تَعَالٰی: حَمِدَنِیْ عَبْدِیْ، وَاِذَا قَالَ: ﴿اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ﴾ قَالَ اللّٰهُ تَعَالٰی: اَثْنٰی عَلَیَّ عَبْدِیْ، فَاِذَا قَالَ: ﴿مٰلِكِ یَوْمِ الدِّیْنِ﴾ قَالَ: مَجَّدَنِیْ

عَبْدِی. وَقَالَ: مَرَّةً: فَوَّضَ اِلَیَّ عَبْدِی. فَاِذَا قَالَ: ﴿اِیَّاكَ نَعْبُدُ وَاِیَّاكَ نَسْتَعِیْنُ﴾ قَالَ: هٰذَا بَیْنِی وَبَیْنَ عَبْدِی وَلِعَبْدِی مَا سَاَلَ، فَاِذَا قَالَ: ﴿اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِیْمَ صِرَاطَ الَّذِیْنَ اَنْعَمْتَ عَلَیْهِمْ غَیْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَیْهِمْ وَلَا الضَّآلِّیْنَ﴾ قَالَ: هٰذَا لِعَبْدِی وَلِعَبْدِی مَاسَاَلَ.

وهو جزء من الحديث، رواه مسلم، باب وجوب قراءة الفاتحة في كل ركعة.....،رقم:٨٧٨

198. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : अल्लाह तआला फ़रमाते हैं, मैंने सूरः फ़ातिहा को अपने और अपने बन्दे के दर्मियान आधा-आधा तक़सीम कर दिया है (पहली आधी सूरः का ताल्लुक़ मुझसे है और दूसरी आधी सूरः का ताल्लुक़ मेरे बन्दे से है) और मेरे बन्दे को वह मिलेगा जो वह मांगेगा। जब बन्दा कहता है **'अल-हम्दु लिल्लाहि रब्बिल आलमीन'** (सब तारीफ़ें अल्लाह तआला के लिए हैं जो तमाम जहानों के रब हैं) तो अल्लाह तआला इर्शाद फ़रमाते हैं : मेरे बन्दे ने मेरी ख़ूबी ब्यान की। जब बन्दा कहता है **'अर-रहमानिर्रहीम'** (जो बड़े मेहरबान निहायत रहम वाले हैं), तो अल्लाह तआला फ़रमाते हैं : बन्दे ने मेरी तारीफ़ की। जब बन्दा कहता है **'मालिकियौमिद्दीन'** (जो जज़ा और सज़ा के दिन के मालिक हैं) तो अल्लाह इर्शाद फ़रमाते हैं : मेरे बन्दे ने मेरी बड़ाई ब्यान की। जब बन्दा कहता है **'ईय्या-क नअ्बुदु व ईय्या-क नस्तीईन'** (हम आप ही की इबादत करते हैं और आप ही से मदद मांगते हैं) तो अल्लाह तआला इर्शाद फ़रमाते हैं : ये मेरे और मेरे बन्दे के दरम्यान है यानी इबादत करना मेरे लिए है और मदद मांगना बन्दे की ज़रूरत है और मेरा बन्दा जो मांगेगा वह उसे दिया जाएगा। जब बन्दा कहता है **'इह्दिनस्सिरातल मुस्तक़ीम', सिरातल्लज़ी-न अन-अम-त अ़लैहिम ग़ैरिल मग़्ज़ूबि अ़लैहिमव लज़्ज़ाल्लीन०'** (हमें सीधे रास्ते पर चला दीजिए, उन लोगों के रास्ते पर, जिन लोगों पर आपने फ़ज़्ल फ़रमाया है, उन पर न आपका ग़ज़ब नाज़िल हुआ और न वह गुमराह हुए) तो अल्लाह तआला फ़रमाते हैं : सूरः का यह हिस्सा ख़ालिस मेरे बन्दे के लिए है और मेरे बन्दे ने जो मांगा, वह उसे मिल गया। (मुस्लिम)

﴿199﴾ عَنْ اَبِی هُرَیْرَةَ رَضِیَ اللهُ عَنْهُ اَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: اِذَا قَالَ الْاِمَامُ: ﴿غَیْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَیْهِمْ وَلَا الضَّآلِّیْنَ﴾ فَقُوْلُوْا: آمِیْنَ، فَاِنَّهُ مَنْ وَافَقَ قَوْلُهُ قَوْلَ الْمَلَائِكَةِ غُفِرَلَهُ مَاتَقَدَّمَ مِنْ ذَنْبِهِ.

رواه البخاري، باب جهر المأموم بالتأمين رقم:٧٨٢

199. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जब इमाम (सूरः फ़ातिहा के आख़िर में) **'ग़ैरिल मग़्ज़ूबि अ़लैहिम व लज़्ज़ाल्लीन०'**

कहे तो 'आमीन' कहो, इसलिए कि जिस शख़्स की आमीन फ़रिश्तों की आमीन के साथ मिल जाए, यानी दोनों आमीन के वक़्त एक हों तो उसके पिछले तमाम गुनाह माफ़ हो जाते हैं। (बुख़ारी)

﴿200﴾ عَنْ اَبِیْ مُوْسَی الْاَشْعَرِیِّ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ عَنْ رَسُوْلِ اللّٰہِ ﷺ (فِیْ حَدِیْثٍ طَوِیْلٍ): وَاِذَا قَالَ: غَیْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَیْہِمْ وَلَا الضَّآلِّیْنَ، فَقُوْلُوْا آمِیْنَ، یُجِبْکُمُ اللّٰہُ.

رواه مسلم، باب التشهد في الصلاة، رقم: ٩٠٤

200. हज़रत अबू मूसा अशअरी ﷺ रसूलुल्लाह ﷺ का इर्शाद नक़ल करते हैं कि जब इमाम 'ग़ैरिल मग़ज़ूबि अलैहिम व लज़्ज़ाल्लीन०' कहे तो आमीन कहो, अल्लाह तआला तुम्हारी दुआ क़ुबूल फ़रमाएंगे। (मुस्लिम)

﴿201﴾ عَنْ اَبِیْ ہُرَیْرَۃَ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰہِ ﷺ: اَیُحِبُّ اَحَدُکُمْ اِذَا رَجَعَ اِلٰی اَھْلِہٖ اَنْ یَّجِدَ فِیْہِ ثَلَاثَ خَلِفَاتٍ عِظَامٍ سِمَانٍ؟ قُلْنَا: نَعَمْ، قَالَ: فَثَلَاثُ آیَاتٍ یَقْرَأُ بِھِنَّ اَحَدُکُمْ فِیْ صَلَاتِہٖ، خَیْرٌ لَّہٗ مِنْ ثَلَاثِ خَلِفَاتٍ عِظَامٍ سِمَانٍ.

رواه مسلم، باب فضل قراءة القرآن..... رقم: ١٨٧٢

201. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : क्या तुममें से किसी को यह पसन्द है कि जब वह घर जाए, तो वहां तीन हामिला ऊंटनियां मौजूद हों, जो बड़ी और मोटी हों? हमने अर्ज़ किया, यक़ीनन। आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जिन तीन आयतों को तुममें से कोई शख़्स नमाज़ में पढ़ता है, वह तीन बड़ी और मोटी ऊंटनियों से बेहतर हैं। (मुस्लिम)

फ़ायदा : चूंकि अरबों के नज़दीक ऊंट निहायत पसन्दीदा चीज़ थी ख़ास तौर से वह ऊंटनी जिसका कोहान ख़ूब गोश्त से भरा हो इसलिए आप ﷺ ने ऊंट की मिसाल दी और फ़रमाया कि क़ुरआन करीम का पढ़ना इस पसंदीदा माल से भी बेहतर है।

﴿202﴾ عَنْ اَبِیْ ذَرٍّ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللّٰہِ ﷺ یَقُوْلُ: مَنْ رَکَعَ رَکْعَۃً اَوْ سَجَدَ سَجْدَۃً، رُفِعَ بِھَا دَرَجَۃً وَحُطَّ عَنْہُ بِھَا خَطِیْئَۃً.

رواه كله احمد والبزار بنحوه باسانيد وبعضها رجاله رجال الصحيح ورواه الطبراني في الاوسط، مجمع الزوائد ٢/٥١٥

202. हज़रत अबूज़र ﷺ फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : जो शख़्स एक रुकूअ़ करता है या एक सज्दा करता है, उसका एक दर्जा

बुलन्द कर दिया जाता है और उसकी एक गलती माफ़ कर दी जाती है।

(मुस्नद अहमद, बज़्ज़ार, तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿203﴾ عَنْ رِفَاعَةَ بْنِ رَافِعٍ الزُّرَقِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: كُنَّا نُصَلِّي يَوْمًا وَرَاءَ النَّبِيِّ ﷺ فَلَمَّا رَفَعَ رَأْسَهُ مِنَ الرَّكْعَةِ قَالَ: سَمِعَ اللهُ لِمَنْ حَمِدَهُ، قَالَ رَجُلٌ: رَبَّنَا وَلَكَ الْحَمْدُ حَمْدًا كَثِيْرًا طَيِّبًا مُبَارَكًا فِيْهِ، فَلَمَّا انْصَرَفَ قَالَ: مَنِ الْمُتَكَلِّمُ؟ قَالَ: أَنَا، قَالَ: رَأَيْتُ بِضْعَةً وَّثَلَاثِيْنَ مَلَكًا يَبْتَدِرُوْنَهَا، أَيُّهُمْ يَكْتُبُهَا أَوَّلُ. رواه البخاري، كتاب الاذان، رقم: ٧٩٩

203. हज़रत रिफ़ाआ बिन राफ़ेअ़ ज़ुरक़ी ﷺ फ़रमाते हैं कि हम लोग एक दिन रसूलुल्लाह ﷺ के पीछे नमाज़ पढ़ रहे थे। जब आप ﷺ ने रुकूअ़ से सर उठाया तो फ़रमाया ''سَمِعَ اللهُ لِمَنْ حَمِدَهُ'' (समिअ़ल्लाहु लिमन हमिदः) इस पर एक शख़्स ने कहा ''رَبَّنَا وَلَكَ الْحَمْدُ حَمْدًا كَثِيْرًا طَيِّبًا مُبَارَكًا فِيْهِ'' (रब्बना लकल हम्द। हम्दन कसीरन तैयिबन मुबारकन फ़ीः)। आप ﷺ ने जब नमाज़ ख़त्म फ़रमाई, तो दरयाफ़्त फ़रमाया, किसने ये कलिमात कहे थे? उस शख़्स ने अ़र्ज़ किया, मैंने। आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : मैंने तीस से कुछ ज़ाइद फ़रिश्ते देखे, हर एक उन कलिमों का सवाब पहले लिखने में दूसरे से आगे बढ़ रहा था। (बुख़ारी)

﴿204﴾ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: إِذَا قَالَ الْإِمَامُ: سَمِعَ اللهُ لِمَنْ حَمِدَهُ، فَقُوْلُوْا: اَللّٰهُمَّ! رَبَّنَا لَكَ الْحَمْدُ، فَإِنَّهُ مَنْ وَافَقَ قَوْلُهُ قَوْلَ الْمَلَائِكَةِ غُفِرَ لَهُ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْبِهِ. رواه مسلم، باب التسميع والتحميد والتامين، رقم: ٩١٣

204. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जब इमाम (रुकूअ़ से उठते हुए) (समिअ़ल्लाहु लिमन हमिदः) कहे, तो तुम (अल्लाहुम-म रब्बना लकल हम्द) कहो। जिसका यह कहना फ़रिश्तों के कहने के साथ मिल जाता है उसके पिछले सारे गुनाह माफ़ हो जाते हैं। (मुस्लिम)

﴿205﴾ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: أَقْرَبُ مَا يَكُوْنُ الْعَبْدُ مِنْ رَبِّهِ وَهُوَ سَاجِدٌ، فَأَكْثِرُوا الدُّعَاءَ. رواه مسلم، باب ما يقال في الركوع والسجود، رقم: ١٠٨٣

205. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : बन्दा नमाज़ के दौरान सज्दे की हालत में अपने रब के सबसे ज़्यादा क़रीब होता है, लिहाज़ा (इस हालत में) ख़ूब दुआएं किया करो। (मुस्लिम)

फ़ायदा : नफ़्ल नमाज़ों के सज्दों में ख़ास तौर पर दुआओं का एहतमाम करना चाहिए।

﴾206﴿ عَنْ عُبَادَةَ بْنِ الصَّامِتِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّهُ سَمِعَ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: مَا مِنْ عَبْدٍ يَسْجُدُ لِلّٰهِ سَجْدَةً إِلَّا كَتَبَ اللهُ لَهُ بِهَا حَسَنَةً، وَمَحَا عَنْهُ بِهَا سَيِّئَةً، وَرَفَعَ لَهُ بِهَا دَرَجَةً فَاسْتَكْثِرُوا مِنَ السُّجُوْدِ.

رواه ابن ماجه، باب ماجاء في كثرة السجود، رقم: ١٤٢٤

206. हज़रत उबादा बिन सामित ﷺ से रिवायत है कि उन्होंने नबी करीम ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : जो बन्दा भी अल्लाह तआला के लिए सज्दा करता है, अल्लाह तआला उसकी वजह से ज़रूर एक नेकी लिख देते हैं, एक गुनाह माफ़ फ़रमा देते हैं और एक दर्जा बुलन्द कर देते हैं। लिहाज़ा ख़ूब कसरत से सज्दा किया करो, यानी नमाज़ पढ़ा करो। (इब्ने माजा)

﴾207﴿ عَنْ أَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: إِذَا قَرَأَ ابْنُ آدَمَ السَّجْدَةَ فَسَجَدَ، اِعْتَزَلَ الشَّيْطَانُ يَبْكِيْ، يَقُوْلُ: يَاوَيْلِيْ! أُمِرَ ابْنُ آدَمَ بِالسُّجُوْدِ فَسَجَدَ فَلَهُ الْجَنَّةُ، وَأُمِرْتُ بِالسُّجُوْدِ فَأَبَيْتُ فَلِيَ النَّارُ.

رواه مسلم، باب بيان اطلاق اسم الكفر ...، رقم: ٢٤٤

207. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जब इब्ने आदम सज्दा की आयत तिलावत करके सज्दा कर लेता है, तो शैतान रोता हुआ एक तरफ़ हट जाता है और कहता है, हाए अफ़सोस! इब्ने आदम को सज्दा करने का हुक्म दिया गया और उसने सज्दा किया तो वह जन्नत का मुस्तहिक़ हो गया और मुझे सज्दा करने का हुक्म दिया गया और मैंने सज्दे से इंकार किया तो मैं जहन्नम का मुस्तहिक़ हो गया। (मुस्लिम)

﴾208﴿ عَنْ أَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنْ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ (فِيْ حَدِيْثٍ طَوِيْلٍ): إِذَا فَرَغَ اللهُ مِنَ الْقَضَاءِ بَيْنَ الْعِبَادِ، وَأَرَادَ أَنْ يُخْرِجَ بِرَحْمَتِهِ مَنْ أَرَادَ مِنْ أَهْلِ النَّارِ، أَمَرَ الْمَلَائِكَةَ أَنْ يُخْرِجُوا مِنَ النَّارِ مَنْ كَانَ لَا يُشْرِكُ بِاللهِ شَيْئًا. مِمَّنْ أَرَادَ اللهُ تَعَالَى أَنْ يَرْحَمَهُ. مِمَّنْ يَقُوْلُ: لَا إِلٰهَ إِلَّا اللهُ، فَيَعْرِفُوْنَهُمْ فِي النَّارِ، يَعْرِفُوْنَهُمْ بِأَثَرِ السُّجُوْدِ. تَأْكُلُ النَّارُ مِنِ ابْنِ آدَمَ إِلَّا أَثَرَ السُّجُوْدِ. حَرَّمَ اللهُ عَلَى النَّارِ أَنْ تَأْكُلَ أَثَرَ السُّجُوْدِ، فَيَخْرُجُوْنَ مِنَ النَّارِ

رواه مسلم، باب معرفة طريق الرؤية، رقم: ٤٥١

208. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जब अल्लाह तआ़ला बन्दों के फ़ैसले से फ़ारिग़ हो जाएंगे और यह इरादा फ़रमाएंगे कि अपनी रहमत से जिनको चाहें दोज़ख़ से निकाल लें, तो फ़रिश्तों को हुक्म फ़रमाएंगे कि जिन लोगों ने दुनिया में शिर्क न किया हो और ला इला-ह इल्लल्लाह कहा हो, उन्हें दोज़ख़ की आग से निकाल लें। फ़रिश्ते उन लोगों को सज्दे के निशानों की वजह से पहचान लेंगे। आग सज्दों के निशानों के अलावा तमाम जिस्म को जला देगी, इसलिए कि अल्लाह तआ़ला ने दोज़ख़ की आग पर सज्दा के निशानों को जलाना हराम कर दिया है और ये लोग (जिनके बारे में फ़रिश्तों को हुक्म दिया गया था) जहन्नम की आग से निकाल लिए जाएंगे। (मुस्लिम)

फ़ायदा : सज्दा के निशानों से मुराद वे सात आज़ा हैं, जिन पर इंसान सज्दा करता है पेशानी, नाक, दोनों हाथ, दोनों घुटने, दोनों पैर। (नव्वी)

﴿209﴾ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: كَانَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ يُعَلِّمُنَا التَّشَهُّدَ كَمَا يُعَلِّمُنَا السُّوْرَةَ مِنَ الْقُرْآنِ. رواه مسلم، باب التشهد في الصلاة، رقم:٩٠٢

209. हज़रत इब्ने अ़ब्बास ﷺ फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ हमें तशहहुद इस तरह सिखाते थे, जिस तरह क़ुरआन करीम की कोई सूरः सिखाते थे। (मुस्लिम)

﴿210﴾ عَنْ خُفَافِ بْنِ إِيْمَاءَ بْنِ رَحَضَةَ الْغِفَارِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: كَانَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ إِذَا جَلَسَ فِي آخِرِ صَلَاتِهِ يُشِيْرُ بِإِصْبَعِهِ السَّبَّابَةِ، وَكَانَ الْمُشْرِكُوْنَ يَقُوْلُوْنَ يَسْحَرُ بِهَا، وَكَذَبُوْا وَلٰكِنَّهُ التَّوْحِيْدُ.

رواه احمد مطولا، والطبراني في الكبير ورجاله ثقات، مجمع الزوائد ٣٣٣/٢

210. हज़रत ख़ुफ़ाफ़ बिन ईमा ﷺ फ़रमाते हैं कि नबी करीम जब नमाज़ के आख़िर में यानी क़अ़दा में बैठते, तो अपनी शहादत की उंगली मुबारक से इशारा फ़रमाते। मुश्रिकीन कहते थे यह इस इशारा से (اَلْعِيَاذُ بِاللهِ) जादू करते हैं, हालांकि वे झूठ बोलते थे बल्कि रसूलुल्लाह ﷺ इससे तौहीद का इशारा फ़रमाते थे, यानी यह अल्लाह तआ़ला के एक होने का इशारा है। (मुस्नद अहमद, तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿211﴾ عَنْ نَافِعٍ رَحِمَهُ اللهُ قَالَ: كَانَ عَبْدُ اللهِ بْنُ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا إِذَا جَلَسَ فِي الصَّلَاةِ وَضَعَ يَدَيْهِ عَلَى رُكْبَتَيْهِ وَأَشَارَ بِإِصْبَعِهِ وَأَتْبَعَهَا بَصَرَهُ ثُمَّ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: لَهِيَ أَشَدُّ عَلَى الشَّيْطَانِ مِنَ الْحَدِيْدِ يَعْنِي السَّبَّابَةَ. رواه احمد ١١٩/٢

211. हज़रत नाफ़ेअ् रहमतुल्लाह अ़लैह फ़रमाते हैं कि हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर ﷺ जब नमाज़ (के क़अ्दा) में बैठे, तो अपने दोनों हाथ अपने दोनों घुटनों पर रखे और (शहादत की) उंगली से इशारा फ़रमाया और निगाह उंगली पर रखी। फिर (नमाज़ के बाद) फ़रमाया : रसूलुल्लाह ﷺ का इर्शाद है यह (शहादत की उंगली) शैतान पर लोहे से ज़्यादा सख़्त है, यानी तशह्हुद की हालत में शहादत की उंगली से अल्लाह तआ़ला के एक होने का इशारा करना शैतान पर नेज़े वग़ैरह फेंकने से भी ज़्यादा सख़्त है। (मुस्नद अहमद)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

ख़ुशूअ़ व ख़ुज़ूअ़

क़ुरआनी आयतें

قَالَ اللهُ تَعَالٰى: ﴿حَافِظُوْا عَلَى الصَّلَوٰتِ وَالصَّلٰوةِ الْوُسْطٰى ۚ وَقُوْمُوْا لِلّٰهِ قٰنِتِيْنَ﴾

[البقرة:٢٣٨]

अल्लाह तआ़ला का इर्शाद है : तमाम नमाज़ों की और ख़ास तौर पर दर्मियान वाली नमाज़ यानी अ़स्र की पाबंदी किया करो और अल्लाह तआ़ला के सामने बाअदब और नियाज़मन्द होकर खड़े रहा करो। (बक़रः 238)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿وَاسْتَعِيْنُوْا بِالصَّبْرِ وَالصَّلٰوةِ ۗ وَاِنَّهَا لَكَبِيْرَةٌ اِلَّا عَلَى الْخٰشِعِيْنَ﴾

[البقرة: ٤٥]

अल्लाह तआ़ला का इर्शाद है : सब्र और नमाज़ के ज़रिए से मदद लिया करो। बेशक वह नमाज़ दुश्वार ज़रूर है, मगर जिनके दिलों में ख़ुशूअ़ है, उन पर कुछ भी दुश्वार नहीं। (बक़रः 45)

फ़ायदा : सब्र यह है कि इंसान अपने आपको नफ़्सानी ख़्वाहिशात से रोके और अल्लाह तआ़ला के तमाम अहकाम पूरे करे, नीज़ तकलीफ़ों को बरदाश्त करना भी सब्र है। (कशफ़ुर्रहमान)

आयत शरीफ़ा में दीन पर अ़मल करने के लिए सब्र और नमाज़ के ज़रिए से मदद का हुक्म दिया गया है। (फ़त्हुलमुलहिम)

وَقَالَ تَعَالَىٰ: ﴿قَدْ أَفْلَحَ الْمُؤْمِنُونَ ۝ الَّذِينَ هُمْ فِي صَلَاتِهِمْ خَاشِعُونَ﴾

[المؤمنون: ۲،۱]

अल्लाह तआ़ला का इर्शाद है : यक़ीनन वे ईमान वाले कामयाब हो गए, जो अपनी नमाज़ में ख़ुशूअ़-ख़ुज़ूअ़ करने वाले हैं। (मूमिनून : 1)

नबी ﷺ की हदीसें

﴿212﴾ عَنْ عُثْمَانَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللّٰهِ ﷺ يَقُوْلُ: مَا مِنِ امْرِئٍ مُسْلِمٍ تَحْضُرُهُ صَلَاةٌ مَكْتُوْبَةٌ، فَيُحْسِنُ وُضُوْءَ هَا وَخُشُوْعَهَا وَرُكُوْعَهَا، إِلَّا كَانَتْ كَفَّارَةً لِمَا قَبْلَهَا مِنَ الذُّنُوْبِ مَالَمْ يُؤْتِ كَبِيْرَةً، وَذٰلِكَ الدَّهْرَ كُلَّهُ.

رواه مسلم، باب فضل الوضوء......صحيح مسلم ۲۰٦/۱ طبع داراحياء التراث العربي

212. हज़रत उ़स्मान रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : जो मुसलमान भी फ़र्ज़ नमाज़ का वक़्त आने पर उसके लिए अच्छी तरह वुज़ू करता है, फिर ख़ूब ख़ुशूअ़ के साथ नमाज़ पढ़ता है, जिसमें रुकूअ़ भी अच्छी तरह करता है तो जब तक कोई कबीरा गुनाह न करे, यह नमाज़ उसके लिए पिछले गुनाहों का कफ़्फ़ारा बन जाती है और नमाज़ की यह फ़ज़ीलत उसको हमेशा हासिल होती रहेगी। (मुस्लिम)

फ़ायदा : नमाज़ का ख़ुशूअ़ यह है कि दिल में अल्लाह तआ़ला की अ़ज़मत और ख़ौफ़ हो और आज़ा में सुकून हो। और ख़ुशूअ़ में यह बात भी शामिल है कि क़ियाम की हालत में निगाह सज्दा की जगह पर, रुकूअ़ में पैरों की उंगलियों की तरफ़, सज्दे में नाक पर और बैठने की हालत में गोद पर हो। (ब्यानुल क़ुरआन, शरह सुनन अबी दाऊद लिलऐनी)

﴿213﴾ عَنْ زَيْدِ بْنِ خَالِدٍ الْجُهَنِيِّ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ: مَنْ تَوَضَّأَ فَأَحْسَنَ وُضُوْءَهُ، ثُمَّ صَلّٰى رَكْعَتَيْنِ لَا يَسْهُوْ فِيْهِمَا غُفِرَ لَهُ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْبِهِ.

رواه ابوداؤد، باب كراهية الوسوسة ......رقم: ۹۰۵

213. हज़रत ज़ैद बिन ख़ालिद जुहनी ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स अच्छी तरह वुज़ू करता है, फिर दो रकअ़त इस तरह पढ़ता है कि उसमें कुछ भूलता नहीं, यानी अल्लाह तआ़ला की तरफ़ पूरी तरह मुतवज्जह रहता है, तो उसके पिछले सारे गुनाह माफ़ हो जाते हैं। (अबूदाऊद)

﴿214﴾ عَنْ عُقْبَةَ بْنِ عَامِرٍ الْجُهَنِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: مَامِنْ مُسْلِمٍ يَتَوَضَّأُ فَيُسْبِغُ الْوُضُوْءَ، ثُمَّ يَقُوْمُ فِيْ صَلَاتِهِ فَيَعْلَمُ مَا يَقُوْلُ إِلَّا انْفَتَلَ كَيَوْمٍ وَلَدَتْهُ أُمُّهُ مِنَ الْخَطَايَا لَيْسَ عَلَيْهِ ذَنْبٌ. (الحديث) رواه الحاكم وقال: هذا حديث صحيح وله طرق عن ابى اسحاق ولم يخرجاه ووافقه الذهبى ٢/٣٩٩

214. हज़रत उ़क़्बा बिन आ़मिर जुहनी ﷺ नबी करीम ﷺ का इर्शाद नक़ल करते हैं कि जो मुसलमान भी कामिल वुज़ू करता है, फिर अपनी नमाज़ में इस तरह ध्यान से खड़ा होता है कि उसे मालूम हो कि वह क्या पढ़ रहा है, तो नमाज़ से इस हाल में फ़ारिग़ होता है कि उसपर कोई गुनाह नहीं होता जैसे उस दिन था, जिस दिन को उसकी मां ने जना था। (मुस्तदरक हाकिम)

﴿215﴾ عَنْ حُمْرَانَ مَوْلَى عُثْمَانَ أَنَّ عُثْمَانَ بْنَ عَفَّانَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ دَعَا بِوَضُوْءٍ فَتَوَضَّأَ، فَغَسَلَ كَفَّيْهِ ثَلَاثَ مَرَّاتٍ، ثُمَّ مَضْمَضَ وَاسْتَنْثَرَ، ثُمَّ غَسَلَ وَجْهَهُ ثَلَاثَ مَرَّاتٍ، ثُمَّ غَسَلَ يَدَهُ الْيُمْنَى إِلَى الْمِرْفَقِ ثَلَاثَ مَرَّاتٍ، ثُمَّ غَسَلَ يَدَهُ الْيُسْرَى مِثْلَ ذٰلِكَ، ثُمَّ مَسَحَ بِرَأْسِهِ، ثُمَّ غَسَلَ رِجْلَهُ الْيُمْنَى إِلَى الْكَعْبَيْنِ ثَلَاثَ مَرَّاتٍ ثُمَّ غَسَلَ الْيُسْرَى مِثْلَ ذٰلِكَ ثُمَّ قَالَ: رَأَيْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ تَوَضَّأَ نَحْوَ وُضُوْئِيْ هٰذَا، ثُمَّ قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَنْ تَوَضَّأَ نَحْوَ وُضُوْئِيْ هٰذَا، ثُمَّ قَامَ فَرَكَعَ رَكْعَتَيْنِ، لَا يُحَدِّثُ فِيْهِمَا نَفْسَهُ، غُفِرَ لَهُ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْبِهِ قَالَ ابْنُ شِهَابٍ: وَكَانَ عُلَمَاؤُنَا يَقُوْلُوْنَ: هٰذَا الْوُضُوْءُ أَسْبَغُ مَا يَتَوَضَّأُ بِهِ أَحَدٌ لِلصَّلَاةِ. رواه مسلم، باب صفة الوضوء وكماله، رقم: ٥٣٨

215. हज़रत हुमरान रहमतुल्लाह अ़लैह जो हज़रत उस्मान ﷺ के आज़ाद कर्दा ग़ुलाम हैं, ब्यान करते हैं कि हज़रत उ़स्मान बिन अफ़्फ़ान ﷺ ने वुज़ू के लिए पानी मंगवाया और वुज़ू करना शुरू किया। पहले अपने हाथों को (गट्टों तक) तीन मर्तबा धोया, फिर कुल्ली की और नाक साफ़ की, फिर अपने चेहरे को तीन मर्तबा धोया, फिर अपने दाएं हाथ को कुहनी तक तीन मर्तबा धोया, फिर बाएं हाथ को भी इसी तरह तीन मर्तबा धोया, फिर सर का मसह किया, फिर दाएं पैर को टख़नों तक तीन

मर्तबा धोया, फिर बाएं पैर को भी इसी तरह तीन मर्तबा धोया फिर फ़रमाया : जिस तरह मैंने वुज़ू किया है उसी तरह मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को वुज़ू करते देखा है। वुज़ू करने के बाद रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया था : जो शख़्स मेरे इस तरीक़े के मुताबिक़ वुज़ू करता है, फिर दो रकअ़त नमाज़ इस तरह पढ़ता है कि दिल में किसी चीज़ का ख़्याल नहीं लाता, तो उसके पिछले तमाम गुनाह माफ़ कर दिए जाते हैं। हज़रत इब्ने शिहाब रह० ने फ़रमाया : हमारे उलमा फ़रमाते हैं कि यह नमाज़ के लिए कामिलतरीन वुज़ू है। (मुस्लिम)

﴿216﴾ عَنْ أَبِي الدَّرْدَاءِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: مَنْ تَوَضَّأَ فَأَحْسَنَ الْوُضُوْءَ، ثُمَّ قَامَ فَصَلَّى رَكْعَتَيْنِ أَوْ أَرْبَعًا. شَكَّ سَهْلٌ. يُحْسِنُ فِيْهِمَا الرُّكُوْعَ وَالْخُشُوْعَ، ثُمَّ اسْتَغْفَرَ اللهَ غَفَرَلَهُ. رواه احمد واسناده حسن، مجمع الزوائد ٢/٥٦٤

216. हज़रत अबुद्दर्दा ؓ फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : जो शख़्स अच्छी तरह वुज़ू करता है, फिर दो रकअ़त पढ़ता है, या चार रकअ़त, उनमें अच्छी तरह रुकूअ़ करता है ख़ुशूअ़ से भी पढ़ता है, फिर अल्लाह तआ़ला से इस्तग़फ़ार करता है, तो उसकी मग़्फ़िरत हो जाती है।

(मुस्नद अहमद, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿217﴾ عَنْ عُقْبَةَ بْنِ عَامِرٍ الْجُهَنِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: مَامِنْ أَحَدٍ يَتَوَضَّأُ فَيُحْسِنُ الْوُضُوْءَ وَيُصَلِّيْ رَكْعَتَيْنِ يُقْبِلُ بِقَلْبِهِ وَوَجْهِهِ عَلَيْهِمَا إِلَّا وَجَبَتْ لَهُ الْجَنَّةُ.

رواه ابو داؤد، باب كراهية الوسوسة......، رقم: ٩٠٦

217. हज़रत उक़्बा बिन आ़मिर जुहनी ؓ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स भी अच्छी तरह वुज़ू करता है, फिर दो रकअ़त इस तरह पढ़ता है कि दिल नमाज़ की तरफ़ मुतवज्जह रहे और आज़ा में भी सुकून हो, तो उसके लिए यक़ीनन जन्नत वाजिब हो जाती है। (अबूदाऊद)

﴿218﴾ عَنْ جَابِرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: جَاءَ رَجُلٌ إِلَى رَسُوْلِ اللهِ ﷺ فَقَالَ: يَا رَسُوْلَ اللهِ! أَيُّ الصَّلَاةِ أَفْضَلُ؟ قَالَ: طُوْلُ الْقُنُوْتِ. رواه ابن حبان، قال المحقق: اسناده صحيح ٥/٥١

218. हज़रत जाबिर ؓ फ़रमाते हैं कि एक शख़्स रसूलुल्लाह ﷺ की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! कौन-सी नमाज़ सबसे अफ़ज़ल है? इर्शाद फ़रमाया : जिस नमाज़ में क़ियाम लम्बा हो। (इब्ने हिब्बान)

﴾219﴿ عَنْ مُغِيْرَةَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: قَامَ النَّبِيُّ ﷺ حَتّٰى تَوَرَّمَتْ قَدَمَاهُ فَقِيْلَ لَهُ: غَفَرَ اللّٰهُ لَكَ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْبِكَ وَمَا تَأَخَّرَ، قَالَ: أَفَلَا أَكُوْنُ عَبْدًا شَكُوْرًا؟

رواه البخاري، باب قوله: ليغفرلك الله ماتقدم من ذنبك ......، رقم:٤٨٣٦

219. हज़रत मुग़ीरह ﷺ फ़रमाते हैं कि नबी करीम ﷺ (नमाज़ में इतना लम्बा) क़ियाम फ़रमाते कि आप ﷺ के पावं मुबारक पर वरम आ जाता। आप से अ़र्ज़ किया गया कि अल्लाह तआ़ला ने आपके अगले-पिछले गुनाह (अगर हों भी तो) माफ़ फ़रमा दिए (फिर आप इतनी मशक़्क़त क्यों उठाते हैं?) इर्शाद फ़रमाया : क्या (इस बात पर) मैं शुक्रगुज़ार बन्दा न बनूं? (बुख़ारी)

﴾220﴿ عَنْ عَمَّارِ بْنِ يَاسِرٍ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمَا قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللّٰهِ ﷺ يَقُوْلُ: إِنَّ الرَّجُلَ لَيَنْصَرِفُ وَمَا كُتِبَ لَهُ إِلَّا عُشْرُ صَلَاتِهِ تُسْعُهَا ثُمُنُهَا سُبُعُهَا سُدُسُهَا خُمُسُهَا رُبُعُهَا ثُلُثُهَا نِصْفُهَا.

رواه ابو داؤد، باب ماجاء في نقصان الصلوة، رقم: ٧٩٦

220. हज़रत अ़म्मार बिन यासिर ﷺ फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : आदमी नमाज़ से फ़ारिग़ होता है और उसके लिए सवाब का दसवां हिस्सा लिखा जाता है। इसी तरह बाज़ के लिए नवां, आठवां, सातवां, छठा, पांचवां, चौथाई, तिहाई, आधा हिस्सा लिखा जाता है। (अबूदाऊद)

फ़ायदा : हदीस शरीफ़ से मुराद यह है कि जिस क़दर नमाज़ की ज़ाहिरी शक्ल और अन्दरूनी कैफ़ियतें सुन्नत के मुताबिक़ होती हैं, उतना ही ज़्यादा अज्र व सवाब मिलता है। (बज़लुलमज्हूद)

﴾221﴿ عَنِ الْفَضْلِ بْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمَا عَنْ رَسُوْلِ اللّٰهِ ﷺ قَالَ: الصَّلَاةُ مَثْنٰى مَثْنٰى، تَشَهَّدُ فِيْ كُلِّ رَكْعَتَيْنِ، وَتَضَرُّعٌ، وَتَخَشُّعٌ، وَتَمَسْكُنٌ ثُمَّ تُقْنِعُ يَدَيْكَ يَقُوْلُ تَرْفَعُهُمَا إِلٰى رَبِّكَ عَزَّ وَجَلَّ مُسْتَقْبِلًا بِبُطُوْنِهِمَا وَجْهَكَ تَقُوْلُ: يَارَبِّ يَا رَبِّ ثَلَاثًا فَمَنْ لَمْ يَفْعَلْ كَذٰلِكَ فَهِيَ خِدَاجٌ.

رواه احمد ١٦٧/٤

221. हज़रत फ़ज़्ल बिन अ़ब्बास ﷺ फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : नमाज़ की दो-दो रकअ़तें इस तरह पढ़ो कि दो रकअ़तों के आख़िर में तशह्हुद पढ़ो। नमाज़ में आजिज़ी, सुकून और मस्कनत का इज़्हार करो। नमाज़ से फ़ारिग़ होने के बाद अपने दोनों हाथों को दुआ़ के लिए अपने रब के सामने इस तरह उठाओ कि दोनों हाथों की हथेलियां तुम्हारे चेहरे की तरफ़ हों। फिर तीन बार या रब

या रब कहकर दुआ करो। जिसने इस तरह न किया उसकी नमाज़ (अज्र व सवाब के लिहाज़ से) नाक़िस होगी। (मुस्नद अहमद)

﴾222﴿ عَنْ اَبِیْ ذَرٍّ رَضِیَ اللہُ عَنْہُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللہِ ﷺ: لَایَزَالُ اللہُ مُقْبِلًا عَلَی الْعَبْدِ فِیْ صَلَاتِہٖ مَالَمْ یَلْتَفِتْ، فَاِذَا صَرَفَ وَجْھَہٗ انْصَرَفَ عَنْہُ.

رواہ النسائی، باب التشدید فی الالتفات فی الصلاۃ، رقم: ۱۱۹۶

222. हज़रत अबूज़र ؓ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अल्लाह तआला बन्दे की तरफ़ उस वक़्त तक तवज्जोह फ़रमाते हैं, जब तक वह नमाज़ में किसी और तरफ़ मुतवज्जह न हो। जब बन्दा अपनी तवज्जोह नमाज़ से हटा लेता है, तो अल्लाह तआला भी उससे अपनी तवज्जोह हटा लेते हैं। (नसाई)

﴾223﴿ عَنْ حُذَیْفَةَ رَضِیَ اللہُ عَنْہُ عَنِ النَّبِیِّ ﷺ قَالَ: اِنَّ الرَّجُلَ اِذَا قَامَ یُصَلِّی اَقْبَلَ اللہُ عَلَیْہِ بِوَجْھِہٖ حَتّٰی یَنْقَلِبَ اَوْ یُحْدِثَ حَدَثَ سُوْءٍ.

رواہ ابن ماجہ، باب المصلی یتنخم، رقم: ۱۰۲۳

223. हज़रत हुज़ैफ़ा ؓ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : आदमी जब नमाज़ पढ़ने खड़ा होता है तो अल्लाह तआला उसकी तरफ़ पूरी तवज्जोह फ़रमाते हैं, यहां तक कि वह नमाज़ से फ़ारिग़ हो जाए या (नमाज़ में) कोई ऐसा अ़मल कर ले, जो नमाज़ के ख़ुशूअ़ के ख़िलाफ़ हो। (इब्ने माजा)

﴾224﴿ عَنْ اَبِیْ ذَرٍّ رَضِیَ اللہُ عَنْہُ عَنِ النَّبِیِّ ﷺ قَالَ: اِذَا قَامَ اَحَدُکُمْ اِلَی الصَّلٰوۃِ فَلَا یَمْسَحِ الْحَصٰی فَاِنَّ الرَّحْمَةَ تُوَاجِھُہٗ. رواہ الترمذی وقال: حدیث ابی ذر حدیث حسن،

باب ماجاء فی کراھیة مسح الحصی ......، رقم: ۳۷۹

224. हज़रत अबूज़र ؓ से रिवायत है कि नबी-ए-करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जब तुममें कोई शख़्स नमाज़ के लिए खड़ा हो तो नमाज़ की हालत में बिला ज़रूरत कंकरियों पर हाथ न फेरे, क्योंकि उस वक़्त अल्लाह तआला की ख़ास रहमत उसकी तरफ़ मुतवज्जह होती है। (तिर्मिज़ी)

फ़ायदा : इस्लाम के शुरू के दिनों में मस्जिदों के अन्दर सफ़ों की जगह कंकरियां बिछा दी जाती थीं। कभी कोई कंकरी खड़ी रह जाती जिसकी वजह से सज्दा करना मुश्किल हो जाता था। रसूलुल्लाह ﷺ ने बार-बार कंकरियां हटाने से इसलिए मना फ़रमाया है कि यह वक़्त अल्लाह तआला की

रहमत के मुतवज्जह होने का है। कंकरियां हटाने या इस क़िस्म के दूसरे काम में मुतवज्जह होने की वजह से रहमत से महरूमी न हो जाए।

﴿225﴾ عَنْ سَمُرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: كَانَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ يَأْمُرُنَا إِذَا كُنَّا فِي الصَّلٰوةِ وَرَفَعْنَا رُؤُوْسَنَا مِنَ السُّجُوْدِ أَنْ نَطْمَئِنَّ عَلَى الْأَرْضِ جُلُوْسًا وَلَا نَسْتَوْفِزَ عَلٰى أَطْرَافِ الْأَقْدَامِ.

رواه بتمامه هكذا الطبراني في الكبير واسناده حسن، وقد تكلم الازدي وابن حزم في بعض رجاله بما لا يقدح مجمع الزوائد ٢/٣٢٥

225. हज़रत समुरा ﷛ फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ हमें हुक्म फ़रमाया करते थे कि जब हम नमाज़ की हालत में सज्दा से सर उठाएं तो इत्मीनान से ज़मीन पर बैठें, पंजों के बल न बैठें। (तबरानी, मज्मउ़ज़्ज़वाइद)

﴿226﴾ عَنْ أَبِي الدَّرْدَاءِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ حِيْنَ حَضَرَتْهُ الْوَفَاةُ قَالَ: أُحَدِّثُكُمْ حَدِيْثًا سَمِعْتُهُ مِنْ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: اُعْبُدِ اللهَ كَأَنَّكَ تَرَاهُ فَإِنْ لَمْ تَكُنْ تَرَاهُ فَإِنَّهُ يَرَاكَ، وَاعْدُدْ نَفْسَكَ فِي الْمَوْتٰى، وَإِيَّاكَ وَدَعْوَةَ الْمَظْلُوْمِ فَإِنَّهَا تُسْتَجَابُ، وَمَنِ اسْتَطَاعَ مِنْكُمْ أَنْ يَشْهَدَ الصَّلَاتَيْنِ الْعِشَاءَ وَالصُّبْحَ وَلَوْ حَبْوًا فَلْيَفْعَلْ.

رواه الطبراني في الكبير والرجل الذي من النخع لم اجد من ذكره وقد ورد من وجه آخر وسماه جابرًا. وفي الحاشية: وله شواهد يتقوى به، مجمع الزوائد ٢/١٦٥

226. हज़रत अबुद्दर्दा ﷛ ने इंतिक़ाल के वक़्त फ़रमाया : मैं तुमसे एक हदीस ब्यान करता हूं, जो मैंने रसूलुल्लाह ﷺ से सुनी थी। आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अल्लाह तआ़ला की ऐसी इबादत करो, गोया तुम उनको देख रहे हो और अगर यह कैफ़ियत नसीब न हो, तो फिर यह ध्यान रखो कि अल्लाह तआ़ला तुम्हें देख रहे हैं। अपने आपको मुर्दों में शुमार किया करो (अपने आप को ज़िन्दों में न समझो कि फिर न किसी बात से ख़ुशी, न किसी बात से रंज), मज़्लूम की बद्दुआ़ से अपने आपको बचाते रहो, क्योंकि वह फ़ौरन क़ुबूल होती है। जो तुम में से इशा और फ़ज्र की जमाअ़त में शरीक होने के लिए ज़मीन पर घिसट कर भी जा सकता हो, तो उसे घिसट कर जमाअ़त में शरीक हो जाना चाहिए। (तबरानी, मज्मउ़ज़्ज़वाइद)

﴿227﴾ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: صَلِّ صَلَاةَ مُوَدِّعٍ كَأَنَّكَ تَرَاهُ، فَإِنْ كُنْتَ لَا تَرَاهُ فَإِنَّهُ يَرَاكَ. (الحديث) رواه ابو محمد الابراهيمي في كتاب الصلاة وابن النجار عن ابن عمر وهو حديث حسن، الجامع الصغير ٢/٦٩

227. हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : उस शख़्स की तरह नमाज़ पढ़ा करो जो सबसे रुख़्सत होने वाला हो, यानी जिसको गुमान हो कि यह मेरी ज़िन्दगी की आख़िरी नमाज़ है और इस तरह नमाज़ पढ़ो, गोया तुम अल्लाह तआला को देख रहे हो, अगर यह हालत पैदा न हो सके तो कम-से-कम यह कैफ़ियत ज़रूर हो कि अल्लाह तआला तुम्हें देख रहे हैं।

(जामेअ़ सग़ीर)

﴿228﴾ عَنْ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: كُنَّا نُسَلِّمُ عَلَى رَسُوْلِ اللهِ ﷺ وَهُوَ فِي الصَّلَاةِ، فَيَرُدُّ عَلَيْنَا، فَلَمَّا رَجَعْنَا مِنْ عِنْدِ النَّجَاشِيِّ، سَلَّمْنَا عَلَيْهِ فَلَمْ يَرُدَّ عَلَيْنَا، فَقُلْنَا: يَا رَسُوْلَ اللهِ! كُنَّا نُسَلِّمُ عَلَيْكَ فِي الصَّلَاةِ، فَتَرُدُّ عَلَيْنَا، فَقَالَ: إِنَّ فِي الصَّلَاةِ شُغْلًا.

رواه مسلم،باب تحريم الكلام في الصلاة ... رقم:١٢٠١

228. हज़रत अब्दुल्लाह ﷺ फ़रमाते हैं कि (इस्लाम के शुरू में) हम रसूलुल्लाह ﷺ को नमाज़ की हालत में सलाम कर लिया करते थे और आप ﷺ हमें सलाम का जवाब दिया करते थे। जब हम नजाशी के पास से वापस आए तो हमने (पहली आदत के मुताबिक़) आप ﷺ को सलाम किया, आपने हमें जवाब न दिया। हमने अ़र्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! पहले हम आप को नमाज़ की हालत में सलाम करते थे, आप हमें जवाब देते थे (लेकिन इस मर्तबा आप ने जवाब न दिया)। आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : नमाज़ में सिर्फ़ नमाज़ ही की तरफ़ मशग़ूल रहना चाहिए।

(मुस्लिम)

﴿229﴾ عَنْ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: رَأَيْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يُصَلِّيْ وَفِيْ صَدْرِهِ أَزِيْزٌ كَأَزِيْزِ الرَّحَى مِنَ الْبُكَاءِ ﷺ.

رواه ابو داؤد، باب البكاء في الصلاة، رقم:٩٠٤

229. हज़रत अब्दुल्लाह ﷺ फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को नमाज़ पढ़ते हुए देखा। आप ﷺ के मुबारक सीने से रोने की आवाज़ (सांस रुकने की वजह से) ऐसी मुसलसल आ रही थी, जैसे चक्की की आवाज़ होती है। (अबूदाऊद)

﴿230﴾ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا مَرْفُوْعًا قَالَ: مَثَلُ الصَّلَاةِ الْمَكْتُوْبَةِ كَمَثَلِ الْمِيْزَانِ مَنْ أَوْفَى اسْتَوْفَى.

رواه البيهقي هكذا ورواه غيره عن الحسن مرسلا وهو الصواب، الترغيب ٢٥١/١

230. हज़रत इब्ने अ़ब्बास ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शा

नमाज़ की मिसाल तराज़ू की-सी है जो नमाज़ को पूरी तरह अदा करता है, उसे पूरा अज्र मिलता है। (बैहक़ी, तर्ग़ीब)

﴿231﴾ عَنْ عُثْمَانَ بْنِ أَبِيْ دَهْرِشٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ مُرْسَلًا (قَالَ) لَا يَقْبَلُ اللهُ مِنْ عَبْدٍ عَمَلًا حَتّٰى يُحْضِرَ قَلْبَهُ مَعَ بَدَنِهٖ. اتحاف السادة٣/١١٢، قال المنذري: رواه محمد بن نصر المروزي في كتاب الصلاة هكذا مرسلا ووصله ابو منصور الديلمي في مسند الفردوس من حديث ابى ابن كعب والمرسل اصح، الترغيب١/٣٤٦

231. हज़रत उस्मान बिन अबी दहरिश ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अल्लाह तआ़ला बन्दे के उसी अ़मल को क़ुबूल फ़रमाते हैं, जिसमें वह अपने बदन के साथ दिल को भी मुतवज्जह रखता है। (इत्तिहाफ़)

﴿232﴾ عَنْ أَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: الصَّلَاةُ ثَلَاثَةُ أَثْلَاثٍ: الطُّهُوْرُ ثُلُثٌ، وَالرُّكُوْعُ ثُلُثٌ، وَالسُّجُوْدُ ثُلُثٌ، فَمَنْ أَدَّاهَا بِحَقِّهَا قُبِلَتْ مِنْهُ، وَقُبِلَ مِنْهُ سَائِرُ عَمَلِهٖ، وَمَنْ رُدَّتْ عَلَيْهِ صَلَاتُهُ رُدَّ عَلَيْهِ سَائِرُ عَمَلِهٖ. رواه البزار وقال: لا نعلمه مرفوعا الا عن المغيرة بن مسلم، قلت: والمغيرة ثقة واسناده حسن، مجمع الزوائد٢/٣٤٥

232. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : नमाज़ के तीन हिस्से हैं, यानी नमाज़ का पूरा सवाब इन तीनों हिस्सों के सही अदा करने पर मिलता है। पाकी हासिल करना तिहाई हिस्सा है, रुकूअ़ तिहाई हिस्सा है और सज्दा तिहाई हिस्सा है। जो शख़्स नमाज़ आदाब की रियायत के साथ पढ़ता है उसकी नमाज़ क़ुबूल की जाती है और उस के सारे आ़माल भी क़ुबूल किए जाते हैं। जिसकी नमाज़ (सही न पढ़ने की वजह से) क़ुबूल नहीं होती, उसके दूसरे आ़माल भी क़ुबूल नहीं होते। (बज़्ज़ार, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿233﴾ عَنْ أَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: صَلّٰى بِنَا رَسُوْلُ اللهِ ﷺ الْعَصْرَ فَبَصُرَ بِرَجُلٍ يُصَلِّيْ، فَقَالَ: يَا فُلَانُ اتَّقِ اللهَ، أَحْسِنْ صَلَاتَكَ أَتَرَوْنَ أَنِّيْ لَا أَرَاكُمْ، إِنِّيْ لَأَرٰى مِنْ خَلْفِيْ كَمَا أَرٰى مِنْ بَيْنِ يَدَيَّ، أَحْسِنُوْا صَلَاتَكُمْ وَأَتِمُّوْا رُكُوْعَكُمْ وَسُجُوْدَكُمْ.
رواه ابن خزيمة١/٣٣٢

233. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने हमें अ़स्र की नमाज़ पढ़ाई। उसके बाद आप ﷺ ने एक साहब को नमाज़ पढ़ते हुए देखा,

देकर फ़रमाया : फ़्लाने अल्लाह तआ़ला से डरो! नमाज़ को अच्छी तरह से पढ़ो। क्या तुम यह समझते हो कि मैं तुमको नहीं देखता? मैं अपने पीछे की चीज़ों को भी ऐसा ही देखता हूं जैसा कि अपने सामने की चीज़ों को देखता हूं। अपनी नमाज़ों को अच्छी तरह पढ़ा करो, रुकूअ् और सज्दों को पूरे तौर पर अदा किया करो। (इब्ने ख़ुज़ैमा)

फ़ायदा : नबी करीम का पीछे की चीज़ों को भी देखना आपके मोजिज़ों में से एक है।

﴿234﴾ عَنْ وَائِلِ بْنِ حُجْرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: كَانَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ إِذَا رَكَعَ فَرَّجَ أَصَابِعَهُ وَإِذَا سَجَدَ ضَمَّ أَصَابِعَهُ. رواه الطبراني في الكبير و اسناده حسن مجمع الزوائد ٢/٥٠١

234. हज़रत वाइल बिन हिज्र ﷺ फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ जब रुकूअ् फ़रमाते तो (हाथों की) उंगलियां खुली रखते और जब सज्दा फ़रमाते, तो उंगलियां मिला लेते। (तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿235﴾ عَنْ أَبِي الدَّرْدَاءِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: مَنْ صَلَّى رَكْعَتَيْنِ يُتِمُّ رُكُوْعَهُ وَ سُجُوْدَهُ لَمْ يَسْأَلِ اللهَ تَعَالَى شَيْئًا إِلَّا أَعْطَاهُ إِيَّاهُ عَاجِلًا أَوْ آجِلًا.

اتحاف السادة المتقين عن الطبراني في الكبير ٣/٢١

235. हज़रत अबुद्दर्दा ﷺ फ़रमाते हैं : जो शख़्स दो रकअ़त इस तरह पढ़ता है कि उसका रुकूअ् और सज्दा पूरे तौर पर करता है (उसके बाद) अल्लाह तआ़ला से जो मांगता है अल्लाह तआ़ला उसको फ़ौरन या (किसी मस्लहत की वजह से) कुछ देर के बाद ज़रूर अ़ता फ़रमाते हैं। (तबरानी, इत्तिहाफ़)

﴿236﴾ عَنْ أَبِي عَبْدِ اللهِ الْأَشْعَرِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَثَلُ الَّذِي لَا يُتِمُّ رُكُوْعَهُ وَيَنْقُرُ فِي سُجُوْدِهِ مَثَلُ الْجَائِعِ يَأْكُلُ التَّمْرَةَ وَالتَّمْرَتَيْنِ لَا تُغْنِيَانِ عَنْهُ شَيْئًا. رواه الطبراني في الكبير وابو يعلى و اسناده حسن، مجمع الزوائد ٢/٣٠٢

236. हज़रत अबू अ़ब्दुल्लाह अशअ़री ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : उस शख़्स की मिसाल जो पूरे तरीक़े पर रुकूअ् नहीं करता और सज्दा में भी ठोंगें मारता है, उस भूखे शख़्स की-सी है जो एक दो खुजूरें खाए, जिससे उसकी भूख दूर नहीं होती, इसी तरह ऐसी नमाज़ किसी काम नहीं आती। (तबरानी, अबूयाला, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿237﴾ عَنْ اَبِي الدَّرْدَاءِ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ اَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ: اَوَّلُ شَيْءٍ يُرْفَعُ مِنْ هٰذِهِ الْاُمَّةِ الْخُشُوْعُ حَتّٰى لَا تَرٰى فِيْهَا خَاشِعًا.

رواه الطبراني في الكبير واسناده حسن، مجمع الزوائد ٢/٢٢٦

237. हज़रत अबुद्दर्दा ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : इस उम्मत में सबसे पहले ख़ुशूअ़ उठाया जाएगा, यहां तक कि तुम्हें उम्मत में एक भी ख़ुशूअ़ वाला न मिलेगा। (तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿238﴾ عَنْ اَبِي قَتَادَةَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: اَسْوَأُ النَّاسِ سَرِقَةً الَّذِيْ يَسْرِقُ مِنْ صَلَاتِهِ قَالُوْا: يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ! كَيْفَ يَسْرِقُ مِنْ صَلَاتِهِ؟ قَالَ: لَا يُتِمُّ رُكُوْعَهَا وَلَا سُجُوْدَهَا، اَوْ لَا يُقِيْمُ صُلْبَهُ فِي الرُّكُوْعِ وَلَا فِي السُّجُوْدِ.

رواه احمد والطبراني في الكبير والاوسط ورجاله رجال الصحيح، مجمع الزوائد ٢/٣٠٠

238. हज़रत अबू क़तादा ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : बदतरीन चोरी करने वाला शख़्स वह है जो नमाज़ में चोरी कर लेता है। सहाबा रज़ि० ने अ़र्ज़ किया : *या रसूलल्लाह!* नमाज़ में से किस तरह चोरी कर लेता है? इर्शाद फ़रमाया : उसका रुकूअ़ और सज्दा अच्छी तरह नहीं करता।

(मुस्नद अहमद, तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿239﴾ عَنْ اَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: لَا يَنْظُرُ اللّٰهُ اِلٰى صَلَاةِ رَجُلٍ لَا يُقِيْمُ صُلْبَهُ بَيْنَ رُكُوْعِهِ وَسُجُوْدِهِ. (رواه احمد، الفتح الرباني ٣/٢٦٧)

239. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अल्लाह तआ़ला ऐसे आदमी की नमाज़ की तरफ़ देखते ही नहीं जो रुकूअ़ और सज्दा के दर्मियान यानी क़ौमा में अपनी कमर को सीधा न करे। (मुस्नद अहमद, फ़तहुर्रब्बानी)

﴿240﴾ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهَا قَالَتْ: سَاَلْتُ رَسُوْلَ اللّٰهِ ﷺ عَنِ الْاِلْتِفَاتِ فِي الصَّلَاةِ قَالَ: هُوَ اخْتِلَاسٌ يَخْتَلِسُهُ الشَّيْطٰنُ مِنْ صَلَاةِ الرَّجُلِ.

رواه الترمذي وقال: هذا حديث حسن غريب، باب ما ذكر في الالتفات في الصلاة، رقم: ٥٩٠

240. हज़रत आइशा ﷺ से रिवायत है कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ से पूछा कि नमाज़ में इधर-उधर देखना कैसा है? इर्शाद फ़रमाया : यह शैतान का आदमी की नमाज़ में से उचक लेना है। (तिर्मिज़ी)

﴿241﴾ عَنْ جَابِرِ بْنِ سَمُرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: لَيَنْتَهِيَنَّ اَقْوَامٌ يَرْفَعُوْنَ اَبْصَارَهُمْ اِلَى السَّمَاءِ فِي الصَّلَاةِ، اَوْلَا تَرْجِعُ اِلَيْهِمْ.

رواه مسلم، باب النهي عن رفع البصر ...، رقم:٩٦٦

241. हज़रत जाबिर बिन समुरा ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो लोग नमाज़ में आसमान की तरफ़ नज़र उठाकर देखते हैं, वे बाज़ आ जाएं वरना उनकी निगाहें ऊपर ही रह जाएंगी। (मुस्लिम)

﴿242﴾ عَنْ اَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ اَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ دَخَلَ الْمَسْجِدَ فَدَخَلَ رَجُلٌ فَسَلَّمَ عَلَى النَّبِيِّ ﷺ فَرَدَّ، فَقَالَ: ارْجِعْ فَصَلِّ فَاِنَّكَ لَمْ تُصَلِّ، فَرَجَعَ فَصَلَّى كَمَا صَلَّى، ثُمَّ جَاءَ فَصَلَّى فَسَلَّمَ عَلَى النَّبِيِّ ﷺ فَقَالَ: ارْجِعْ فَصَلِّ فَاِنَّكَ لَمْ تُصَلِّ، ثَلَاثًا، فَقَالَ: وَالَّذِيْ بَعَثَكَ بِالْحَقِّ مَا اُحْسِنُ غَيْرَهُ، فَعَلِّمْنِيْ، فَقَالَ: اِذَا قُمْتَ اِلَى الصَّلَاةِ فَكَبِّرْ، ثُمَّ اقْرَاْ مَا تَيَسَّرَ مَعَكَ مِنَ الْقُرْآنِ، ثُمَّ ارْكَعْ حَتّٰى تَطْمَئِنَّ رَاكِعًا، ثُمَّ ارْفَعْ حَتّٰى تَعْتَدِلَ قَائِمًا، ثُمَّ اسْجُدْ حَتّٰى تَطْمَئِنَّ سَاجِدًا، ثُمَّ ارْفَعْ حَتّٰى تَطْمَئِنَّ جَالِسًا وَافْعَلْ ذٰلِكَ فِيْ صَلَاتِكَ كُلِّهَا.

رواه البخاري، باب وجوب القراءة للامام والمأموم في الصلوات كلها ...، رقم:٧٥٧

242. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ मस्जिद में तशरीफ़ लाए। एक और साहब भी मस्जिद में आए और नमाज़ पढ़ी, फिर (रसूलुल्लाह ﷺ के पास आए और) रसूलुल्लाह ﷺ को सलाम किया। आप ﷺ ने सलाम का जवाब दिया और फ़रमाया : जाओ नमाज़ पढ़ो क्योंकि तुमने नमाज़ नहीं पढ़ी। वह गए और जैसे नमाज़ पहले पढ़ी थी, वैसी ही नमाज़ पढ़कर आए, फिर रसूलुल्लाह ﷺ को आकर सलाम किया। आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जाओ नमाज़ पढ़ो, क्योंकि तुमने नमाज़ नहीं पढ़ी। इस तरह तीन मर्तबा हुआ। उन साहब ने अर्ज़ किया : उस ज़ात की क़सम, जिसने आप ﷺ को हक़ के साथ भेजा है मैं इससे अच्छी नमाज़ नहीं पढ़ सकता आप मुझे नमाज़ सिखाइए। आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जब तुम नमाज़ के लिए खड़े हुआ करो तो तकबीर कहा करो, फिर कुरआन मजीद में से जो कुछ तुम पढ़ सको पढ़ो। फिर रुकूअ् में जाओ तो इत्मीनान से रुकूअ् करो, फिर रुकूअ् से खड़े हो तो इत्मीनान से खड़े हो। फिर सज्दा में जाओ तो इत्मीनान से सज्दा करो फिर सज्दा से उठो तो इत्मीनान से बैठो, ये सब काम पूरी नमाज़ में करो। (बुख़ारी)

بسم الله الرحمن الرحيم

वुज़ू के फ़ज़ाइल

क़ुरआनी आयतें

قَالَ اللّٰهُ تَعَالٰى: ﴿يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِذَا قُمْتُمْ اِلَى الصَّلٰوةِ فَاغْسِلُوْا وُجُوْهَكُمْ وَاَيْدِيَكُمْ اِلَى الْمَرَافِقِ وَامْسَحُوْا بِرُءُوْسِكُمْ وَاَرْجُلَكُمْ اِلَى الْكَعْبَيْنِ﴾

[المائدة:٦]

अल्लाह तआला का इर्शाद है : ईमान वालो! जब नमाज़ के लिए उठो तो पहले अपने मुंह को और कुहनियों तक अपने हाथों को धो लिया करो और अपने सरों का मसह कर लिया करो और अपने पांव भी टख़्नों तक धो लिया करो। (माइदा : 6)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿وَاللّٰهُ يُحِبُّ الْمُطَّهِّرِيْنَ﴾ [التوبة:١٠٨]

और अल्लाह तआला ख़ूब पाक रहने वालों को पसन्द फ़रमाते हैं।
(तौबा : 108)

नबी ﷺ की हदीसें

﴿243﴾ عَنْ اَبِیْ مَالِكٍ الْاَشْعَرِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: اَلطُّهُوْرُ شَطْرُ الْاِیْمَانِ، وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ تَمْلَاُ الْمِیْزَانَ وَسُبْحَانَ اللهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ تَمْلَآنِ. اَوْتَمْلَاُ۔ مَابَیْنَ السَّمٰوَاتِ وَالْاَرْضِ، وَالصَّلَاةُ نُوْرٌ، وَالصَّدَقَةُ بُرْهَانٌ، وَالصَّبْرُ ضِیَاءٌ، وَالْقُرْآنُ حُجَّةٌ لَّكَ اَوْ عَلَیْكَ. (الحدیث) رواہ مسلم، باب فضل الوضوء، رقم: ٥٣٤

243. हज़रत अबू मालिक अशअ़री ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : वुज़ू आधा ईमान है। अल-हम्दु लिल्लाह कहना (आमाल के) तराज़ू को सवाब से भर देता है। 'सुब्हानल्लाह वल हम्दु लिल्लाह' आसमान व ज़मीन के दर्मियान की ख़ाली जगह को सवाब से भर देते हैं। नमाज़ नूर है, सदक़ा दलील है, सब्र करना रौशनी है और क़ुरआन तुम्हारे हक़ में दलील है या तुम्हारे ख़िलाफ़ दलील है यानी अगर उसकी तिलावत की और उस पर अ़मल किया तो यह तुम्हारी निजात का ज़रिया होगा, वरना तुम्हारी पकड़ का ज़रिया होगा। (मुस्लिम)

फ़ायदा : इस हदीस शरीफ़ में वुज़ू को आधा ईमान इसलिए फ़रमाया है कि ईमान से दिल के क़ुफ़्र व शिर्क की नापाकी दूर होती है और वुज़ू से आज़ा की नापाकी दूर होती है। नमाज़ के नूर होने का एक मतलब यह है कि नमाज़ गुनाह और बेहयाई से रोकती है जिस तरह नूर अंधेरे को दूर करता है। दूसरा मतलब यह है कि नमाज़ की वजह से नमाज़ी का चेहरा क़ियामत के दिन रौशन होगा और दुनिया में भी नमाज़ी के चेहरे पर तर व ताज़गी होगी। तीसरा मतलब यह है कि नमाज़ क़ब्र और क़ियामत के अंधेरों में रौशनी है। सदक़ा की दलील होने का मतलब यह है कि माल इंसान को महबूब होता है और जब वह अल्लाह तआ़ला के रास्ते में उसको ख़र्च करता है और सदक़ा करता है, तो यह सदक़ा करना उसके ईमान में सच्चा होने की अलामत और दलील है। सब्र के रौशनी होने का मतलब यह है कि सब्र करने वाला शख़्स यानी अल्लाह तआ़ला के हुक्मों को पूरा करने वाला, नाफ़रमानी से रुकने वाला तकलीफ़ों को बरदाश्त करने वाला अपने अंदर हिदायत की रौशनी लिए हुए है। (नव्वी, मिरक़ात)

﴾244﴿ عَنْ اَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ خَلِيْلِي ﷺ يَقُوْلُ: تَبْلُغُ الْحِلْيَةُ مِنَ الْمُؤْمِنِ حَيْثُ يَبْلُغُ الْوَضُوْءُ.

رواه مسلم، باب تبلغ الحلية...، رقم: ٥٨٦

244. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ फ़रमाते हैं कि मैंने अपने हबीब ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : मोमिन का ज़ेवर क़ियामत के दिन वहां तक पहुंचेगा जहां तक वुज़ू का पानी पहुंचता है, यानी आज़ा के जिन हिस्सों तक वुज़ू का पानी पहुंचेगा वहां तक ज़ेवर पहनाया जाएगा। (मुस्लिम)

﴾245﴿ عَنْ اَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: اِنَّ اُمَّتِي يُدْعَوْنَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ غُرًّا مُحَجَّلِيْنَ مِنْ آثَارِ الْوُضُوْءِ، فَمَنِ اسْتَطَاعَ مِنْكُمْ اَنْ يُطِيْلَ غُرَّتَهُ فَلْيَفْعَلْ.

رواه البخاري، باب فضل الوضوء والغر المحجلون...، رقم: ١٣٦

245. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ से रिवायत है कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : मेरी उम्मत क़ियामत के दिन इस हाल में बुलाई जाएगी कि उनके हाथ पांव और चेहरे वुज़ू में धुलने की वजह से रौशन और चमकदार होंगे, लिहाज़ा जो शख़्स अपनी रौशनी को बढ़ाना चाहे, तो उसे चाहिए कि वह उसे बढ़ाए। (बुख़ारी)

फ़ायदा : मतलब यह है कि वुज़ू इस एहतमाम से किया जाए कि आज़ाए वुज़ू में कोई जगह ख़ुश्क न रहे। (मज़ाहिरे हक़)

﴾246﴿ عَنْ عُثْمَانَ بْنِ عَفَّانَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَنْ تَوَضَّاَ فَاَحْسَنَ الْوُضُوْءَ خَرَجَتْ خَطَايَاهُ مِنْ جَسَدِهِ حَتّٰى تَخْرُجَ مِنْ تَحْتِ اَظْفَارِهِ.

رواه مسلم، باب خروج الخطايا...، رقم: ٥٧٨

246. हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जिसने वुज़ू किया और अच्छी तरह वुज़ू किया यानी सुन्नतों और आदाब व मुस्तहिब्बात का एहतमाम किया तो उसके गुनाह जिस्म से निकल जाते हैं, यहां तक कि उसके नाख़ूनों के नीचे से भी निकल जाते हैं। (मुस्लिम)

फ़ायदा : उलमा की तहक़ीक़ यह है कि वुज़ू, नमाज़ वग़ैरह इबादात से सिर्फ़ गुनाहे सग़ीरा माफ़ होते हैं। कबीरा गुनाह बग़ैर तौबा के माफ़ नहीं होते, इसलिए वुज़ू नमाज़ वग़ैरह इबादात के साथ तौबा व इस्तग़फ़ार का भी एहतमाम करना चाहिए। अलबत्ता अल्लाह तआला अपने फ़ज़्ल से किसी के गुनाह

कबीरा भी माफ़ फ़रमा दें तो दूसरी बात है। (नव्वी)

﴾247﴿ عَنْ عُثْمَانَ بْنِ عَفَّانَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: لَا يُسْبِغُ عَبْدٌ الْوُضُوْءَ إِلَّا غَفَرَ اللهُ لَهُ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْبِهِ وَمَا تَأَخَّرَ.

رواه البزار ورجاله موثقون والحديث حسن ان شاء الله، مجمع الزوائد ١/٥٤٢

247. हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान ﷺ फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : जो बन्दा कामिल वुज़ू करता है, यानी हर उज़्व को अच्छी तरह तीन मर्तबा धोता है, अल्लाह तआला उसके अगले पिछले सब गुनाह माफ़ फ़रमा देते हैं। (बज़्ज़ार, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴾248﴿ عَنْ عُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: مَا مِنْكُمْ مِنْ أَحَدٍ يَتَوَضَّأُ فَيُبْلِغُ. أَوْ فَيُسْبِغُ. الْوُضُوْءَ ثُمَّ يَقُوْلُ: أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللهُ وَأَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ، إِلَّا فُتِحَتْ لَهُ أَبْوَابُ الْجَنَّةِ الثَّمَانِيَةُ، يَدْخُلُ مِنْ أَيِّهَا شَاءَ. رواه مسلم، باب الذكر المستحب عقب الوضوء، رقم:٥٥٣، وفي رواية لمسلم عَنْ عُقْبَةَ بْنِ عَامِرٍ الْجُهَنِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ: مَنْ تَوَضَّأَ فَقَالَ: أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ، وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ (الحديث)، باب الذكر المستحب عقب الوضوء،رقم:٥٥٤، وفي رواية لابن ماجه عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ: ثُمَّ قَالَ ثَلَاثَ مَرَّاتٍ ......، باب مايقال بعد الوضوء، رقم: ٤٦٩، وفي رواية لابي داؤد عَنْ عُقْبَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ: فَأَحْسَنَ الْوُضُوْءَ ثُمَّ رَفَعَ نَظَرَهُ إِلَى السَّمَاءِ باب ما يقول الرجل إذا توضأ، رقم: ١٧٠: وفي رواية للترمذي عَنْ عُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ مَنْ تَوَضَّأَ فَأَحْسَنَ الْوُضُوْءَ ثُمَّ قَالَ: أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ اَللّٰهُمَّ اجْعَلْنِيْ مِنَ التَّوَّابِيْنَ، وَاجْعَلْنِيْ مِنَ الْمُتَطَهِّرِيْنَ.

(الحديث) باب في ما يقال بعد الوضوء ،رقم:٥٥

248. हज़रत उमर बिन ख़त्ताब ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : तुममें से जो शख़्स मुस्तहिब्बात और आदाब का एहतमाम करते हुए अच्छी तरह वुज़ू करे, फिर (अश्हदुअल्ला इला-ह इल्लल्लाहु व अन-न मुहम्मदन अ़ब्दुहू व. रसूलुह) पढ़े, उसके लिए यक़ीनी तौर पर जन्नत के आठों दरवाज़े खुल जाते हैं, जिससे चाहे दाख़िल हो जाए। हज़रत उक़्बा बिन आमिर जुहनी ﷺ की रिवायत में (अश्हदु अल-ला इला-ह इल्लल्लाहु वहदहू ला शरी-क लहू व अश्हदु

अन-न मुहम्मदन अ़ब्दुहू व रसूलुह) पढ़ने का ज़िक्र है। हज़रत अनस बिन मालिक ﷺ की रिवायत में तीन मर्तबा इन कलिमों के पढ़ने का ज़िक्र किया गया है। एक दूसरी रिवायत में हज़रत उक़्बा रज़ि० से वुज़ू के बाद आसमान की तरफ़ निगाह उठा कर उन कलिमों का पढ़ना ज़िक्र किया गया है। एक और रिवायत में हज़रत उ़मर बिन ख़त्ताब रज़ि० से ये कलिमे नक़ल किए गए हैं : 'अश्हदु अल-ला इला-ह इल्लल्लाहु वह्दहू ला शरी-क लहू व अश्हदु अन-न मुहम्मदन अ़ब्दुहू व रसूलुहू अल्लाहुम-मज-अ़ल-नी मिनत्तव्वाबी न वज-अ़ल नी मिनल मु-त-तह्हिरीन०' तर्जुमा : मैं गवाही देता हूं कि अल्लाह तआ़ला के सिवा कोई माबूद नहीं, जो अकेला है उसका कोई शरीक नहीं और मैं गवाही देता हूं कि मुहम्मद ﷺ उसके बन्दे और रसूल हैं, ऐ अल्लाह! मुझे तौबा करने वालों और पाक साफ़ रहने वालों में से बना।

﴾249﴿ عَنْ اَبِيْ سَعِيْدِ الْخُدْرِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَنْ تَوَضَّأَ ثُمَّ قَالَ: سُبْحَانَكَ اللّٰهُمَّ وَبِحَمْدِكَ لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ اَسْتَغْفِرُكَ وَاَتُوْبُ اِلَيْكَ كُتِبَ فِيْ رَقٍّ ثُمَّ طُبِعَ بِطَابِعٍ فَلَمْ يُكْسَرْ اِلٰى يَوْمِ الْقِيَامَةِ. (وهو جزء من الحديث) رواه الحاكم وقال هذا حديث صحيح على شرط مسلم ولم يخرجاه ووافقه الذهبي ١/٥٦٤

249. हज़रत अबू सईद ख़ुदरी ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स वुज़ू के बाद (सुब्हा-न-कल्लाहुम-म व बिहम्दि-क ला इला-ह इल्ला अन-त अस्तग़्फ़िरु-क व अतूबु अ़लैक०) पढ़ता है तो उन कलिमों को एक काग़ज़ पर लिखकर उस पर मुहर लगा दी जाती है जो क़ियामत तक नहीं तोड़ी जाएगी, यानी उसके सवाब को आख़िरत के लिए ज़ख़ीरा कर दिया जाएगा।

(मुस्तदरक हाकिम)

﴾250﴿ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: مَنْ تَوَضَّأَ وَاحِدَةً فَتِلْكَ وَظِيْفَةُ الْوُضُوْءِ الَّتِيْ لَا بُدَّ مِنْهَا، وَمَنْ تَوَضَّأَ اثْنَتَيْنِ فَلَهُ كِفْلَانِ، وَمَنْ تَوَضَّأَ ثَلَاثًا فَذٰلِكَ وُضُوْئِيْ وَوُضُوْءُ الْاَنْبِيَاءِ قَبْلِيْ. رواه احمد ٢/٩٨

250. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो वुज़ू में एक-एक मर्तबा उ़ज़्व को धोता है तो यह फ़र्ज़ के दर्जे में है और जो वुज़ू में दो-दो मर्तबा हर उ़ज़्व को धोता है तो उसे अज्र के दो हिस्से मिलते हैं और जो वुज़ू में तीन-तीन मर्तबा उ़ज़्व को धोता है तो यह मेरा और मुझसे पहले अम्बिया अ़लैहिमुस्सलाम का वुज़ू है। (मुस्नद अहमद)

﴾251﴿ عَنْ عَبْدِ اللهِ الصُّنَابِحِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: إِذَا تَوَضَّأَ الْعَبْدُ الْمُؤْمِنُ فَتَمَضْمَضَ خَرَجَتِ الْخَطَايَا مِنْ فِيْهِ، فَإِذَا اسْتَنْثَرَ خَرَجَتِ الْخَطَايَا مِنْ أَنْفِهِ، فَإِذَا غَسَلَ وَجْهَهُ خَرَجَتِ الْخَطَايَا مِنْ وَجْهِهِ حَتَّى تَخْرُجَ مِنْ تَحْتِ أَشْفَارِ عَيْنَيْهِ، فَإِذَا غَسَلَ يَدَيْهِ خَرَجَتِ الْخَطَايَا مِنْ يَدَيْهِ حَتَّى تَخْرُجَ مِنْ تَحْتِ أَظْفَارِ يَدَيْهِ، فَإِذَا مَسَحَ بِرَأْسِهِ خَرَجَتِ الْخَطَايَا مِنْ رَأْسِهِ حَتَّى تَخْرُجَ مِنْ أُذُنَيْهِ، فَإِذَا غَسَلَ رِجْلَيْهِ خَرَجَتِ الْخَطَايَا مِنْ رِجْلَيْهِ حَتَّى تَخْرُجَ مِنْ تَحْتِ أَظْفَارِ رِجْلَيْهِ، ثُمَّ كَانَ مَشْيُهُ إِلَى الْمَسْجِدِ وَصَلَاتُهُ نَافِلَةً لَهُ.

رواه النسائي، باب مسح الاذنين مع الراس......، رقم: ١٠٣

وَفِيْ حَدِيْثٍ طَوِيْلٍ عَنْ عَمْرِو بْنِ عَبَسَةَ السُّلَمِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ، وَفِيْهِ مَكَانَ (ثُمَّ كَانَ مَشْيُهُ إِلَى الْمَسْجِدِ وَصَلَاتُهُ نَافِلَةً) فَإِنْ هُوَ قَامَ فَصَلَّى، فَحَمِدَ اللهَ وَأَثْنَى عَلَيْهِ، وَمَجَّدَهُ بِالَّذِيْ هُوَ لَهُ أَهْلٌ، وَفَرَّغَ قَلْبَهُ لِلّٰهِ، إِلَّا انْصَرَفَ مِنْ خَطِيْئَتِهِ كَهَيْئَتِهِ يَوْمَ وَلَدَتْهُ أُمُّهُ.

رواه مسلم، باب اسلام عمرو بن عبسة، رقم: ١٩٣٠

251. हज़रत अ़ब्दुल्लाह सुनाबिही ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जब मोमिन बन्दा वुज़ू करता है और इस दौरान कुल्ली करता है तो उसके मुंह के तमाम गुनाह धुल जाते हैं। जब वह नाक साफ़ करता है तो नाक के तमाम गुनाह धुल जाते हैं। जब चेहरा धोता है तो चेहरे के गुनाह धुल जाते हैं, यहां तक कि पलकों की जड़ों से निकल जाते हैं। जब हाथों को धोता है तो हाथों के गुनाह धुल जाते हैं, यहां तक कि हाथों के नाख़ूनों के नीचे से निकल जाते हैं। जब सर का मसह करता है तो सर के गुनाह धुल जाते हैं, यहां तक कि कानों से निकल जाते हैं और जब पांव धोता है तो पांव के गुनाह धुल जाते हैं, यहां तक कि पांव के नाख़ूनों के नीचे से निकल जाते हैं। फिर उसका मस्जिद की तरफ़ चल कर जाना और नमाज़ पढ़ना उसके लिए मज़ीद (फ़ज़ीलत का ज़रिया) होता है। (नसाई)

एक दूसरी रिवायत में हज़रत अम्र बिन अ़बसा सुलमी ﷺ फ़रमाते हैं कि अगर वुज़ू के बाद खड़े होकर नमाज़ पढ़ता है, जिसमें अल्लाह तआ़ला की ऐसी हम्द व सना और बुज़ुर्गी ब्यान करता है जो उनकी शान के लायक़ है और अपने दिल को (तमाम फ़िक्रों से) ख़ाली करके अल्लाह तआ़ला की तरफ़ मुतवज्जह रहता है तो यह शख़्स नमाज़ से फ़ारिग़ होने के बाद अपने गुनाहों से ऐसा पाक व साफ़ हो जाता है जैसा कि आज ही उसकी मां ने उसको जना हो। (मुस्लिम)

फ़ायदा : पहली रिवायत का बाज़ उलेमा ने यह मतलब ब्यान किया है कि वुज़ू से तमाम जिस्म के गुनाह माफ़ हो जाते हैं और नमाज़ पढ़ने से तमाम बातनी गुनाह भी माफ़ हो जाते हैं। (कशफ़ुल मग़ता)

﴿252﴾ عَنْ اَبِیْ اُمَامَةَ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْهُ اَنَّ رَسُوْلَ اللّٰہِ ﷺ قَالَ: اَیُّمَا رَجُلٍ قَامَ اِلٰی وَضُوْئِهٖ یُرِیْدُ الصَّلَاةَ، ثُمَّ غَسَلَ کَفَّیْهِ نَزَلَتْ خَطِیْئَتُهٗ مِنْ کَفَّیْهِ مَعَ اَوَّلِ قَطْرَةٍ، فَاِذَا مَضْمَضَ وَاسْتَنْشَقَ وَاسْتَنْثَرَ نَزَلَتْ خَطِیْئَتُهٗ مِنْ لِسَانِهٖ وَشَفَتَیْهِ مَعَ اَوَّلِ قَطْرَةٍ، فَاِذَا غَسَلَ وَجْهَهٗ نَزَلَتْ خَطِیْئَتُهٗ مِنْ سَمْعِهٖ وَبَصَرِهٖ مَعَ اَوَّلِ قَطْرَةٍ فَاِذَا غَسَلَ یَدَیْهِ اِلَی الْمِرْفَقَیْنِ وَرِجْلَیْهِ اِلَی الْکَعْبَیْنِ سَلِمَ مِنْ کُلِّ ذَنْبٍ هُوَ لَهٗ وَمِنْ کُلِّ خَطِیْئَةٍ کَهَیْئَتِهٖ یَوْمَ وَلَدَتْهُ اُمُّهٗ، قَالَ: فَاِذَا قَامَ اِلَی الصَّلَاةِ رَفَعَ اللّٰہُ بِهَا دَرَجَتَهٗ وَاِنْ قَعَدَ قَعَدَ سَالِمًا. رواہ احمد ٥/٢٦٣

252. हज़रत अबू उमामा ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो आदमी नमाज़ के इरादे से वुज़ू करने के लिए उठता है, फिर अपने दोनों हाथ गट्टों तक धोता है तो उसकी हथेलियों के गुनाह पानी के पहले क़तरे के साथ ही झड़ जाते हैं। फिर जब कुल्ली करता है, नाक में पानी डालता है और नाक साफ़ करता है, तो उसकी ज़ुबान और होंठों के गुनाह पानी के पहले क़तरे के साथ ही झड़ जाते हैं। फिर जब अपने चेहरे को धोता है तो उसके कान और आंख के गुनाह पानी के पहले क़तरे के साथ ही झड़ जाते हैं, फिर जब हाथों को कुहनियों तक और पैरों को टख़नों तक धोता है तो अपने हर गुनाह और ग़लती से इस तरह पाक साफ़ हो जाता है जैसे आज ही उसकी मां ने उसको जना हो। फिर जब नमाज़ पढ़ने के लिए खड़ा होता है तो अल्लाह तआला उस नमाज़ की वजह से दर्जा बुलन्द कर देते हैं और अगर बैठा रहता है (नमाज़ में मश्ग़ूल नहीं होता) तो भी गुनाहों से पाक साफ़ हो कर बैठा रहता है। (मुस्नद अहमद)

﴿253﴾ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْهُمَا قَالَ: کَانَ رَسُوْلُ اللّٰہِ ﷺ یَقُوْلُ: مَنْ تَوَضَّأَ عَلٰی طُهْرٍ کُتِبَ لَهٗ عَشْرُ حَسَنَاتٍ. رواہ ابو داؤد، باب الرجل یجدد الوضوء، رقم: ٦٢

253. हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ इर्शाद फ़रमाया करते थे : जो शख़्स वुज़ू होने के बावजूद ताज़ा वुज़ू करता है, उसे दस नेकियां मिलती हैं। (अबूदाऊद)

फ़ायदा : उलमा ने लिखा है कि वुज़ू के बावजूद नया वुज़ू करने की शर्त यह है कि

पहले वुजू से कोई इबादत कर ली हो। (बज़्लुल मजहूद)

﴾254﴿ عَنْ اَبِیْ هُرَیْرَةَ رَضِیَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِیِّ ﷺ قَالَ: لَوْلَا اَنْ اَشُقَّ عَلٰی اُمَّتِیْ لَاَمَرْتُهُمْ بِالسِّوَاكِ عِنْدَ كُلِّ صَلٰوةٍ. رواه مسلم، باب السواك، رقم: ٥٨٩

254. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अ मुझे यह ख़्याल न होता कि मेरी उम्मत मशक़्क़त में पड़ जाएगी, तो मैं उनको नमाज़ के वक़्त मिस्वाक करने का हुक्म देता। (मुस्लि

﴾255﴿ عَنْ اَبِیْ اَیُّوْبَ رَضِیَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: اَرْبَعٌ مِنْ سُنَنِ الْمُرْسَلِیْنَ: اَلْحَیَاءُ وَالتَّعَطُّرُ وَالسِّوَاكُ وَالنِّكَاحُ. رواه الترمذی وقال: حديث ابی ايوب حديث حسن غريب، باب ماجاء فی فضل التزويج والحث عليه، رقم: ١٠٨٠

255. हज़रत अबू ऐय्यूब ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : च चीज़ें पैग़म्बरों की सुन्नतों में से हैं। हया का होना, ख़ुश्बू लगाना, मिस्वाक करना और निकाह करना। (तिर्मि

﴾256﴿ عَنْ عَائِشَةَ رَضِیَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: عَشْرٌ مِنَ الْفِطْرَةِ: قَصُّ الشَّارِبِ، وَاِعْفَاءُ اللِّحْیَةِ، وَالسِّوَاكُ، وَاسْتِنْشَاقُ الْمَاءِ، وَقَصُّ الْاَظْفَارِ، وَغَسْلُ الْبَرَاجِمِ، وَنَتْفُ الْاِبِطِ، وَحَلْقُ الْعَانَةِ، وَانْتِقَاصُ الْمَاءِ قَالَ زَكَرِیَّا: قَالَ مُصْعَبٌ: وَنَسِیْتُ الْعَاشِرَةَ، اِلَّا اَنْ تَكُوْنَ الْمَضْمَضَةَ. رواه مسلم، باب خصال الفطرة، رقم: ٦٠٤

256. हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : दस चीज़ें अम्बिया अलैहिमुस्सलाम की सुन्नतों में से हैं। 1. मूछें काटन 2. दाढ़ी बढ़ाना, 3. मिस्वाक करना, 4. नाक में पानी डालकर साफ़ करना, 5. नाख़ू तराशना, 6. उंगलियों के जोड़ों को (और इसी तरह जिस्म में जहां-जहां मैल जमता है, मसलन कान और नाक के सुराख़ और बग़लों वग़ैरह का) एहतमाम से धोना, बग़ल के बाल उखेड़ना, 8. ज़ेरे नाफ़ बाल मूंडना 9. और पानी से इस्तिंजा करना। हदीस के रावी हज़रत मुसअब रहमतुल्लाह फ़रमाते हैं कि दसवीं चीज़ मैं भूल गय मेरा गुमान है कि दसवीं चीज़ कुल्ली करना है। (मुस्लिम)

﴾257﴿ عَنْ عَائِشَةَ رَضِیَ اللهُ عَنْهَا عَنِ النَّبِیِّ ﷺ قَالَ: اَلسِّوَاكُ مَطْهَرَةٌ لِلْفَمِ مَرْضَاةٌ لِلرَّبِّ. رواه النسائی، باب الترغيب فی السواك، رقم: ٥

257. हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : मिस्वाक मुंह को साफ़ करने वाली है और अल्लाह तआला की ख़ुशनूदी का ज़रिया है। (नसाई)

﴿258﴾ عَنْ أَبِي أُمَامَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: مَاجَاءَنِيْ جِبْرِيْلُ عَلَيْهِ السَّلَامُ قَطُّ إِلَّا أَمَرَنِيْ بِالسِّوَاكِ، لَقَدْ خَشِيْتُ أَنْ أُحْفِيَ مُقَدَّمَ فِيَّ. رواه احمد ٥/٢٦٣

258. हज़रत अबू उमामा ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जब भी जिबरील अलैहिस्सलाम मेरे पास आए, मुझे मिस्वाक करने की ताकीद की, यहां तक कि मुझे अंदेशा होने लगा कि मिस्वाक ज़्यादा करने की वजह से मैं अपने मसूढ़ों को छील न डालूं। (मुस्नद अहमद)

﴿259﴾ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ كَانَ لَا يَرْقُدُ مِنْ لَيْلٍ وَلَا نَهَارٍ فَيَسْتَيْقِظُ إِلَّا يَتَسَوَّكُ قَبْلَ أَنْ يَتَوَضَّأَ. رواه ابو داؤد، باب السواك لمن قام بالليل، رقم: ٥٧

259. हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ दिन या रात में जब भी सोकर उठते, तो वुज़ू करने से पहले मिस्वाक ज़रूर फ़रमाते। (अबूदाऊद)

﴿260﴾ عَنْ عَلِيٍّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: إِنَّ الْعَبْدَ إِذَا تَسَوَّكَ ثُمَّ قَامَ يُصَلِّي قَامَ الْمَلَكُ خَلْفَهُ فَيَسْتَمِعُ لِقِرَاءَتِهِ فَيَدْنُوْ مِنْهُ. أَوْ كَلِمَةً نَحْوَهَا. حَتَّى يَضَعَ فَاهُ عَلَى فِيْهِ، فَمَا يَخْرُجُ مِنْ فِيْهِ شَيْءٌ مِنَ الْقُرْآنِ إِلَّا صَارَ فِيْ جَوْفِ الْمَلَكِ، فَطَهِّرُوْا أَفْوَاهَكُمْ لِلْقُرْآنِ. رواه البزار ورجاله ثقات، مجمع الزوائد ٢/٢٦

260. हज़रत अली ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जब बन्दा मिस्वाक करके नमाज़ के लिए खड़ा होता है तो फ़रिश्ता उसके पीछे खड़ा हो जाता है और उसकी तिलावत ख़ूब ध्यान से सुनता है, फिर उसके बहुत क़रीब आ जाता है, यहां तक कि उसके मुंह पर अपना मुंह रख देता है। क़ुरआन मजीद का जो भी लफ़्ज़ उस नमाज़ी के मुंह से निकलता है, सीधा फ़रिश्ते के पेट में पहुंचता है (और इस तरह वह फ़रिश्तों का महबूब बन जाता है) इसलिए तुम अपने मुंह क़ुरआन मजीद की तिलावत के लिए साफ़-सुथरे रखो, यानी मिस्वाक का एहतमाम करो।

(बज़्ज़ार, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴾261﴿ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: رَكْعَتَانِ بِسِوَاكٍ أَفْضَلُ مِنْ سَبْعِيْنَ رَكْعَةً بِغَيْرِ سِوَاكٍ. رواه البزار ورجاله موثقون، مجمع الزوائد ٢/٢٦٣

261. हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : मिस्वाक करके दो रकअ़तें पढ़ना बग़ैर मिस्वाक किए सत्तर रकअ़तें पढ़ने से अफ़ज़ल है। (बज़्ज़ार, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴾262﴿ عَنْ حُذَيْفَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: كَانَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ إِذَا قَامَ لِيَتَهَجَّدَ، يَشُوْصُ فَاهُ بِالسِّوَاكِ. رواه مسلم، باب السواك، رقم: ٥٩٣

262. हज़रत हुज़ैफ़ा رضي الله عنه से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ जब तहज्जुद के लिए उठते तो मिस्वाक से अपने मुंह को अच्छी तरह रगड़ कर साफ़ करते। (मुस्लिम)

﴾263﴿ عَنْ شُرَيْحٍ رَحِمَهُ اللهُ قَالَ: سَأَلْتُ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا، قُلْتُ: بِأَيِّ شَيْءٍ كَانَ يَبْدَأُ النَّبِيُّ ﷺ إِذَا دَخَلَ بَيْتَهُ؟ قَالَتْ: بِالسِّوَاكِ. رواه مسلم، باب السواك، رقم: ٥٩٠

263. हज़रत शुरैह रहमतुल्लाहि अ़लैह फ़रमाते हैं मैंने उम्मुल मोमिनीन हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा से पूछा कि नबी करीम ﷺ जब घर में तशरीफ़ लाते, तो सबसे पहले क्या काम करते? उन्होंने फ़रमाया : सबसे पहले आप मिस्वाक करते थे। (मुस्लिम)

﴾264﴿ عَنْ زَيْدِ بْنِ خَالِدٍ الْجُهَنِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: مَا كَانَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ يَخْرُجُ مِنْ بَيْتِهِ لِشَيْءٍ مِنَ الصَّلَوَاتِ حَتَّى يَسْتَاكَ.

رواه الطبراني في الكبير ورجاله موثقون، مجمع الزوائد ٢/٢٦٦

264. हज़रत ज़ैद बिन ख़ालिद जुहनी رضي الله عنه से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ अपने घर से किसी नमाज़ के लिए उस वक़्त तक नहीं निकलते थे, जब तक मिस्वाक न फ़रमा लेते। (तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴾265﴿ عَنْ أَبِي خَيْرَةَ الصُّبَاحِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: كُنْتُ فِي الْوَفْدِ الَّذِيْنَ أَتَوْا رَسُوْلَ اللهِ ﷺ فَزَوَّدَنَا الْأَرَاكَ نَسْتَاكُ بِهِ، فَقُلْنَا: يَارَسُوْلَ اللهِ عِنْدَنَا الْجَرِيْدُ، وَلٰكِنَّا نَقْبَلُ كَرَامَتَكَ وَعَطِيَّتَكَ (الحديث) رواه الطبراني في الكبير واسناده حسن، مجمع الزوائد ٢/٢٦٨

265. हज़रत अबू ख़ैरा सुबाही رضي الله عنه फ़रमाते हैं कि मैं उस वफ़्द में शामिल था जो

रसूलुल्लाह ﷺ की ख़िदमत में हाज़िर हुआ था। आप ﷺ ने हमें पीलू के दरख़्त की लकड़ियां मिस्वाक करने के लिए तोशा में दीं। हमने अ़र्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! हमारे पास (मिस्वाक के लिए) खजूर के दरख़्त की टहनियां मौजूद हैं, लेकिन हम आपके इस इकराम और अ़तिय्या को क़ुबूल करते हैं। (तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

بسم الله الرحمن الرحيم

मस्जिद के फ़ज़ाइल व आमाल

क़ुरआनी आयतें

قَالَ اللّٰهُ تَعَالٰى: ﴿اِنَّمَا يَعْمُرُ مَسٰجِدَ اللّٰهِ مَنْ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَاَقَامَ الصَّلٰوةَ وَاٰتَى الزَّكٰوةَ وَلَمْ يَخْشَ اِلَّا اللّٰهَ قف فَعَسٰٓى اُولٰٓئِكَ اَنْ يَّكُوْنُوْا مِنَ الْمُهْتَدِيْنَ﴾

[التوبة:١٨]

अल्लाह तआ़ला की मस्जिदों को आबाद करना उन्हीं लोगों का काम है, जो अल्लाह तआ़ला पर, क़ियामत के दिन पर ईमान लाए और जिसने नमाज़ की पाबंदी की और ज़कात दी और (अल्लाह तआ़ला पर ऐसा तवक्कुल किया कि) सिवाए अल्लाह तआ़ला के किसी और से न डरे। ऐसे लोगों के बारे में उम्मीद है कि ये लोग हिदायत पाने वालों में से होंगे, यानी अल्लाह तआ़ला ने उन्हें हिदायत देने का वादा फ़रमाया है। (तौबा : 18)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿فِيْ بُيُوْتٍ اَذِنَ اللّٰهُ اَنْ تُرْفَعَ وَيُذْكَرَ فِيْهَا اسْمُهٗ لا يُسَبِّحُ لَهٗ فِيْهَا بِالْغُدُوِّ وَالْاٰصَالِ ، رِجَالٌ لا لَّا تُلْهِيْهِمْ تِجَارَةٌ وَّلَا بَيْعٌ عَنْ ذِكْرِ اللّٰهِ وَاِقَامِ الصَّلٰوةِ وَاِيْتَآءِ الزَّكٰوةِ لا يَخَافُوْنَ يَوْمًا تَتَقَلَّبُ فِيْهِ الْقُلُوْبُ وَالْاَبْصَارُ﴾ [النور:٣٦،٣٧]

(अल्लाह तआ़ला ने हिदायत वालों का हाल ब्यान फ़रमाया कि) वे ऐसे घरों में जाकर इबादत किया करते हैं जिनके बारे में अल्लाह तआ़ला ने हुक्म दिया है कि उन घरों का अदब किया जाए और उनमें अल्लाह तआ़ला का नाम

लिया जाए। उन घरों में ऐसे लोग सुबह व शाम अल्लाह तआ़ला की पाकी ब्यान करते हैं, जिन्हें अल्लाह तआ़ला की याद से और नमाज़ पढ़ने से और ज़कात देने से न किसी क़िस्म की ख़रीद ग़ाफ़िल करती है, न किसी क़िस्म की फ़रोख़्त, वे लोग ऐसे दिन यानी क़ियामत से डरते रहते हैं, जिस दिन बहुत से दिल पलट जाएंगे और बहुत-सी आंखें उलट जाएंगी।(नूर : 37-38)

फ़ायदा : उन घरों से मुराद मस्जिदें हैं और उनका अदब यह है कि उनमें जनाबत की हालत में दाख़िल न हुआ जाए, कोई नापाक चीज़ दाख़िल न की जाए, शोर न मचाया जाए, दुनिया के काम और दुनिया की बातें न की जाएं, बदबूदार चीज़ खा कर न जाया जाए।

(ब्यानुल क़ुरआन)

नबी ﷺ की हदीसें

﴿266﴾ عَنْ اَبِیْ هُرَیْرَةَ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ اَنَّ رَسُوْلَ اللّٰهِ ﷺ قَالَ: اَحَبُّ الْبِلَادِ اِلَى اللّٰهِ تَعَالٰی مَسَاجِدُهَا، وَاَبْغَضُ الْبِلَادِ اِلَی اللّٰهِ اَسْوَاقُهَا.

رواه مسلم، باب فضل الجلوس فی مصلاه... رقم: ۱۵۲۸

266. हज़रत अबू हुरैरह رضي الله عنه से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अल्लाह तआ़ला को सब जगहों से ज़्यादा महबूब मस्जिद हैं और सबसे ज़्यादा नापसन्द जगहें बाज़ार हैं। (मुस्लिम)

﴿267﴾ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُمَا قَالَ: اَلْمَسَاجِدُ بُیُوْتُ اللّٰهِ فِی الْاَرْضِ تُضِیْءُ لِاَهْلِ السَّمَاءِ کَمَا تُضِیْءُ نُجُوْمُ السَّمَاءِ لِاَهْلِ الْاَرْضِ.

رواه الطبرانی فی الکبیر ورجاله موثقون، مجمع الزوائد ۲/ ۱۱۰

267. हज़रत इब्ने अ़ब्बास رضي الله عنه फ़रमाते हैं कि मस्जिदें ज़मीन में अल्लाह तआ़ला के घर हैं। ये आसमान वालों के लिए ऐसे चमकती हैं, जैसा कि ज़मीन वालों के लिए आसमान के सितारे चमकते हैं। (तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿268﴾ عَنْ عُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ اَنَّهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللّٰهِ ﷺ یَقُوْلُ:

مَنْ بَنٰى مَسْجِدًا يُذْكَرُ فِيْهِ اسْمُ اللهِ، بَنَى اللهُ لَهُ بَيْتًا فِي الْجَنَّةِ.

رواه ابن حبان، قال المحقق: اسناده صحيح ٤٨٦/٤

268. हज़रत उमर बिन ख़त्ताब ؓ फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : जिसने कोई मस्जिद बनाई जिसमें अल्लाह तआला का नाम लिया जाता हो तो अल्लाह तआला उसके लिए जन्नत में एक महल बना देते हैं। (इब्ने हब्बान)

﴾269﴿ عَنْ اَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: مَنْ غَدَا اِلَى الْمَسْجِدِ وَرَاحَ اَعَدَّ اللهُ لَهُ نُزُلَهُ مِنَ الْجَنَّةِ كُلَّمَا غَدَا اَوْ رَاحَ.

رواه البخاري، باب فضل من غدا الى المسجد ..... رقم: ٦٦٢

269. हज़रत अबू हुरैरह ؓ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स सुबह और शाम मस्जिद जाता है अल्लाह तआला उसके लिए जन्नत में मेहमानी का इंतज़ाम फ़रमाते हैं, जितनी मर्तबा सुबह या शाम मस्जिद जाता है, उतनी ही मर्तबा अल्लाह तआला उसके लिए मेहमानी का इंतज़ाम फ़रमाते हैं। (बुख़ारी)

﴾270﴿ عَنْ اَبِي اُمَامَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: اَلْغُدُوُّ وَالرَّوَاحُ اِلَى الْمَسْجِدِ مِنَ الْجِهَادِ فِيْ سَبِيْلِ اللهِ.

رواه الطبراني في الكبير، وفيه: القاسم ابو عبد الرحمن ثقة وفيه اختلاف، مجمع الزوائد ١٤٧/٢

270. हज़रत अबू उमामा ؓ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : सुबह और शाम मस्जिद जाना अल्लाह तआला के रास्ते में जिहाद करने में दाख़िल है। (तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴾271﴿ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَمْرِو بْنِ الْعَاصِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ اَنَّهُ كَانَ اِذَا دَخَلَ الْمَسْجِدَ قَالَ: اَعُوْذُ بِاللهِ الْعَظِيْمِ وَبِوَجْهِهِ الْكَرِيْمِ وَسُلْطَانِهِ الْقَدِيْمِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ قَالَ: اَقَطْ؟ قُلْتُ: نَعَمْ، فَاِذَا قَالَ ذٰلِكَ، قَالَ الشَّيْطَانُ: حُفِظَ مِنِّيْ سَائِرَ الْيَوْمِ.

رواه ابو داود، باب ما يقول الرجل عند دخوله المسجد، رقم: ٤٦٦

271. हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस ؓ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ जब मस्जिद में दाख़िल होते, तो यह दुआ पढ़ते (अऊज़ु बिल्लाहिल अज़ीमि व

बिवज्हिहिल करीमि व सुल्तानिहिल क़दीमि मिनश्शैतानिर्रजीम०) "मैं अज़मत वाले अल्लाह की और उसकी करीम ज़ात की और उसकी न ख़त्म होने वाली बादशाहत की पनाह लेता हूं, शैतान मरदूद से" जब यह दुआ पढ़ी जाती है, तो शैतान कहता है मुझसे (यह शख़्स) पूरे दिन के लिए महफ़ूज़ हो गया। (अबूदाऊद)

﴿272﴾ عَنْ اَبِیْ سَعِیْدِ الْخُدْرِیِّ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: مَنْ اَلِفَ الْمَسْجِدَ اَلِفَهُ اللّٰهُ. رواه الطبراني في الاوسط وفيه: ابن لهيعة وفيه كلام، مجمع الزوائد ١٣٥/٢

272. हज़रत अबू सईद ख़ुदरी ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स मस्जिद से मुहब्बत रखता है, अल्लाह तआला उससे मुहब्बत फ़रमाते हैं। (तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿273﴾ عَنْ اَبِی الدَّرْدَاءِ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللّٰهِ ﷺ يَقُوْلُ: اَلْمَسْجِدُ بَيْتُ كُلِّ تَقِيٍّ، وَتَكَفَّلَ اللّٰهُ لِمَنْ كَانَ الْمَسْجِدُ بَيْتَهُ بِالرَّوْحِ وَالرَّحْمَةِ، وَالْجَوَازِ عَلَى الصِّرَاطِ اِلٰى رِضْوَانِ اللّٰهِ اِلَى الْجَنَّةِ. رواه الطبراني في الكبير والاوسط والبزار وقال: اسناده حسن، قلت: ورجال البزار كلهم رجال الصحيح، مجمع الزوائد ١٣٤/٢

273. हज़रत अबुद्दर्दा ﷺ से रिवायत है कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : मस्जिद हर मुत्तक़ी का घर है और अल्लाह तआला ने अपने ज़िम्मा लिया है कि जिसका घर मस्जिद हो, उसे राहत दूंगा; उस पर रहमत करूंगा; पुल सिरात का रास्ता आसान कर दूंगा, अपनी रज़ा नसीब करूंगा और उसे जन्नत अता करूंगा। (तबरानी, बज़्ज़ार, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿274﴾ عَنْ مُعَاذِ بْنِ جَبَلٍ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ اَنَّ نَبِیَّ اللّٰهِ ﷺ قَالَ: اِنَّ الشَّيْطَانَ ذِئْبُ الْاِنْسَانِ، كَذِئْبِ الْغَنَمِ، يَاْخُذُ الشَّاةَ الْقَاصِيَةَ وَالنَّاحِيَةَ، فَاِيَّاكُمْ وَالشِّعَابَ، وَعَلَيْكُمْ بِالْجَمَاعَةِ وَالْعَامَّةِ وَالْمَسْجِدِ. رواه احمد ٢٣٢/٥

274. हज़रत मुआज़ बिन जबल ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : शैतान इंसान का भेड़िया है, बकरियों के भेड़िये की तरह कि वह हर ऐसी बकरी को पकड़ लेता है जो रेवड़ से दूर हो, अलग-थलग हो, इसलिए घाटियों में अलाहिदा ठहरने से बचो। इज्तिमाइयत को, आम लोगों में रहने को और मस्जिद को लाज़िम पकड़ो। (मुस्नद अहमद)

﴿275﴾ عَنْ أَبِي سَعِيْدٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: إِذَا رَأَيْتُمُ الرَّجُلَ يَعْتَادُ الْمَسْجِدَ فَاشْهَدُوا لَهُ بِالْإِيْمَانِ، قَالَ اللهُ تَعَالَى: ﴿إِنَّمَا يَعْمُرُ مَسٰجِدَ اللهِ مَنْ اٰمَنَ بِاللهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ﴾ رواه الترمذي وقال: هذا حديث حسن غريب، باب ومن سورة التوبة، رقم: ٣٠٩٣

275. हज़रत अबू सईद ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जब तुम किसी को बकसरत मस्जिद में आने वाला देखो तो उसके ईमानदार होने की गवाही दो। अल्लाह तआला का इर्शाद है तर्जुमा : 'मस्जिदों को वही लोग आबाद करते हैं जो अल्लाह तआला पर और आख़िरत के दिन पर ईमान रखते हैं।' (तिर्मिज़ी)

﴿276﴾ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: مَا تَوَطَّنَ رَجُلٌ مُسْلِمٌ الْمَسَاجِدَ لِلصَّلَاةِ وَالذِّكْرِ، إِلَّا تَبَشْبَشَ اللهُ لَهُ كَمَا يَتَبَشْبَشُ أَهْلُ الْغَائِبِ بِغَائِبِهِمْ، إِذَا قَدِمَ عَلَيْهِمْ. رواه ابن ماجه، باب لزوم المساجد وانتظار الصلوة، رقم: ٨٠٠

276. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो मुसलमान नमाज़ और अल्लाह तआला के ज़िक्र के लिए मस्जिद को अपना ठिकाना बना लेता है तो अल्लाह तआला उससे ऐसे ख़ुश होते हैं, जैसे घर के लोग अपने किसी घर वाले के वापस आने पर ख़ुश होते हैं। (इब्ने माजा)

फ़ायदा : मस्जिद को ठिकाना बना लेने से मुराद मस्जिद से ख़ुसूसी ताल्लुक़ और मस्जिदों में कसरत से आना है।

﴿277﴾ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: مَا مِنْ رَجُلٍ كَانَ يُوَطِّنُ الْمَسَاجِدَ فَشَغَلَهُ أَمْرٌ أَوْ عِلَّةٌ، ثُمَّ عَادَ إِلَى مَا كَانَ، إِلَّا تَبَشْبَشَ اللهُ إِلَيْهِ كَمَا يَتَبَشْبَشُ أَهْلُ الْغَائِبِ بِغَائِبِهِمْ إِذَا قَدِمَ. رواه ابن خزيمة ١٨٦/١

277. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जिस शख़्स ने मस्जिदों को ठिकाना बनाया हुआ था, यानी मस्जिद में कसरत से आता जाता था फिर वह किसी काम में मशगूल हो गया या बीमारी की वजह से रुक गया, फिर दोबारा मस्जिद को उसी तरह ठिकाना बना लिया, तो अल्लाह तआला उसे देखकर ऐसे ख़ुश होते हैं, जैसे कि घर के लोग अपने किसी घर वाले के वापस आने पर ख़ुश होते हैं। (इब्ने ख़ुज़ैमा)

﴿278﴾ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: إِنَّ لِلْمَسَاجِدِ أَوْتَادًا،

الْمَلَائِكَةُ جُلَسَاؤُهُمْ، إِنْ غَابُوا يَفْتَقِدُونَهُمْ، وَإِنْ مَرِضُوا عَادُوهُمْ، وَإِنْ كَانُوا فِي حَاجَةٍ أَعَانُوهُمْ وَقَالَ ﷺ: جَلِيسُ الْمَسْجِدِ عَلَى ثَلَاثِ خِصَالٍ: أَخٍ مُسْتَفَادٍ، أَوْ كَلِمَةٍ مُحْكَمَةٍ، أَوْ رَحْمَةٍ مُنْتَظَرَةٍ. رواه احمد ٢/٤١٨

278. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो लोग कसरत से मस्जिदों में जमा रहते हैं वे मस्जिदों के खूंटे हैं। फ़रिश्ते उनके साथ बैठते हैं। अगर वे मस्जिदों में मौजूद न हों तो फ़रिश्ते उन्हें तलाश करते हैं। अगर वे बीमार हो जाएं तो फ़रिश्ते उनकी अयादत करते हैं। अगर वे किसी ज़रूरत के लिए जाएं तो फ़रिश्ते उनकी मदद करते हैं। आप ﷺ ने ये भी इर्शाद फ़रमाया : मस्जिद में बैठने वाला तीन फ़ायदों में से एक फ़ायदा हासिल करता है। किसी भाई से मुलाक़ात होती है जिससे कोई दीनी फ़ायदा हो जाता है या कोई हिकमत की बात सुनने को मिल जाती है या अल्लाह तआला की रहमत मिल जाती है जिसका हर मुसलमान को इंतज़ार रहता है। (मुस्नद अहमद)

﴿279﴾ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: أَمَرَ رَسُولُ اللهِ ﷺ بِبِنَاءِ الْمَسَاجِدِ فِي الدُّوْرِ، وَأَنْ تُنَظَّفَ وَتُطَيَّبَ. رواه ابو داؤد، باب اتخاذ المساجد في الدور، رقم ٤٥٥

279. हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने महल्लों में मस्जिदों के बनाने का हुक्म फ़रमाया और इस बात का भी हुक्म फ़रमाया : मस्जिदों को साफ़ सुथरा रखा जाए और उनमें खुशबू बसाई जाए। (अबूदाऊद)

﴿280﴾ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ امْرَأَةً كَانَتْ تَلْقُطُ الْقَذَى مِنَ الْمَسْجِدِ فَتُوُفِّيَتْ فَلَمْ يُؤْذَنِ النَّبِيُّ ﷺ بِدَفْنِهَا، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: إِذَا مَاتَ لَكُمْ مَيِّتٌ فَآذِنُونِي، وَصَلَّى عَلَيْهَا، وَقَالَ: إِنِّي رَأَيْتُهَا فِي الْجَنَّةِ لِمَا كَانَتْ تَلْقُطُ الْقَذَى مِنَ الْمَسْجِدِ.

رواه الطبراني في الكبير ورجاله رجال الصحيح، مجمع الزوائد ٢/١١٥

280. हज़रत अनस ﷺ फ़रमाते हैं कि एक औरत मस्जिद से कूड़ा करकट उठाती थी। उसका इंतक़ाल हो गया। नबी करीम ﷺ को दफ़न करने की इत्तिला नहीं दी गई। नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जब तुममें से किसी का इंतक़ाल हो जाए तो मुझे उसकी इत्तिला दे दिया करो। आप ﷺ ने उस औरत की नमाज़े जनाज़ा पढ़ी और इर्शाद फ़रमाया : मैंने उसे जन्नत में देखा, इसलिए कि वह मस्जिद से कूड़ा-करकट उठाती थी। (तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

हिन्दी किताबें – एक नज़र में

किताब का नाम	लेखक, अनुवादक	क़ीमत
क़ुरआन मजीद 101 (मुतर्जिम) सब्ज़	मौलाना फ़तेह मुहम्मद ख़ाँ जालन्धरी	130/-
मौत की याद	मौलाना मुहम्मद ज़करिया	20/-
रसूलुल्लाह सल्ल० की बातें व सलाम	हाफ़िज़ अब्दुस्सत्तार साहब	20/-
ख़्वाब की शरओ हैसियत	मौलाना मुहम्मद तक़ी उसमानी	6/-
नेक बीवी	मौलाना अशरफ़ अली थानवी रह०	8/-
सुबह का सितारा	मुहम्मद नसीम अहमद	15/-
इस्लामी नाम	जनाब हसन दीन साहब	40/-
अमलियात व तावीज़ाते सुब्हानी	मसाहिब अली हनफ़ी चिश्ती	36/-
किताबुल हज (मसाइल व मुख़्तसर तरीक़ा)	मौलाना आशिक़ इलाही बुलन्दशहरी	40/-
शौहर के हुक़ूक़ और उसकी हैसियत	मौलाना मुहम्मद तक़ी उसमानी	14/-
वज़ाइफ़ व अमलियाते रहमानी यानी अमलियाते मुहब्बत	अशफ़ाक़ हसन ख़ाँ	36/-
मर्दों और औरतों के मख़्सूस मसाइल	अताउर्रहमान साहब	10/-
बाहमी इख़्तिलाफ़ और उसकी राइज सूरतें	मौलाना मुहम्मद तक़ी उसमानी	6/-
अपनी फ़िक्र करें	मौलाना मुहम्मद तक़ी उसमानी	6/-
बीवी के हुक़ूक़ और उसकी शरओ हैसियत	मौलाना मुहम्मद तक़ी उसमानी	15/-
रजब का महीना	मौलाना मुहम्मद तक़ी उसमानी	5/-
मुकम्मल नमाज़ मअ् छः नमाज़	मौलाना आशिक़ इलाही बुलन्दशहरी	6/-
मुसलमान ख़्वातीन	मौलाना इदरीस अंसारी	20/-
दीन की हक़ीक़त तस्लीम व रज़ा	मौलाना मुहम्मद तक़ी उसमानी	8/-
सलाम करने के आदाब	मौलाना मुहम्मद तक़ी उसमानी	5/-
ज़बान की हिफ़ाज़त कीजिए	मौलाना मुहम्मद तक़ी उसमानी	6/-
रोज़ा हमसे क्या मुतालिबा करता है?	मौलाना मुहम्मद तक़ी उसमानी	7/-

بسم الله الرحمن الرحيم

इल्म व ज़िक्र

इल्म

अल्लाह तआ़ला की ज़ाते आ़ली से बराहे रास्त इस्तिफ़ादा के लिए अल्लाह तआ़ला के अवामिर को हज़रत मुहम्मद ﷺ के तरीक़े पर पूरा करने की ग़रज़ से अल्लाह वाला इल्म हासिल करना, यानी इस बात की तहक़ीक़ करना कि अल्लाह तआ़ला मुझसे इस हाल में क्या चाहते हैं।

क़ुरआनी आयतें

قَالَ اللهُ تَعَالَى ﴿كَمَآ اَرْسَلْنَا فِيْكُمْ رَسُوْلًا مِّنْكُمْ يَتْلُوْا عَلَيْكُمْ اٰيٰتِنَا وَيُزَكِّيْكُمْ وَيُعَلِّمُكُمُ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ وَيُعَلِّمُكُمْ مَّا لَمْ تَكُوْنُوْا تَعْلَمُوْنَ﴾ [البقرة:١٥١]

अल्लाह तआ़ला का इर्शाद है : जिस तरह (हमने काबा को क़िब्ला मुक़र्रर करके तुम पर अपनी नेमत को मुकम्मल किया, उसी तरह) हमने तुम लोगों में एक (अज़ीमुश्शान) रसूल भेजा, जो पाक करते हैं, तुमको क़ुरआन करीम की तालीम देते हैं, और इस क़ुरआन करीम की मुराद और अपनी सुन्नत और तरीक़े की (भी) तालीम देते हैं और तुमको ऐसी (मुफ़ीद) बातों की तालीम देते हैं, जिनकी तुमको ख़बर भी न थी। (बक़रः 151)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿وَاَنْزَلَ اللهُ عَلَيْكَ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ وَعَلَّمَكَ مَا لَمْ تَكُنْ تَعْلَمُ ۭ وَكَانَ فَضْلُ اللهِ عَلَيْكَ عَظِيْمًا﴾ [النساء:١١٣]

रसूलुल्लाह ﷺ से ख़िताब है : अल्लाह तआला ने आप पर किताब और इल्म की बातें नाज़िल फ़रमाईं और आपको वे बातें सिखाई हैं, जो आप न जानते थे और आप पर अल्लाह तआला का बड़ा फ़ज़्ल है। (निसा : 113)

وَقَالَ تَعَالَى: ﴿وَقُلْ رَّبِّ زِدْنِي عِلْمًا﴾ [طٰه: ١١٤]

रसूलुल्लाह ﷺ से ख़िताब है : और आप यह दुआ कीजिए कि ऐ मेरे रब! मेरा इल्म बढ़ा दीजिए। (ताहा : 114)

وَقَالَ تَعَالَى: ﴿وَلَقَدْ اٰتَيْنَا دَاوٗدَ وَسُلَيْمٰنَ عِلْمًا ۚ وَقَالَا الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ فَضَّلَنَا عَلٰى كَثِيْرٍ مِّنْ عِبَادِهِ الْمُؤْمِنِيْنَ﴾ [النمل: ١٥]

अल्लाह तआला का इर्शाद है : और बिला शुब्हा हमने दाऊद और सुलैमान को इल्म अता फ़रमाया और इस पर उन दोनों नबियों ने कहा कि सब तारीफ़ें उस अल्लाह तआला के लिए हैं, जिन्होंने हमें अपने बहुत से ईमान वाले बन्दों पर फ़ज़ीलत दी। (नमल : 115)

وَقَالَ تَعَالَى: ﴿وَتِلْكَ الْاَمْثَالُ نَضْرِبُهَا لِلنَّاسِ ۚ وَمَا يَعْقِلُهَآ اِلَّا الْعٰلِمُوْنَ﴾ [العنكبوت: ٤٣]

अल्लाह तआला का इर्शाद है : और हम ये मिसालें लोगों के लिए ब्यान करते हैं, (लेकिन) अक़्ल से काम लेने वाले ही इल्म वाले हैं। (अंकबूत : 43)

وَقَالَ تَعَالَى: ﴿اِنَّمَا يَخْشَى اللّٰهَ مِنْ عِبَادِهِ الْعُلَمٰٓؤُا﴾ [فاطر: ٢٨]

अल्लाह तआला का इर्शाद है : बेशक अल्लाह तआला से उनके वही बन्दे डरते हैं जो उनकी अज़मत का इल्म रखते हैं। (फ़ातिर : 28)

وَقَالَ تَعَالَى: ﴿قُلْ هَلْ يَسْتَوِي الَّذِيْنَ يَعْلَمُوْنَ وَالَّذِيْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ﴾ [الزمر: ٩]

रसूलुल्लाह ﷺ से ख़िताब है : आप कह दीजिए कि क्या इल्म वाले और बेइल्म बराबर हो सकते हैं? (ज़ुमर : 9)

وَقَالَ تَعَالَى: ﴿يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِذَا قِيْلَ لَكُمْ تَفَسَّحُوْا فِي الْمَجٰلِسِ فَافْسَحُوْا
يَفْسَحِ اللّٰهُ لَكُمْ ۚ وَاِذَا قِيْلَ انْشُزُوْا فَانْشُزُوْا يَرْفَعِ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ ۙ

﴿وَالَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ دَرَجٰتٍ ط وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ﴾ [المجادلة:١١]

अल्लाह तआला का इर्शाद है : ईमान वालो! जब तुम से यह कहा जए कि मज्लिस में लोगों के बैठने के लिए गुंजाइश कर दो तो तुम आने वाले को जगह दे दिया करो, अल्लाह तआला तुमको जन्नत में खुली जगह देंगे। और जब किसी ज़रूरत की वजह से तुम्हें कहा जाए कि मज्लिस से उठ जाओ, तो उठ जाया करो, अल्लाह तआला (इस हुक्म को इसी तरह दूसरे हुक्मों को, मानने की वजह से) तुम में से ईमान वालों के, और जिन्हें इल्म (दीन) दिया गया है उनके दर्जे बुलन्द करेंगे और जो कुछ तुम करते हो, अल्लाह तआला उससे बाख़बर हैं। (मुजादलः 11)

وَقَالَ تَعالىٰ: ﴿وَلَا تَلْبِسُوا الْحَقَّ بِالْبَاطِلِ وَتَكْتُمُوا الْحَقَّ وَاَنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ﴾ [البقرة ٤٢]

अल्लाह तआला का इर्शाद है : और सच में झुठ को न मिलाओ और जान-बूझ कर हक़ को यानी शरई हुक्मों को न छुपाओ। (बक़रः 42)

وَقَالَ تَعَالىٰ: ﴿اَتَاْمُرُوْنَ النَّاسَ بِالْبِرِّ وَتَنْسَوْنَ اَنْفُسَكُمْ وَاَنْتُمْ تَتْلُوْنَ الْكِتٰبَ ط اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ﴾ [البقرة: ٤٤]

अल्लाह तआला का इर्शाद है : क्या (ग़ज़ब है कि) तुम, लोगों को तो नेकी का हुक्म करते हो और अपनी ख़बर भी नहीं लेते, हालांकि तुम किताब की तिलावत करते हो (जिसका तक़ाज़ा यह था कि तुम इल्म पर अमल करते) तो फिर क्या तुम इतना भी नहीं समझते? (बक़रः 44)

وَقَالَ تَعَالىٰ: ﴿وَمَا اُرِيْدُ اَنْ اُخَالِفَكُمْ اِلٰى مَا اَنْهٰكُمْ عَنْهُ﴾ [هود: ٨٨]

हज़रत शुऐब अलैहिस्सलाम ने अपनी क़ौम से फ़रमाया : (और मैं जिस तरह इन बातों की तुमको तालीम करता हूं, ख़ुद भी तो उसपर अमल करता हूं) और मैं यह नहीं चाहता कि जिस काम से तुम्हें मना करूं मैं ख़ुद उसे करूं। (हूद : 88)

नबी ﷺ की हदीसें

﴿1﴾ عَنْ اَبِیْ مُوْسٰی رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ عَنِ النَّبِیِّ ﷺ قَالَ: مَثَلُ مَابَعَثَنِیَ اللّٰہُ مِنَ الْھُدٰی وَالْعِلْمِ کَمَثَلِ الْغَیْثِ الْکَثِیْرِ اَصَابَ اَرْضًا، فَکَانَ مِنْھَا نَقِیَّۃٌ، قَبِلَتِ الْمَاءَ، فَاَنْبَتَتِ الْکَلَا وَالْعُشْبَ الْکَثِیْرَ، وَکَانَتْ مِنْھَا اَجَادِبُ، اَمْسَکَتِ الْمَاءَ، فَنَفَعَ اللّٰہُ بِھَا النَّاسَ فَشَرِبُوْا وَسَقَوْا وَزَرَعُوْا، وَاَصَابَ مِنْھَا طَائِفَۃً اُخْرٰی، اِنَّمَا ھِیَ قِیْعَانٌ لَا تُمْسِکُ مَاءً وَلَا تُنْبِتُ کَلَأً، فَذٰلِکَ مَثَلُ مَنْ فَقُہَ فِیْ دِیْنِ اللّٰہِ وَنَفَعَہٗ مَا بَعَثَنِیَ اللّٰہُ بِہٖ فَعَلِمَ وَعَلَّمَ، وَمَثَلُ مَنْ لَمْ یَرْفَعْ بِذٰلِکَ رَاْسًا وَلَمْ یَقْبَلْ ھُدَی اللّٰہِ الَّذِیْ اُرْسِلْتُ بِہٖ۔

رواہ البخاری، باب فضل من علم و علّم، رقم: ۷۹

1. हज़रत अबू मूसा ؓ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अल्लाह तआ़ला ने मुझे जिस इल्म व हिदायत के साथ भेजा है उसकी मिसाल उस बारिश की तरह है जो किसी ज़मीन पर ख़ूब बरसे। (और जिस ज़मीन पर बारिश बरसी वह तीन तरह की थी।) 1. उसका एक टुकड़ा उम्दा था, जिसने पानी को अपने अंदर जज़्ब कर लिया, फिर ख़ूब घास और सब्ज़ा उगाया। 2. ज़मीन का एक (दूसरा) टुकड़ा सख़्त था (जिसने पानी को जज़्ब तो नहीं किया, लेकिन) उसके ऊपर पानी जमा हो गया, अल्लाह तआ़ला ने उससे भी लोगों को नफ़ा पहुंचाया। उन्होंने ख़ुद भी पिया, जानवरों को भी पिलाया और खेतों को भी सैराब किया 3. यह बारिश ज़मीन के ऐसे टुकड़ों पर भी बरसी जो चटयल मैदान ही थे, जिसने न पानी जमा किया और न ही घास उगाई।

(उसी तरह लोग भी तीन क़िस्म के होते हैं, पहली मिसाल) उस शख़्स की है जिसने दीन में समझ हासिल की और जिस हिदायत को दे कर अल्लाह तआ़ला ने मुझे भेजा है अल्लाह तआ़ला ने उसे उस हिदायत से नफ़ा पहुंचाया, उसने ख़ुद भी सीखा और दूसरों को भी सिखाया, (दूसरी मिसाल उस शख़्स की है जिसने ख़ुद तो फ़ायदा नहीं उठाया मगर दूसरे लोगों ने उससे फ़ायदा हासिल किया), (तीसरी मिसाल) उस शख़्स की है जिसने उसकी तरफ़ सर उठा कर भी न देखा और न अल्लाह तआ़ला की इस हिदायत को क़ुबूल किया जिसके साथ अल्लाह तआ़ला ने मुझे भेजा है। (बुख़ारी)

﴿ 2 ﴾ عَنْ عُثْمَانَ بْنِ عَفَّانَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ خَيْرُكُمْ مَنْ تَعَلَّمَ الْقُرْآنَ وَ عَلَّمَهُ.

رواه الترمذي وقال: هذا حديث حسن صحيح، باب ماجاء في تعليم القرآن، رقم: ٢٩٠٧

2. हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : तुममें सबसे बेहतर शख़्स वह है जो क़ुरआन शरीफ़ सीखे और सिखाए। (तिर्मिज़ी)

﴿ 3 ﴾ عَنْ بُرَيْدَةَ الْأَسْلَمِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَنْ قَرَأَ الْقُرْآنَ وَ تَعَلَّمَهُ وَعَمِلَ بِهِ أُلْبِسَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ تَاجًا مِنْ نُوْرٍ ضَوْؤُهُ مِثْلُ ضَوْءِ الشَّمْسِ، وَيُكْسَى وَالِدَيْهِ حُلَّتَانِ لَا يَقُوْمُ بِهِمَا الدُّنْيَا، فَيَقُوْلَانِ بِمَا كُسِيْنَا هٰذَا؟ فَيُقَالُ بِأَخْذِ وَلَدِكُمَا الْقُرْآنَ.

رواه الحاكم وقال: هذا حديث صحيح على شرط مسلم ولم يخرجاه ووافقه الذهبي ١/٥٦٨

3. हज़रत बुरैदा अस्लमी ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स क़ुरआन शरीफ़ पढ़े, उसे सीखे और उस पर अमल करे, उसको क़ियामत के दिन ताज पहनाया जाएगा जो नूर का बना हुआ होगा, उसकी रौशनी सूरज की रौशनी की तरह होगी। उसके वालिदैन को ऐसे दो जोड़े पहनाए जाएंगे कि तमाम दुनिया उसका मुक़ाबला नहीं कर सकती। वे अ़र्ज़ करेंगे, ये जोड़े हमें किस वजह से पनाए गए? इर्शाद होगा : तुम्हारे बच्चे के क़ुरआन शरीफ़ पढ़ने के बदले में। (मुस्तदरक हाकिम)

﴿ 4 ﴾ عَنْ مُعَاذٍ الْجُهَنِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: مَنْ قَرَأَ الْقُرْآنَ، وَعَمِلَ بِمَا فِيْهِ أُلْبِسَ وَالِدَاهُ تَاجًا يَوْمَ الْقِيَامَةِ، ضَوْءُهُ أَحْسَنُ مِنْ ضَوْءِ الشَّمْسِ فِي بُيُوْتِ الدُّنْيَا، لَوْ كَانَتْ فِيْكُمْ فَمَا ظَنُّكُمْ بِالَّذِيْ عَمِلَ بِهٰذَا.

رواه ابو داؤد، باب في ثواب قراءة القرآن، رقم: ١٤٥٣

4. हज़रत मुआज़ जुहनी ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स क़ुरआन शरीफ़ पढ़े और उस पर अमल करे, उसके वालिदैन को क़ियामत के दिन एक ताज पहनाया जाएगा जिसकी रौशनी सूरज की रौशनी से भी ज़्यादा होगी। फिर अगर वह सूरज तुम्हारे घरों में तुलू हो, (तो जितनी रौशनी वह फैलाएगा उस ताज की रौशनी उससे भी ज़्यादा होगी) तो तुम्हारा उस शख़्स के बारे में क्या गुमान है जो ख़ुद क़ुरआन शरीफ़ पर अमल करने वाला हो, यानी जब वालिदैन के लिए यह इनाम है तो अमल करने वाले का इनाम उससे कहीं ज़्यादा होगा। (अबूदाऊद)

﴿ 5 ﴾ عَنْ عَبْدِاللهِ بْنِ عَمْرِو بْنِ الْعَاصِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: مَنْ قَرَأَ الْقُرْآنَ فَقَدِ اسْتَدْرَجَ النُّبُوَّةَ بَيْنَ جَنْبَيْهِ غَيْرَ أَنَّهُ لَا يُوْحَى إِلَيْهِ، لَا يَنْبَغِيْ لِصَاحِبِ الْقُرْآنِ أَنْ يَجِدَ مَعَ مَنْ وَجَدَ، وَلَا يَجْهَلَ مَعَ مَنْ جَهِلَ، وَفِيْ جَوْفِهِ كَلَامُ اللهِ.

رواه الحاكم وقال: صحيح الاسناد، الترغيب ٢/٣٥٢

5. हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ने इर्शाद फ़रमाया : जिस शख़्स ने कलामुल्लाह शरीफ़ पढ़ा उसने उलूमे नुबुव्वत को अपनी पसलियों के दर्मियान ले लिया, गो उसकी तरफ़ वह्य नहीं भेजी जाती। क़ुरआन के हाफ़िज़ के लिए मुनासिब नहीं कि ग़ुस्सा करने वालों के साथ ग़ुस्सा से पेश आए या जाहिलाना सुलूक करने वालों के साथ जिहालत का सुलूक करे, जबकि वह अपने अंदर अल्लाह तआला का कलाम लिए हुए है। (मुस्तदरक हाकिम, तर्ग़ीब)

﴿ 6 ﴾ عَنْ جَابِرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: الْعِلْمُ عِلْمَانِ: عِلْمٌ فِي الْقَلْبِ فَذَاكَ الْعِلْمُ النَّافِعُ، وَعِلْمٌ عَلَى اللِّسَانِ فَذَاكَ حُجَّةُ اللهِ عَلَى ابْنِ آدَمَ.

رواه الحافظ ابوبكر الخطيب في تاريخه باسناد حسن، الترغيب ١/١٠٣

6. हज़रत जाबिर ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : इल्म दो तरह का होता है। एक वह इल्म है जो दिल में उतर जाए, वही इल्म, नाफ़ेअ् है और दूसरा वह इल्म है जो सिर्फ़ ज़बान पर हो यानी अमल और इख़्लास से ख़ाली हो तो यह अल्लाह तआला की तरफ़ से इंसान के ख़िलाफ़ (उसके मुज्रिम होने की) दलील है, यानी यह इल्म इल्ज़ाम देगा कि जानने के बावजूद अमल क्यों नहीं किया। (तर्ग़ीब)

﴿ 7 ﴾ عَنْ عُقْبَةَ بْنِ عَامِرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: خَرَجَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ وَنَحْنُ فِي الصُّفَّةِ فَقَالَ: أَيُّكُمْ يُحِبُّ أَنْ يَغْدُوَ كُلَّ يَوْمٍ إِلَى بُطْحَانَ أَوْ إِلَى الْعَقِيْقِ فَيَأْتِيَ مِنْهُ بِنَاقَتَيْنِ كَوْمَاوَيْنِ، فِيْ غَيْرِ إِثْمٍ وَلَا قَطْعِ رَحِمٍ؟ فَقُلْنَا: يَا رَسُوْلَ اللهِ! نُحِبُّ ذٰلِكَ قَالَ: أَفَلَا يَغْدُوْ أَحَدُكُمْ إِلَى الْمَسْجِدِ فَيَعْلَمُ أَوْ يَقْرَأُ آيَتَيْنِ مِنْ كِتَابِ اللهِ عَزَّوَجَلَّ خَيْرٌ لَهُ مِنْ نَاقَتَيْنِ، وَثَلَاثٌ خَيْرٌ لَهُ مِنْ ثَلَاثٍ، وَأَرْبَعٌ خَيْرٌ لَهُ مِنْ أَرْبَعٍ، وَمِنْ أَعْدَادِهِنَّ مِنَ الْإِبِلِ؟

رواه مسلم، باب فضل قراءة القرآن... رقم: ١٨٧٣

7. हज़रत उक़्बा बिन आमिर ﷺ फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ तशरीफ़ लाए।

हम लोग सुफ़्फ़ा में बैठे थे। आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : तुममें से कौन शख़्स उसको पसन्द करता है कि रोज़ाना सुबह बाज़ारे बुतहान या अ़क़ीक़ में जाए और दो उम्दा ऊंटनियां बग़ैर किसी गुनाह (मसलन, चोरी वग़ैरह) और बग़ैर क़तारहमी के ले आए? हमने अ़र्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! उसको तो हम में से हर शख़्स पसन्द करेगा। रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : तुम्हारा सुबह के वक़्त मस्जिद में जाकर क़ुरआन की दो आयतों का सीखना या पढ़ना दो ऊंटनियों से, तीन आयतों का तीन ऊंटनियों से और चार का चार से अफ़ज़ल है और उनके बराबर ऊंटों से अफ़ज़ल है।

(मुस्लिम)

फ़ायदा : हदीस का मतलब यह है कि आयतों की तादाद ऊंटनियों और ऊंटों की तादाद से अफ़ज़ल है, मसलन एक आयत एक ऊंटनी, एक ऊंट दोनों से अफ़ज़ल है।

﴿ 8 ﴾ عَنْ مُعَاوِيَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ يَقُوْلُ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقُوْلُ: مَنْ يُرِدِ اللهُ بِهٖ خَيْرًا يُفَقِّهْهُ فِي الدِّيْنِ. وَاِنَّمَا اَنَا قَاسِمٌ وَاللهُ يُعْطِيْ.

(الحديث) رواه البخاري، باب من يرد الله به خيرا، رقم: ٧١

8. हज़रत मुआ़विया ؓ फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : अल्लाह तआ़ला जिस शख़्स के साथ भलाई का इरादा फ़रमाते हैं, उसे दीन की समझ अ़ता फ़रमाते हैं। मैं तो सिर्फ़ तक़सीम करने वाला हूं, जबकि अल्लाह तआ़ला अ़ता करने वाले हैं। (बुख़ारी)

फ़ायदा : हदीस शरीफ़ के दूसरे जुमले का मतलब यह है कि रसूलुल्लाह ﷺ इल्म के तक़सीम करने वाले हैं और अल्लाह तआ़ला उस इल्म की समझ, उस में ग़ौर व फ़िक्र और उसके मुताबिक़ अ़मल की तौफ़ीक़ देने वाले हैं।

(मिरक़ात)

﴿ 9 ﴾ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: ضَمَّنِيْ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ وَقَالَ: اَللّٰهُمَّ عَلِّمْهُ الْكِتَابَ.

رواه البخاري، باب قول النبي ﷺ اللهم علمه الكتاب، رقم: ٧٥

9. हज़रत इब्ने अ़ब्बास ؓ फ़रमाते हैं एक मर्तबा रसूलुल्लाह ﷺ ने मुझे अपने सीने से लगाया और यह दुआ़ दी : या अल्लाह! इसे क़ुरआन का इल्म अ़ता फ़रमा दीजिए।

(बुख़ारी)

﴿ 10 ﴾ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: إِنَّ مِنْ أَشْرَاطِ السَّاعَةِ أَنْ يُرْفَعَ الْعِلْمُ، وَيَثْبُتَ الْجَهْلُ، وَيُشْرَبَ الْخَمْرُ، وَ يَظْهَرَ الزِّنَا.

رواه البخاري،باب رفع العلم وظهور الجهل، رقم: ٨٠

10. हज़रत अनस ﷺ फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : क़ियामत की अलामतों में से यह है कि इल्म उठा लिया जाएगा, जिहालत आ जाएगी, शराब (खुल्लम खुल्ला) पी जाएगी और ज़िना फैल जाएगा। (बुख़ारी)

﴿ 11 ﴾ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمَا قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللّٰهِ ﷺ يَقُوْلُ: بَيْنَا أَنَا نَائِمٌ أُتِيْتُ بِقَدَحِ لَبَنٍ، فَشَرِبْتُ مِنْهُ حَتّٰى إِنِّيْ لَأَرَى الرِّيَّ يَخْرُجُ فِيْ أَظَافِيْرِيْ، ثُمَّ أَعْطَيْتُ فَضْلِيْ يَعْنِيْ عُمَرَ قَالُوْا: فَمَا أَوَّلْتَهُ يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ؟ قَالَ: الْعِلْمَ.

رواه البخاري، باب اللبن، رقم: ٧٠٠٦

11. हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर ﷺ फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : मैं एक मर्तबा सो रहा था कि (इसी हालत में) मुझे दूध का प्याला पेश किया गया। मैंने उससे इतना पिया कि मैं अपने नाख़ूनों तक से सैराबी (के आसार) निकलते हुए महसूस कर रहा था। फिर मैंने अपना बचा हुआ दूध उमर को दिया। सहाबा ﷺ ने दरयाफ़्त किया, आपने उसकी क्या ताबीर की? इर्शाद फ़रमाया : इल्म। यानी उमर ﷺ को रसूलुल्लाह ﷺ के उलूम में से भरपूर हिस्सा मिलेगा। (बुख़ारी)

﴿ 12 ﴾ عَنْ أَبِيْ سَعِيْدٍ الْخُدْرِيِّ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ عَنْ رَسُوْلِ اللّٰهِ ﷺ قَالَ: لَنْ يَشْبَعَ الْمُؤْمِنُ مِنْ خَيْرٍ يَسْمَعُهُ، حَتّٰى يَكُوْنَ مُنْتَهَاهُ الْجَنَّةُ.

رواه الترمذي و قال: هذا حديث حسن غريب، باب ماجاء في فضل الفقه على العبادة،رقم: ٢٦٨٦

12. हज़रत अबू सईद ख़ुदरी ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : मोमिन भलाई (यानी इल्म) से कभी सैर नहीं होता। वह इल्म की बातों को सुन कर सीखता रहता है (यहां तक कि उसे मौत आ जाती है) और जन्नत में दाख़िल हो जाता है। (तिर्मिज़ी)

﴿ 13 ﴾ عَنْ أَبِيْ ذَرٍّ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ لِيْ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: يَا أَبَا ذَرٍّ! لَأَنْ تَغْدُوَ فَتَعَلَّمَ آيَةً مِنْ كِتَابِ اللّٰهِ، خَيْرٌ لَّكَ مِنْ أَنْ تُصَلِّيَ مِائَةَ رَكْعَةٍ، وَ لَأَنْ تَغْدُوَ فَتَعَلَّمَ بَابًا مِنَ الْعِلْمِ، عُمِلَ بِهِ أَوْ لَمْ يُعْمَلْ، خَيْرٌ مِنْ أَنْ تُصَلِّيَ أَلْفَ رَكْعَةٍ.

رواه ابن ماجه، باب فضل من تعلم القرآن و علمه، رقم: ٢١٩

13. हज़रत अबूज़र ﷺ फ़रमाते हैं कि नबी करीम ﷺ ने मुझसे इर्शाद फ़रमाया : अबूज़र! अगर तुम सुबह जाकर एक आयत कलामुल्लाह शरीफ़ की सीख लो, तो नफ़्लों की सौ रकअ़त से अफ़ज़ल है और अगर एक बाब इल्म का सीख लो ख़्वाह वह उस वक़्त का अ़मल हो या न हो (मसलन तयम्मुम के मसाइल) तो हज़ार रकअ़त नफ़्ल पढ़ने से बेहतर है। (इब्ने माजा)

﴿ 14 ﴾ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُولُ: مَنْ جَاءَ مَسْجِدِي هٰذَا، لَمْ يَأْتِهِ إِلَّا لِخَيْرٍ يَتَعَلَّمُهُ أَوْ يُعَلِّمُهُ، فَهُوَ بِمَنْزِلَةِ الْمُجَاهِدِ فِي سَبِيلِ اللهِ، وَمَنْ جَاءَ لِغَيْرِ ذٰلِكَ فَهُوَ بِمَنْزِلَةِ الرَّجُلِ يَنْظُرُ إِلَى مَتَاعِ غَيْرِهِ.

رواه ابن ماجه، باب فضل العلماء......رقم: ٢٢٧

14. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : जो मेरी इस मस्जिद यानी मस्जिदे नब्वी में सिर्फ़ किसी ख़ैर की बात को सिखाने या सीखाने के लिए आए, तो वह (सवाब में) अल्लाह तआ़ला के रास्ते में जिहाद करने वाले के दर्जे में है और जो उसके अलावा किसी और ग़रज़ से आए तो वह उस शख़्स की तरह है, जो दूसरे के साज व सामान को देख रहा हो (और ज़ाहिर है कि दूसरे की चीज़ों को देखने से अपना कोई फ़ायदा नहीं)। (इब्ने माजा)

फ़ायदा : हदीस शरीफ़ में मज़्कूरा फ़ज़ीलत तमाम मस्जिद के लिए है क्योंकि मस्जिदें, मस्जिदे नब्वी की ताबेअ़ हैं। (इनजाहुल हाजः)

﴿ 15 ﴾ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ يَقُوْلُ: سَمِعْتُ أَبَا الْقَاسِمِ ﷺ يَقُوْلُ: خَيْرُكُمْ أَحَاسِنُكُمْ أَخْلَاقًا إِذَا فَقُهُوْا. رواه ابن حبان، قال المحقق: اسناده صحيح على شرط مسلم ١/٢٩٤

15. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ फ़रमाते हैं कि मैंने अबू क़ासिम ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : तुममें सबसे बेहतर वे लोग हैं, जो तुममें सबसे अच्छे अख़्लाक़ वाले हैं जब कि साथ-साथ उनमें दीन की समझ भी हो। (इब्ने हब्बान)

﴿ 16 ﴾ عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِاللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: النَّاسُ مَعَادِنُ كَمَعَادِنِ الذَّهَبِ وَالْفِضَّةِ، فَخِيَارُهُمْ فِي الْجَاهِلِيَّةِ خِيَارُهُمْ فِي الْإِسْلَامِ إِذَا فَقُهُوْا.

(الحديث) رواه احمد ٢/٥٣٩

16. हज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद

फ़रमाया : लोग खानों की तरह हैं जिस तरह सोने चांदी की खानें होती हैं। जो लोग इस्लाम लाने से पहले बेहतर रहे, वे लोग इस्लाम के ज़माने में भी बेहतर हैं, जबकि उनमें दीन की समझ हो। (मुस्नद अहमद)

फ़ायदा : इस हदीस शरीफ़ में इंसानों को खानों के साथ तशबीह दी गई है। जिस तरह मुख़्तलिफ़ खानों में मुख़्तलिफ़ मादनियात होती हैं। बाज़ ज़्यादा क़ीमती, जैसे सोना चांदी, बाज़ कम क़ीमती जैसे चूना और कोयला। इसी तरह मुख़्तलिफ़ इंसानों में मुख़्तलिफ़ आदतें व सिफ़तें होती हैं, जिनकी वजह से बाज़ ऊंचे दर्जे के होते हैं और बाज़ कम दर्जे के होते हैं। फिर जिस तरह सोना चांदी जब तक खान में पड़ा रहता है उसकी क़ीमत वह नहीं होती जो खान से निकलने के बाद होती है इसी तरह जब तक आदमी कुफ़्र की ज़ुलमत में छुपा रहता है, ख़्वाह उसके अन्दर कितनी ही सख़ावत हो, कितनी ही शुजाअत हो, उसकी वह क़ीमत नहीं होती जो इस्लाम लाने के बाद दीन की समझ-बूझ हासिल कर लेने से होती है। (मज़ाहिरे हक़)

﴿ 17 ﴾ عَنْ اَبِیْ اُمَامَةَ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِیِّ ﷺ قَالَ: مَنْ غَدَا اِلَی الْمَسْجِدِ لَا يُرِيْدُ اِلَّا اَنْ يَتَعَلَّمَ خَيْرًا، اَوْ يُعَلِّمَهُ، كَانَ لَهُ كَاَجْرِ حَاجٍّ تَامًّا حَجَّتُهُ.

رواه الطبرانی فی الکبیر ورجاله موثقون کلهم، مجمع الزوائد ۱/۳۲۹

17. हज़रत अबू उमामा ﷺ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स ख़ैर की बात सीखने या सिखाने के लिए मस्जिद जाए, तो उसका सवाब उस हाजी के सवाब की तरह है जिसका हज कामिल हो। (तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿ 18 ﴾ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُمَا عَنِ النَّبِیِّ ﷺ قَالَ: عَلِّمُوْا وَيَسِّرُوْا وَلَا تُعَسِّرُوْا. (الحدیث) رواه احمد ۱/۲۸۳

18. हज़रत इब्ने अब्बास ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : लोगों को (दीन) सिखाओ, उन के साथ आसानी का बरताव करो और सख़्ती का बरताव न करो। (मुस्नद अहमद)

﴿ 19 ﴾ عَنْ اَبِیْ هُرَيْرَةَ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ اَنَّهُ مَرَّ بِسُوْقِ الْمَدِيْنَةِ فَوَقَفَ عَلَيْهَا وَقَالَ: يَا اَهْلَ السُّوْقِ مَا اَعْجَزَكُمْ؟ قَالُوْا: وَمَا ذَاكَ يَا اَبَاهُرَيْرَةَ؟ قَالَ: ذَاكَ مِيْرَاثُ رَسُوْلِ اللّٰهِ ﷺ يُقَسَّمُ، وَاَنْتُمْ هٰهُنَا اَلَا تَذْهَبُوْنَ فَتَاْخُذُوْنَ نَصِيْبَكُمْ مِنْهُ؟ قَالُوْا: وَاَيْنَ هُوَ؟ قَالَ: فِی الْمَسْجِدِ،

فَخَرَجُوْا سِرَاعًا، وَوَقَفَ اَبُوْ هُرَيْرَةَ لَهُمْ حَتّٰى رَجَعُوْا، فَقَالَ لَهُمْ: مَا لَكُمْ؟ قَالُوْا: يَا اَبَا هُرَيْرَةَ! فَقَدْ اَتَيْنَا الْمَسْجِدَ فَدَخَلْنَا فَلَمْ نَرَ فِيْهِ شَيْئًا يُقْسَمُ! فَقَالَ لَهُمْ اَبُوْهُرَيْرَةَ: وَمَا رَاَيْتُمْ فِي الْمَسْجِدِ اَحَدًا؟ قَالُوْا: بَلٰى، رَاَيْنَا قَوْمًا يُصَلُّوْنَ، وَقَوْمًا يَقْرَءُوْنَ الْقُرْآنَ، وَقَوْمًا يَتَذَاكَرُوْنَ الْحَلَالَ وَالْحَرَامَ، فَقَالَ لَهُمْ اَبُوْ هُرَيْرَةَ: وَيْحَكُمْ فَذَاكَ مِيْرَاثُ مُحَمَّدٍ ﷺ

رواه الطبراني في الاوسط واسناده حسن، مجمع الزوائد ١/٣٢١

19. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ एक मर्तबा मदीना के बाज़ार से गुज़रते हुए ठहर गए और फ़रमाया : बाज़ार वालो! तुम्हें किस चीज़ ने आजिज़ बना दिया है? लोगों ने पूछा : अबू हुरैरह क्या बात है? आप ﷺ ने फ़रमाया : तुम यहां बैठे हो और रसूलुल्लाह ﷺ की मीरास तक़सीम हो रही है। क्या तुम जाकर रसूलुल्लाह ﷺ की मीरास से अपना हिस्सा लेना नहीं चाहते? लोगों ने पूछा : रसूलुल्लाह ﷺ की मीरास कहां तक़सीम हो रही है? आपने फ़रमाया : मस्जिद में। लोग दौड़े हुए मस्जिद में गए। अबू हुरैरह ﷺ लोगों के वापस आने के इंतज़ार में वहीं ठहरे रहे, यहां तक कि लोग वापस आ गए। आप ﷺ ने पूछा : क्या बात हुई कि तुम वापस आ गए? उन्होंने अर्ज़ किया : अबू हुरैरह हम मस्जिद गए, जब हम मस्जिद में दाख़िल हुए तो हमने वहां कोई चीज़ तक़सीम होती हुई नहीं देखी। हज़रत अबू हुरैरह ﷺ ने उनसे पूछा तुमने मस्जिद में किसी को नहीं देखा? उन्होंने अर्ज़ किया : जी हां, हमने कुछ लोगों को देखा कि वह नमाज़ पढ़ रहे थे, कुछ लोग क़ुरआन करीम की तिलावत कर रहे थे और कुछ लोग हलाल व हराम का मुज़ाकरा कर रहे थे। हज़रत अबू हुरैरह ﷺ ने फ़रमाया : तुम पर अफ़सोस है, यही तो रसूलुल्लाह ﷺ की मीरास है।

(तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿ 20 ﴾ عَنْ عَبْدِاللهِ يَعْنِي ابْنَ مَسْعُوْدٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: إِذَا اَرَادَ اللهُ بِعَبْدٍ خَيْرًا فَقَّهَهُ فِي الدِّيْنِ، وَاَلْهَمَهُ رُشْدَهُ.

رواه البزار والطبراني في الكبير ورجاله موثقون، مجمع الزوائد ١/٣٢٧

20. हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ि० फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जब अल्लाह तआला किसी बन्दे के साथ भलाई का इरादा फ़रमाते हैं, तो उसे दीन की समझ अ़ता फ़रमाते हैं और सही बात उसके दिल में डालते हैं।

(बज़्ज़ार, तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿ 21 ﴾ عَنْ أَبِيْ وَاقِدٍ اللَّيْثِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ بَيْنَمَا هُوَ جَالِسٌ فِي الْمَسْجِدِ وَالنَّاسُ مَعَهُ إِذْ أَقْبَلَ ثَلَاثَةُ نَفَرٍ، فَأَقْبَلَ اثْنَانِ إِلَى رَسُوْلِ اللهِ ﷺ وَذَهَبَ وَاحِدٌ، قَالَ: فَوَقَفَا عَلَى رَسُوْلِ اللهِ ﷺ فَأَمَّا أَحَدُهُمَا فَرَأَى فُرْجَةً فِي الْحَلْقَةِ فَجَلَسَ فِيْهَا، وَأَمَّا الْآخَرُ فَجَلَسَ خَلْفَهُمْ، وَأَمَّا الثَّالِثُ فَأَدْبَرَ ذَاهِبًا فَلَمَّا فَرَغَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ قَالَ: أَلَا أُخْبِرُكُمْ عَلَى النَّفَرِ الثَّلَاثَةِ؟ أَمَّا أَحَدُهُمْ فَأَوَى إِلَى اللهِ تَعَالَى فَآوَاهُ اللهُ إِلَيْهِ، وَأَمَّا الْآخَرُ فَاسْتَحْيَا فَاسْتَحْيَا اللهُ مِنْهُ، وَأَمَّا الْآخَرُ فَأَعْرَضَ فَأَعْرَضَ اللهُ عَنْهُ.

رواه البخاري، باب من قعد حيث ينتهي به المجلس.....، رقم:٦٦

21. हजरत अबू वाक़िद लैसी ﷺ से रिवायत है कि एक मर्तबा रसूलुल्लाह ﷺ मस्जिद में तशरीफ़ फ़रमा थे और लोग भी आपके पास मौजूद थे। इतने में तीन आदमी आए, दो रसूलुल्लाह ﷺ की तरफ़ मुतवज्जह हुए और एक चला गया। वे दोनों रसूलुल्लाह ﷺ के पास खड़े हो गए। उनमें से एक साहब को हल्क़ा में ख़ाली जगह नजर आई, वह उस जगह बैठ गए, दूसरे साहब लोगों के पीछे बैठ गए और तीसरा आदमी (जैसा के ऊपर गुजरा) पुश्त फेर कर चला गया। जब रसूलुल्लाह ﷺ हल्क़ा से फ़ारिग़ हुए तो इर्शाद फ़रमाया : क्या मैं तुम्हें उन तीन आदमियों के बारे में न बतलाऊं? एक ने तो अल्लाह तआला के पास अपनी जगह बनाई, यानी हल्क़े में बैठ गया तो अल्लाह तआला ने उसे (अपनी रहमत में) जगह दे दी। दूसरे ने (हल्क़े के अन्दर बैठने में) शर्म महसूस की तो अल्लाह तआला ने भी उसके साथ हया का मामला फ़रमाया, यानी अपनी रहमत से महरूम न फ़रमाया और तीसरे ने बेरुख़ी की, अल्लाह तआला ने भी उससे बेरुख़ी का मामला फ़रमाया। (बुख़ारी)

﴿ 22 ﴾ عَنْ أَبِيْ هَارُوْنَ الْعَبْدِيِّ رَحِمَهُ اللهُ عَنْ أَبِيْ سَعِيْدٍ الْخُدْرِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: يَأْتِيْكُمْ رِجَالٌ مِنْ قِبَلِ الْمَشْرِقِ يَتَعَلَّمُوْنَ، فَإِذَا جَاؤُوْكُمْ فَاسْتَوْصُوْا بِهِمْ خَيْرًا قَالَ: فَكَانَ أَبُوْسَعِيْدٍ إِذَا رَآنَا قَالَ: مَرْحَبًا بِوَصِيَّةِ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ.

رواه الترمذي، باب ماجاء في الاستيصاء......، رقم: ٢٦٥١

22. हज़रत अबू हारून अ़बदी रहमतुल्लाह अ़लैह से रिवायत है कि हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ि० ने नबी करीम ﷺ का इर्शाद नक़ल फ़रमाया : तुम्हारे पास लोग मशरिक़ की जानिब से दीन का इल्म सीखने आएंगे। लिहाज़ा जब वे तुम्हारे पास आएं तो उनके साथ भलाई का मामला करना। हज़रत अबू सईद रज़ि० के शागिर्द अबू हारून अ़बदी कहते हैं कि जब हज़रत अबू सईद हमें देखते तो फ़रमाते : ख़ुश

आमदीद उन लोगों को, जिनके बारे में रसूलुल्लाह ﷺ ने हमें वसीयत फ़रमाई।
(तिर्मिज़ी)

﴿ 23 ﴾ عَنْ وَاثِلَةَ بْنِ الْاَسْقَعِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَنْ طَلَبَ عِلْمًا فَاَدْرَكَهُ كَتَبَ اللهُ لَهُ كِفْلَيْنِ مِنَ الْاَجْرِ، وَ مَنْ طَلَبَ عِلْمًا فَلَمْ يُدْرِكْهُ كَتَبَ اللهُ لَهُ كِفْلًا مِنَ الْاَجْرِ.

رواه الطبراني في الكبير ورجاله موثقون، مجمع الزوائد ١/٣٢٠

23. हज़रत वासिला बिन अस्क़अ् ؓ रिवायत फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स इल्म की तलाश में लगे, फिर उसको हासिल भी कर ले, तो अल्लाह तआला उसके लिए दो अज्र लिख देते हैं और जो शख़्स इल्म का तालिब हो, लेकिन उसको हासिल न कर सके, तो अल्लाह तआला उसके लिए एक अज्र लिख देते हैं। (तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿ 24 ﴾ عَنْ صَفْوَانَ بْنِ عَسَّالٍ الْمُرَادِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: اَتَيْتُ النَّبِيَّ ﷺ وَ هُوَ فِي الْمَسْجِدِ مُتَّكِئٌ عَلٰى بُرْدٍ لَهُ اَحْمَرَ، فَقُلْتُ لَهُ: يَا رَسُوْلَ اللهِ! اِنِّيْ جِئْتُ اَطْلُبُ الْعِلْمَ، فَقَالَ: مَرْحَبًا بِطَالِبِ الْعِلْمِ، اِنَّ طَالِبَ الْعِلْمِ لَتَحُفُّهُ الْمَلَائِكَةُ بِاَجْنِحَتِهَا، ثُمَّ يَرْكَبُ بَعْضُهُمْ بَعْضًا حَتّٰى يَبْلُغُوا السَّمَاءَ الدُّنْيَا مِنْ مَحَبَّتِهِمْ لِمَا يَطْلُبُ.

رواه الطبراني في الكبير ورجاله رجال الصحيح، مجمع الزوائد ١/٣٤٣

24. हज़रत सफ़वान बिन अस्साल मुरादी ؓ फ़रमाते हैं कि : मैं नबी करीम ﷺ की ख़िदमत में हाज़िर हुआ। आप उस वक़्त अपनी सुर्ख़ धारियों वाली चादर पर टेक लगाए तशरीफ़ फ़रमा थे। मैंने अर्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! मैं इल्म हासिल करने आया हूं। नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : तालिबे इल्म को ख़ुशआमदीद हो! तालिबे इल्म को फ़रिश्ते अपने परों से घेर लेते हैं और फिर इस कसरत से आकर ऊपर तले जमा होते रहते हैं कि आसमान तक पहुंच जाते हैं और वह उस इल्म की मुहब्बत की वजह से ऐसा करते हैं, जिसको यह तालिबे इल्म हासिल कर रहा है।
(तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿ 25 ﴾ عَنْ ثَعْلَبَةَ بْنِ الْحَكَمِ الصَّحَابِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: يَقُوْلُ اللهُ عَزَّ وَجَلَّ لِلْعُلَمَاءِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ اِذَا قَعَدَ عَلٰى كُرْسِيِّهِ لِفَصْلِ عِبَادِهِ: اِنِّيْ لَمْ اَجْعَلْ عِلْمِيْ وَحِلْمِيْ فِيْكُمْ اِلَّا وَ اَنَا اُرِيْدُ اَنْ اَغْفِرَ لَكُمْ عَلٰى مَا كَانَ فِيْكُمْ وَلَا اُبَالِيْ.

رواه الطبراني في الكبير ورواته ثقات، الترغيب ١/١٠١

25. हज़रत सालबा बिन हकम ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : क़ियामत के दिन जब अल्लाह तआला अपने बन्दों के दर्मियान फ़ैसले के लिए अपनी (शान के मुताबिक़) कुर्सी पर तशरीफ़ फ़रमा होंगे, तो उलमा से फ़रमाएंगे : मैंने अपने इल्म और हिल्म यानी नर्मी और बरदाश्त से तुम्हें इसलिए नवाज़ा था कि मैं चाहता था कि तुम्हारी कोताहियों के बावजूद तुम से दरगुज़र करूं और मुझको उसकी कोई परवाह नहीं, यानी तुम चाहे कितने ही बड़े गुनाहगार हो, तुम्हें बख़्शना मेरे नज़दीक कोई बड़ी बात नहीं है। (तबरानी, तर्ग़ीब)

﴿26﴾ عَنْ اَبِى الدَّرْدَاءِ رَضِىَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: اِنِّىْ سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: مَنْ سَلَكَ طَرِيْقًا يَطْلُبُ فِيْهِ عِلْمًا سَلَكَ اللهُ بِهٖ طَرِيْقًا مِنْ طُرُقِ الْجَنَّةِ، وَاِنَّ الْمَلَائِكَةَ لَتَضَعُ اَجْنِحَتَهَا رِضًا لِطَالِبِ الْعِلْمِ، وَ اِنَّ الْعَالِمَ لَيَسْتَغْفِرُ لَهٗ مَنْ فِى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ، وَ الْحِيْتَانُ فِىْ جَوْفِ الْمَاءِ، وَاِنَّ فَضْلَ الْعَالِمِ عَلَى الْعَابِدِ كَفَضْلِ الْقَمَرِ لَيْلَةَ الْبَدْرِ عَلٰى سَائِرِ الْكَوَاكِبِ، وَاِنَّ الْعُلَمَاءَ وَرَثَةُ الْاَنْبِيَاءِ، وَ اِنَّ الْاَنْبِيَاءَ لَمْ يُوَرِّثُوْا دِيْنَارًا وَّلَا دِرْهَمًا، وَرَّثُوْا الْعِلْمَ، فَمَنْ اَخَذَهٗ اَخَذَ بِحَظٍّ وَافِرٍ. رواه ابو داؤد، باب فى فضل العلم، رقم: ٣٦٤١

26. हज़रत अबुद्दर्दा ﷺ फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : जो शख़्स इल्मे दीन हासिल करने के लिए किसी रास्ते पर चलता है तो अल्लाह तआला उसकी वजह से उसे जन्नत के रास्तों में से एक रास्ते पर चला देते हैं, यानी इल्म हासिल करना उसके लिए जन्नत में दाख़िले का एक सबब बन जाता है। फ़रिश्ते तालिबे इल्म की ख़ुशनूदी के लिए अपने परों को बिछा देते हैं। आलिम के लिए आसमान व ज़मीन की सारी मख़्लूक़ात और मछलियां, जो पानी के अन्दर हैं सबकी सब मग्फ़िरत की दुआ करती हैं। बिलाशुब्हा आलिम की फ़ज़ीलत आबिद पर ऐसी है जैसे चौदहवीं रात के चांद को सारे सितारों पर फ़ज़ीलत है। बिलाशुब्हा उलमा अम्बिया अलैहिमुस्सलाम के वारिस हैं और अम्बिया अलैहिमुस्सलाम दीनार और दिरहम (माल व दौलत) का वारिस नहीं बनाते, वे तो इल्म का वारिस बनाते हैं, लिहाज़ा जिस शख़्स ने इल्मे दीन हासिल किया, उसने (इस मीरास में से) भरपूर हिस्सा लिया। (अबूदाऊद)

﴿27﴾ عَنْ اَبِى الدَّرْدَاءِ رَضِىَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: وَ مَوْتُ الْعَالِمِ مُصِيْبَةٌ لَا تُجْبَرُ وَ ثُلْمَةٌ لَا تُسَدُّ وَ هُوَ نَجْمٌ طُمِسَ، مَوْتُ قَبِيْلَةٍ اَيْسَرُ مِنْ مَوْتِ عَالِمٍ (وهو بعض الحديث) رواه البيهقى فى شعب الايمان ٢/٢٦٤

27. हज़रत अबुद्दर्दा ﷺ फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : आ़लिम की मौत ऐसी मुसीबत है जिसकी तलाफ़ी नहीं हो सकती और ऐसा नुक़्सान है जो पूरा नहीं हो सकता और आ़लिम ऐसा सितारा है जो (मौत की वजह से) बेनूर हो गया। एक पूरे क़बीले की मौत एक आ़लिम की मौत से कम दर्जे की है। (बैहक़ी)

﴿ 28 ﴾ عَنْ اَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: إِنَّ مَثَلَ الْعُلَمَاءِ كَمَثَلِ النُّجُوْمِ فِي السَّمَاءِ يُهْتَدٰى بِهَا فِيْ ظُلُمَاتِ الْبَرِّ وَالْبَحْرِ، فَاِذَا انْطَمَسَتِ النُّجُوْمُ اَوْشَكَ اَنْ تَضِلَّ الْهُدَاةُ. رواه احمد ۱۵۷/۳

28. हज़रत अनस बिन मालिक ﷺ फ़रमाते हैं कि नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : उलमा की मिसाल उन सितारों की तरह है जिनसे ख़ुश्की और तरी के अंधेरों में रहनुमाई हासिल की जाती है। जब सितारे बेनूर हो जाते हैं तो इस बात का इम्कान होता है कि रास्ता चलने वाले भटक जाएं। (मुस्नद अहमद)

फ़ायदा : मुराद यह है कि उलमा के न होने से लोग गुमराह हो जाते हैं।

﴿ 29 ﴾ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ فَقِيْهٌ اَشَدُّ عَلَى الشَّيْطَانِ مِنْ اَلْفِ عَابِدٍ.

رواه الترمذي و قال: هذا حديث غريب، باب ماجاء في فضل الفقه على العبادة، رقم: ۲٦۸۱

29. हज़रत इब्ने अ़ब्बास ﷺ फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : एक आ़लिमे दीन शैतान पर हज़ार आ़बिदों से ज़्यादा सख़्त है। (तिर्मिज़ी)

फ़ायदा : हदीस शरीफ़ का मतलब यह है कि शैतान के लिए एक हज़ार आ़बिदों को धोखा देना आसान है, पूरे दीन की समझ रखने वाले एक आ़लिम को धोखा देना मुश्किल है।

﴿ 30 ﴾ عَنْ اَبِيْ اُمَامَةَ الْبَاهِلِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: ذُكِرَ لِرَسُوْلِ اللهِ ﷺ رَجُلَانِ اَحَدُهُمَا عَابِدٌ وَالْآخَرُ عَالِمٌ، فَقَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: فَضْلُ الْعَالِمِ عَلَى الْعَابِدِ كَفَضْلِيْ عَلٰى اَدْنَاكُمْ، ثُمَّ قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: إِنَّ اللهَ وَمَلَائِكَتَهُ وَاَهْلَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرَضِيْنَ حَتَّى النَّمْلَةَ فِيْ جُحْرِهَا وَحَتَّى الْحُوْتَ لَيُصَلُّوْنَ عَلٰى مُعَلِّمِ النَّاسِ الْخَيْرَ. رواه الترمذي

وقال: هذا حديث حسن غريب صحيح، باب ماجاء في فضل الفقه على العبادة، رقم: ۲٦۸۵

30. हज़रत अबू उमामा बाहिली ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ के सामने दो आदमियों का ज़िक्र किया गया, जिनमें एक आबिद था और दूसरा आलिम। रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : आलिम की फ़ज़ीलत आबिद पर ऐसी है, जैसे मेरी फ़ज़ीलत तुम में से एक मामूली शख़्स पर। उसके बाद नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : लोगों को भलाई सिखाने वाले पर अल्लाह तआला, उनके फ़रिश्ते, आसमान और ज़मीन की तमाम मख़्लूक़ात, यहां तक कि चींटी अपने बिल में और मछली (पानी में अपने-अपने अन्दाज़ में) रहमत भेजती और दुआएं करती हैं। (तिर्मिज़ी)

﴿ 31 ﴾ عَنْ اَبِىْ هُرَيْرَةَ رَضِىَ اللهُ عَنْهُ يَقُوْلُ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: اَلَا اِنَّ الدُّنْيَا مَلْعُوْنَةٌ وَمَلْعُوْنٌ مَا فِيْهَا اِلَّا ذِكْرُ اللهِ وَمَا وَالَاهُ وَعَالِمٌ اَوْ مُتَعَلِّمٌ.

رواه الترمذى وقال: هذا حديث حسن غريب، باب منه حديث ان الدنيا ملعونة، رقم: ٢٣٢٢

31. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : ग़ौर से सुनो! दुनिया और दुनिया में जो कुछ है वह अल्लाह तआला की रहमत से दूर है, अल्बत्ता अल्लाह तआला का ज़िक्र और वे चीज़ें, जो अल्लाह तआला से क़रीब करें (यानी नेक अमल) और आलिम और तालिबे इल्म कि ये सब चीज़ें अल्लाह तआला की रहमत से दूर नहीं हैं। (तिर्मिज़ी)

﴿ 32 ﴾ عَنْ اَبِىْ بَكْرَةَ رَضِىَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ النَّبِىَّ ﷺ يَقُوْلُ: اُغْدُ عَالِمًا اَوْ مُتَعَلِّمًا اَوْ مُسْتَمِعًا اَوْ مُحِبًّا وَلَا تَكُنِ الْخَامِسَةَ فَتَهْلِكَ وَالْخَامِسَةُ اَنْ تُبْغِضَ الْعِلْمَ وَاَهْلَهُ

رواه الطبرانى فى الثلاثة والبزار ورجاله موثقون، مجمع الزوائد ١/٣٢٨

32. हज़रत अबू बकर : ﷺ फ़रमाते हैं मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : तुम या तो आलिम बनो, या तालिबे इल्म बनो, या इल्म तवज्जोह से सुनने वाले बनो, या इल्म और इल्म वालों से मुहब्बत करने वाले बनो (इन चार के अलावा) पांचवीं क़िस्म के मत बनो, वरना हलाक हो जाओगे। पांचवीं क़िस्म यह है कि तुम इल्म और इल्म वालों से बुग़्ज़ रखो। (तबरानी, बज़्ज़ार, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿ 33 ﴾ عَنِ ابْنِ مَسْعُوْدٍ رَضِىَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ النَّبِىَّ ﷺ يَقُوْلُ: لَا حَسَدَ اِلَّا فِى اثْنَتَيْنِ: رَجُلٍ آتَاهُ اللهُ مَالًا فَسَلَّطَهُ عَلٰى هَلَكَتِهٖ فِى الْحَقِّ، وَرَجُلٍ آتَاهُ اللهُ حِكْمَةً فَهُوَ يَقْضِىْ بِهَا وَيُعَلِّمُهَا.

رواه البخارى، باب انفاق المال فى حقه، رقم: ١٤٠٩

33. हज़रत इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : हसद दो शख़्सों के अलावा किसी पर जायज़ नहीं, यानी अगर हसद करना किसी पर जायज़ होता, तो ये दो शख़्स ऐसे थे कि उन पर जायज़ होता। एक वह शख़्स, जिसको अल्लाह तआला ने माल दिया हो और वह उसे अल्लाह तआला की रज़ा वाले कामों में ख़र्च करता हो। दूसरे वह जिसको अल्लाह तआला ने इल्म अता फ़रमाया और वह उसके मुताबिक़ फ़ैसले करता हो और उसे दूसरों को सिखाता हो। (बुख़ारी)

﴿ 34 ﴾ عَنْ عُمَرَبْنِ الْخَطَّابِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: بَيْنَا نَحْنُ عِنْدَرَسُوْلِ اللهِ ﷺ ذَاتَ يَوْمٍ، اِذْ طَلَعَ عَلَيْنَا رَجُلٌ شَدِيْدُ بَيَاضِ الثِّيَابِ، شَدِيْدُ سَوَادِ الشَّعْرِ، لَا يُرَى عَلَيْهِ اَثَرُ السَّفَرِ، وَلَا يَعْرِفُهُ مِنَّا اَحَدٌ، حَتّٰى جَلَسَ اِلَى النَّبِيِّ ﷺ، فَاَسْنَدَ رُكْبَتَيْهِ اِلٰى رُكْبَتَيْهِ، وَوَضَعَ كَفَّيْهِ عَلٰى فَخِذَيْهِ، وَ قَالَ: يَا مُحَمَّدُ! اَخْبِرْنِيْ عَنِ الْاِسْلَامِ؟ فَقَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: اَلْاِسْلَامُ اَنْ تَشْهَدَ اَنْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللهُ وَ اَنَّ مُحَمَّدًا رَسُوْلُ اللهِ ﷺ، وَ تُقِيْمَ الصَّلَاةَ، وَتُؤْتِيَ الزَّكَاةَ، وَتَصُوْمَ رَمَضَانَ، وَ تَحُجَّ الْبَيْتَ اِنِ اسْتَطَعْتَ اِلَيْهِ سَبِيْلًا، قَالَ: صَدَقْتَ، قَالَ: فَعَجِبْنَا لَهُ، يَسْئَلُهُ، وَيُصَدِّقُهُ، قَالَ: فَاَخْبِرْنِيْ عَنِ الْاِيْمَانِ؟ قَالَ: اَنْ تُؤْمِنَ بِاللهِ، وَمَلَائِكَتِهِ، وَكُتُبِهِ وَرُسُلِهِ، وَالْيَوْمِ الْآخِرِ، وَتُؤْمِنَ بِالْقَدَرِ خَيْرِهِ وَشَرِّهِ، وَقَالَ: صَدَقْتَ، قَالَ فَاَخْبِرْنِيْ عَنِ الْاِحْسَانِ؟ قَالَ: اَنْ تَعْبُدَاللهَ كَاَنَّكَ تَرَاهُ، فَاِنْ لَّمْ تَكُنْ تَرَاهُ، فَاِنَّهُ يَرَاكَ، قَالَ: فَاَخْبِرْنِيْ عَنِ السَّاعَةِ؟ قَالَ: مَا الْمَسْئُوْلُ عَنْهَا بِاَعْلَمَ مِنَ السَّائِلِ، قَالَ: فَاَخْبِرْنِيْ عَنْ اَمَارَاتِهَا؟ قَالَ: اَنْ تَلِدَ الْاَمَةُ رَبَّتَهَا، وَاَنْ تَرَى الْحُفَاةَ الْعُرَاةَ، الْعَالَةَ، رِعَاءَ الشَّاءِ، يَتَطَاوَلُوْنَ فِي الْبُنْيَانِ، قَالَ: ثُمَّ انْطَلَقَ، فَلَبِثْتُ مَلِيًّا، ثُمَّ قَالَ لِيْ: يَا عُمَرُ اَتَدْرِيْ مَنِ السَّائِلُ؟ قُلْتُ، اللهُ وَرَسُوْلُهُ اَعْلَمُ، قَالَ: فَاِنَّهُ جِبْرِيْلُ، اَتَاكُمْ يُعَلِّمُكُمْ دِيْنَكُمْ.

رواه مسلم، باب بيان الايمان والاسلام...، رقم ٩٣

34. हज़रत उमर बिन ख़त्ताब رضي الله عنه फ़रमाते हैं कि एक दिन हम रसूलुल्लाह ﷺ की ख़िदमत में बैठे हुए थे कि अचानक एक शख़्स आया, जिसका लिबास इंतिहाई सफ़ेद और बाल गहरे स्याह थे, न उसकी हालत से सफ़र के आसार ज़ाहिर थे (कि जिससे समझा जाता कि यह कोई मुसाफ़िर शख़्स है) और न हम में से कोई उसको पहचानता था (जिससे यह ज़ाहिर होता कि यह मदीना का मुक़ीमी है) बहरहाल वह शख़्स रसूलुल्लाह ﷺ के इतने क़रीब आकर बैठा कि अपने घुटने आप ﷺ के घुटनों से मिला लिए और अपने दोनों हाथ अपनी दोनों रानों पर रख लिए। उसके बाद

उसने अर्ज़ किया : ऐ मुहम्मद! मुझे बताइए कि इस्लाम क्या है? रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : इस्लाम (के अरकान में से) यह है कि तुम (दिल व ज़बान से) यह गवाही दो कि अल्लाह तआला के सिवा कोई ज़ात इबादत व बंदगी के लायक़ नहीं और मुहम्मद ﷺ अल्लाह तआला के रसूल हैं, नमाज़ अदा करो, रमज़ान के रोज़े रखो और अगर बैतुल्लाह के हज की ताक़त रखते हो, तो हज करो। यह सुनकर उस शख़्स ने कहा : आपने सच फ़रमाया। हज़रत उमर रज़ि० फ़रमाते हैं, हमें उस शख़्स पर ताज्जुब हुआ कि सवाल करता है (गोया कि जानता न हो) और फिर तस्दीक़ भी करता है (जैसे पहले से जानता हो) फिर उस शख़्स ने अर्ज़ किया : मुझे बताइए कि ईमान क्या है? आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : ईमान यह है कि तुम अल्लाह को, उनके फ़रिश्तों को, उनकी किताबों को, उनके रसूलों को और क़ियामत के दिन को दिल से मानो और अच्छी बुरी तक़दीर पर यक़ीन रखो। उस शख़्स ने अर्ज़ किया : आपने सच फ़रमाया। फिर उस शख़्स ने अर्ज़ किया : मुझे बताइए कि एहसान क्या है? आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : एहसान यह है कि तुम अल्लाह तआला की इबादत और बंदगी इस तरह करो, गोया तुम अल्लाह तआला को देख रहे हो और अगर यह कैफ़ियत नसीब न हो, तो फिर इतना तो ध्यान में रखो कि अल्लाह तआला तुम्हें देख रहे हैं। फिर उस शख़्स ने अर्ज़ किया : मुझे क़ियामत के बारे में बताइए (कि कब आएगी)? आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : इस बारे में जवाब देने वाला, सवाल करने वाले से ज़्यादा नहीं जानता, यानी इस बारे में मेरा इल्म तुमसे ज़्यादा नहीं। उस शख़्स ने अर्ज़ किया : फिर मुझे उसकी कुछ निशानियां ही बता दीजिए! आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : (उसकी एक निशानी तो यह है कि) बांदी अपनी मालिका को जनेगी और (दूसरी निशानी यह है कि) तुम देखोगे कि जिन के पांव में जूता और जिस्म पर कपड़ा नहीं है, फ़क़ीर हैं, बकरियां चराने वाले हैं वे बड़ी-बड़ी इमारतें बनाने में एक दूसरे पर बाज़ी ले जाने की कोशिश करेंगे। हज़रत उमर रज़ि० फ़रमाते हैं कि वह शख़्स चला गया। मैंने कुछ देर तवक़्क़ुफ़ किया (और आने वाले शख़्स के बारे में दरयाफ़्त नहीं किया) फिर आप ﷺ ने ख़ुद ही मुझसे पूछा : उमर! जानते हो यह सवाल करने वाला शख़्स कौन था? मैंने अर्ज़ किया : अल्लाह और उनके रसूल ही ज़्यादा जानते हैं। रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : यह जिबरील ﷺ थे, जो तुम्हारे पास तुम्हारा दीन सिखाने के लिए आए थे। (मुस्लिम

फ़ायदा : हदीस शरीफ़ में क़ियामत की निशानियों में बांदी का अपनी मालिका को जनने का एक मतलब यह है कि क़ियामत के क़रीब

नाफ़रमानी आम हो जाएगी यहां तक कि लड़कियां जिनकी तबीयत में माओं की इताअ़त ज़्यादा होती है, वे भी न सिर्फ़ यह कि माओं की नाफ़रान हो जाएंगी, बल्कि उल्टा उन पर इस तरह हुक्म चलाएंगी जिस तरह एक मालिका अपनी बांदी पर हुक्म चलाती है। उसी को रसूलुल्लाह ﷺ ने इस उन्वान से ताबीर फ़रमाया है कि औरत अपनी मालिका को जनेगी। दूसरी निशानी का मतलब यह है कि क़ियामत के क़रीब माल व दौलत उन लोगों के हाथ में आ जाएगा, जो उसके अह्ल नहीं होंगे। उनकी दिलचस्पी ऊंचे-ऊंचे मकानों के बनाने में होगी और इसी में एक दूसरे पर बाज़ी ले जाने की कोशिश करेंगे। (मआरिफ़ुलहदीस)

﴿ 35 ﴾ عَنِ الْحَسَنِ رَحِمَهُ اللهُ قَالَ: سُئِلَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ عَنْ رَجُلَيْنِ كَانَا فِي بَنِيْ إِسْرَائِيْلَ، أَحَدُهُمَا كَانَ عَالِمًا يُصَلِّي الْمَكْتُوْبَةَ ثُمَّ يَجْلِسُ فَيُعَلِّمُ النَّاسَ الْخَيْرَ، وَالْآخَرُ يَصُوْمُ النَّهَارَ وَ يَقُوْمُ اللَّيْلَ، أَيُّهُمَا أَفْضَلُ؟ قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: فَضْلُ هٰذَا الْعَالِمِ الَّذِي يُصَلِّي الْمَكْتُوْبَةَ ثُمَّ يَجْلِسُ فَيُعَلِّمُ النَّاسَ الْخَيْرَ عَلَى الْعَابِدِ الَّذِي يَصُوْمُ النَّهَارَ وَ يَقُوْمُ اللَّيْلَ كَفَضْلِيْ عَلٰى أَدْنَاكُمْ رَجُلًا. رواه الدارمى ١/١٠٩

35. हज़रत हसन रहमतुल्लाह अ़लैह फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ से बनी इसराईल के दो शख़्सों के बारे में पूछा गया कि उन दोनों में कौन अफ़ज़ल है? उनमें से एक आ़लिम था, जो फ़र्ज़ नमाज़ पढ़कर लोगों को ख़ैर की बातें सिखाने में मशग़ूल हो जाता। दूसरा दिन को रोज़ा रखता और रात में इबादत करता था। रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : इस आ़लिम की फ़ज़ीलत जो फ़र्ज़ नमाज़ पढ़कर लोगों को ख़ैर की बातें सिखाने में मशग़ूल हो जाता उस आबिद पर, जो दिन को रोज़े रखता और रात में इबादत करता, ऐसी है जैसी मेरी फ़ज़ीलत तुम में से अदना दर्जे के शख़्स पर है। (दारमी)

﴿ 36 ﴾ عَنْ عَبْدِاللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: تَعَلَّمُوا الْقُرْآنَ وَعَلِّمُوْهُ النَّاسَ وَتَعَلَّمُوا الْعِلْمَ وَعَلِّمُوْهُ النَّاسَ وَتَعَلَّمُوا الْفَرَائِضَ وَعَلِّمُوْهَا النَّاسَ فَإِنِّي امْرُؤٌ مَقْبُوْضٌ وَإِنَّ الْعِلْمَ سَيُقْبَضُ حَتّٰى يَخْتَلِفَ الرَّجُلَانِ فِي الْفَرِيْضَةِ لَا يَجِدَانِ مَنْ يُخْبِرُ هُمَا بِهَا. رواه البيهقى فى شعب الايمان ٢/٢٥٥

36. हज़रत अ़ब्दुल्लाह رضي الله عنه फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया :

क़ुरआन सीखो और लोगों को सिखाओ, इल्म सीखो और लोगों को सिखाओ, फ़र्ज़ अहकाम सीखो और लोगों को सिखाओ, क्योंकि मैं दुनिया से उठा लिया जाऊंगा और इल्म भी अंक़रीब उठा लिया जाएगा, यहां तक कि दो शख़्स एक फ़र्ज़ हुक्म के बारे में इख़्तिलाफ़ करेंगे और (इल्म के कम हो जाने की वजह से) कोई ऐसा शख़्स नहीं मिलेगा जो उनको फ़र्ज़ हुक्म के बारे में सही बात बता दे। (बैहक़ी)

﴿ 37 ﴾ عَنْ اَبِیْ اُمَامَةَ الْبَاهِلِيِّ رَضِیَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: يَاَيُّهَا النَّاسُ! خُذُوا مِنَ الْعِلْمِ قَبْلَ اَنْ يُقْبَضَ الْعِلْمُ وَقَبْلَ اَنْ يُرْفَعَ الْعِلْمُ. (الحديث) رواه احمد ٥/٢٦٦

37. हज़रत अबू उमामा बाहली ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : लोगो! इल्म के वापस लिए जाने और उठा लिए जाने से पहले इल्म हासिल कर लो। (मुस्नद अहमद)

﴿ 38 ﴾ عَنْ اَبِیْ هُرَيْرَةَ رَضِیَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: اِنَّ مِمَّا يَلْحَقُ الْمُؤْمِنَ مِنْ عَمَلِهِ وَحَسَنَاتِهِ بَعْدَ مَوْتِهِ عِلْمًا عَلَّمَهُ وَ نَشَرَهُ، وَوَلَدًا صَالِحًا تَرَكَهُ، وَمُصْحَفًا وَرَّثَهُ اَوْ مَسْجِدًا بَنَاهُ اَوْبَيْتًا لِابْنِ السَّبِيْلِ بَنَاهُ، اَوْنَهْرًا اَجْرَاهُ، اَوْصَدَقَةً اَخْرَجَهَا مِنْ مَالِهِ فِیْ صِحَّتِهِ وَحَيَاتِهِ، يَلْحَقُهُ مِنْ بَعْدِ مَوْتِهِ. رواه ابن ماجه، باب ثواب معلم الناس الخير، رقم: ٢٤٢

38. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : मोमिन के मरने के बाद जिन आमाल का सवाब उसको मिलता रहता है, उनमें एक तो इल्म है जो किसी को सिखाया और फैलाया हो, दूसरा सालेह औलाद है जिसको छोड़ा हो, तीसरा क़ुरआन शरीफ़ है, जो मीरास में छोड़ गया हो, चौथा मस्जिद है, जो बना गया हो, पांचवां मुसाफ़िरख़ाना है जिसको उसने तामीर किया हो, छठा नहर है, जिसको उसने जारी किया हो, सातवां वह सदक़ा है जिसको अपनी ज़िन्दगी और सेहत में इस तरह दे गया हो कि मरने के बाद उसका सवाब मिलता रहे (मसलन वक़्फ़ की शक्ल में सदक़ा कर गया हो)। (इब्ने माजा)

﴿ 39 ﴾ عَنْ اَنَسٍ رَضِیَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِیِّ ﷺ اَنَّهُ كَانَ اِذَا تَكَلَّمَ بِكَلِمَةٍ اَعَادَهَا ثَلاَ ثًا حَتّٰی تُفْهَمَ. (الحديث)، رواه البخاري، باب من اعاد الحديث... رقم: ٩٥

39. हज़रत अनस ﷺ फ़रमाते हैं कि आप ﷺ जब कोई बात इर्शाद फ़रमाते, तो उसको तीन मर्तबा दुहराते, ताकि (इस बात को) समझ लिया जाए। (बुख़ारी)

फ़ायदा : मतलब यह है कि जब आप ﷺ कोई अहम बात इर्शाद फ़रमाते तो उस बात को तीन मर्तबा दुहराते ताकि लोग अच्छी तरह समझ लें।

(मज़ाहिरे हक़)

﴿40﴾ عَنْ عَبْدِاللهِ بْنِ عَمْرِوبْنِ الْعَاصِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ يَقُوْلُ: إِنَّ اللهَ لَا يَقْبِضُ الْعِلْمَ اِنْتِزَاعًا يَنْتَزِعُهُ مِنَ الْعِبَادِ، وَلٰكِنْ يَقْبِضُ الْعِلْمَ بِقَبْضِ الْعُلَمَاءِ حَتّٰى إِذَا لَمْ يُبْقِ عَالِمٌ اِتَّخَذَ النَّاسُ رُؤُسًا جُهَّالًا، فَسُئِلُوْا فَاَفْتَوْا بِغَيْرِ عِلْمٍ فَضَلُّوْا وَاَضَلُّوْا.

رواه البخاري، باب كيف يقبض العلم؟رقم: ١٠٠

40. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र बिन आ़स ؓ फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : अल्लाह तआ़ला इल्म को (आख़िरी ज़माने में) इस तरह नहीं उठाएंगे कि लोगों (के दिल व दिमाग़) से उसे पूरे तौर पर निकाल लें बल्कि इल्म को इस तरह उठाएंगे कि उलमा को एक-एक करके उठाते रहेंगे, यहां तक कि जब कोई आ़लिम बाक़ी नहीं रहेगा तो लोग उलमा के बजाए जाहिलों को अपना सरदार बनाएंगे, उनसे मसले पूछे जाएंगे और वे इल्म के बग़ैर फ़त्वा देंगे। नतीजा यह होगा कि ख़ुद तो गुमराह थे ही, दूसरों को भी गुमराह कर देंगे। (बुख़ारी)

﴿41﴾ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: إِنَّ اللهَ يُبْغِضُ كُلَّ جَعْظَرِيٍّ جَوَّاظٍ سَخَّابٍ بِالْأَسْوَاقِ، جِيْفَةٍ بِاللَّيْلِ، حِمَارٍ بِالنَّهَارِ، عَالِمٍ بِأَمْرِ الدُّنْيَا، جَاهِلٍ بِأَمْرِ الْآخِرَةِ.

رواه ابن حبان، قال المحقق: اسناده صحيح على شرط مسلم ١/٢٧٤

41. हज़रत अबू हुरैरह ؓ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : अल्लाह तआ़ला उस शख़्स से नफ़रत करते हैं जो सख़्तमिज़ाज हो, ज़्यादा खाने वाला हो, बाज़ारों में चीख़ने वाला हो, रात में मुर्दे की तरह (पड़ा सोता रहता) हो, दिन में गधे की तरह (दुन्यावी कामों में फंसा रहता) हो, दुनिया के मामलों का जानने वाला और आख़िरत के उमूर से बिल्कुल जाहिल हो। (इब्ने हब्बान)

﴿42﴾ عَنْ يَزِيْدَ بْنِ سَلَمَةَ الْجُعْفِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ قُلْتُ: يَارَسُوْلَ اللهِ! إِنِّيْ قَدْ سَمِعْتُ مِنْكَ حَدِيْثًا كَثِيْرًا أَخَافُ أَنْ يُنْسِيَ أَوَّلَهُ آخِرُهُ فَحَدِّثْنِيْ بِكَلِمَةٍ تَكُوْنُ جِمَاعًا، قَالَ: اِتَّقِ اللهَ فِيْمَا تَعْلَمُ.

رواه الترمذي و قال: هذا حديث ليس اسناده بمتصل وهو عندي مرسل، باب ماجاء في فضل الفقه على العبادة، رقم: ٢٦٨٣

42. हज़रत यज़ीद बिन सलमा जुअ़्फ़ी ﷺ फ़रमाते हैं कि मैंने अ़र्ज़ किया : य रसूलुल्लाह! मैंने आप से कई हदीसें सुनी हैं, याद न रहीं, मुझे इसलिए कोई जामे बात इर्शाद फ़रमा दें। रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जिन उमूर का तुम्हें इल्म है उनके बारे में अल्लाह तआ़ला से डरते रहो, यानी अपने इल्म के मुताबिक़ अ़म करो। (तिर्मिज़ी)

﴿43﴾ عَنْ جَابِرِبْنِ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا اَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ: لَا تَعَلَّمُوا الْعِلْمَ لِتُبَاهُوْا بِهِ الْعُلَمَاءَ وَلَا تُمَارُوا بِهِ السُّفَهَاءَ، وَلَا تَخَيَّرُوْا بِهِ الْمَجَالِسَ فَمَنْ فَعَلَ ذَالِكَ، فَالنَّارُ النَّارُ.

رواه ابن ماجه، باب الانتفاع بالعلم والعمل به، رقم: ٢٥٤

43. हज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : उलमा पर बड़ाई जताने, बेवक़ूफ़ों से झगड़ने यानी नासमझ अ़व से उलझने और मज्लिस जमाने के लिए इल्म हासिल न करो। जो शख़्स ऐसा क उसके लिए आग है आग। (इब्ने माजा)

फ़ायदा : इल्म को मज्लिसें जमाने के लिए हासिल न करो, इस जुमले का मतलब य है कि इल्म के ज़रिए से लोगों को अपनी ज़ात की तरफ़ मुतवज्जह न करो।

﴿44﴾ عَنْ اَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: مَنْ سُئِلَ عَنْ عِلْمٍ فَكَتَمَهُ اَلْجَمَهُ اللهُ بِلِجَامٍ مِنْ نَارٍ يَوْمَ الْقِيَامَةِ. رواه ابوداؤد، باب كراهية منع العلم، رقم: ٣٦٥٨

44. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जि शख़्स से इल्म की कोई बात पूछी जाए और वह (बावजूद जानने के) उसको छुपाए तो अल्लाह तआ़ला क़ियामत के दिन उसके मुंह में आग की लगाम डालेंगे। (अबूदाऊद)

﴿45﴾ عَنْ اَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ اَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: مَثَلُ الَّذِيْ يَتَعَلَّمُ الْعِلْمَ ثُمَّ لَا يُحَدِّثُ بِهِ كَمَثَلِ الَّذِيْ يَكْنِزُ الْكَنْزَ ثُمَّ لَا يُنْفِقُ مِنْهُ.

رواه الطبراني في الاوسط وفي اسناده ابن لهيعة، الترغيب ١٢٢/١

45. हज़रत अबू हुरैरह ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : उस शख़्स की मिसाल जो इ सीखता है, फिर लोगों को नहीं सिखाता, उस श़ की तरह है जो ख़ज़ा ा ज करता है फिर उसमें से ख़र्च नहीं करता। (तबरानी, तर्ग़ीब)

﴿46﴾ عَنْ زَيْدِ بْنِ أَرْقَمَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ كَانَ يَقُولُ: اَللّٰهُمَّ! إِنِّي أَعُوذُبِكَ مِنْ عِلْمٍ لَا يَنْفَعُ، وَمِنْ قَلْبٍ لَا يَخْشَعُ، وَمِنْ نَفْسٍ لَا تَشْبَعُ، وَمِنْ دَعْوَةٍ لَا يُسْتَجَابُ لَهَا. (وهو قطعة من الحديث) رواه مسلم، باب في الادعية، رقم: ٦٩٠٦

46. हज़रत जैद बिन अरक़म रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ यह दुआ किया करते थे : 'अल्लाहुम-म इन्नी अऊज़ु बि-क मिन इल्मिल ला यन्फ़उ व मिन क़ल्बिल्ला यख़्शउ व मिन नफ़्सिल्ला तश्बउ व मिन दावतिल्ला युस्तजाबु लहा०' (या अल्लाह! मैं आपसे पनाह मांगता हूं ऐसे इल्म से जो नफ़ा न दे और ऐसे दिल से जो न डरे और ऐसे नफ़्स से जो सैर न हो और ऐसी दुआ से जो क़ुबूल न हो।) (मुस्लिम)

﴿47﴾ عَنْ أَبِي بَرْزَةَ الْأَسْلَمِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ لَا تَزُولُ قَدَمَا عَبْدٍ يَوْمَ الْقِيَامَةِ حَتّٰى يُسْأَلَ عَنْ عُمُرِهِ فِيمَا أَفْنَاهُ، وَعَنْ عِلْمِهِ فِيمَا فَعَلَ، وَعَنْ مَالِهِ مِنْ أَيْنَ اكْتَسَبَهُ وَفِيمَا أَنْفَقَهُ وَعَنْ جِسْمِهِ فِيمَا أَبْلَاهُ.

رواه الترمذي و قال: هذا حديث حسن صحيح، باب في القيامة، رقم: ٢٤١٧

47. हज़रत अबू बरज़ा अस्लमी ﷺ फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : क़ियामत के दिन आदमी के दोनों क़दम उस वक़्त तक (हिसाब की जगह) नहीं हट सकते, जब तक उससे इन चीज़ों के बारे में पूछ न लिया जाए—अपनी उम्र किस काम में ख़र्च की? अपने इल्म पर क्या अमल किया? माल कहां से कमाया और कहां ख़र्च किया? अपनी जिस्मानी क़ुव्वत किस काम में लगाई? (तिर्मिज़ी)

﴿48﴾ عَنْ جُنْدُبِ بْنِ عَبْدِاللهِ الْأَزْدِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ صَاحِبِ النَّبِيِّ ﷺ عَنْ رَسُولِ اللهِ ﷺ قَالَ: مَثَلُ الَّذِي يُعَلِّمُ النَّاسَ الْخَيْرَ وَيَنْسٰى نَفْسَهُ كَمَثَلِ السِّرَاجِ يُضِيْءُ لِلنَّاسِ وَيَحْرِقُ نَفْسَهُ. رواه الطبراني في الكبير و اسناده حسن ان شاء الله تعالى، الترغيب ١٢٦/١

48. हज़रत जुंदुब बिन अब्दुल्लाह अज़दी ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : उस शख़्स की मिसाल जो लोगों को ख़ैर की बात सिखाए और अपने आपको भुला दे (ख़ुद अमल न करे) उस चिराग़ की-सी है जो लोगों के लिए रौशनी करता है, लेकिन ख़ुद को जला देता है। (तबरानी, तर्ग़ीब)

﴾49﴿ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَمْرٍو رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: رُبَّ حَامِلِ فِقْهٍ غَيْرِ فَقِيْهٍ، وَمَنْ لَمْ يَنْفَعْهُ عِلْمُهُ ضَرَّهُ جَهْلُهُ، اِقْرَاِ الْقُرْآنَ مَا نَهَاكَ، فَاِنْ لَمْ يَنْهَكَ فَلَسْتَ تَقْرَؤُهُ.

رواه الطبراني في الكبير وفيه شهر بن حوشب وهو ضعيف وقد وثق، مجمع الزوائد ١/ ٤٠٤

49. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र ﷺ फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : बाज़ इल्म रखने वाले इल्मी समझ-बूझ नहीं रखते (इल्म के साथ जो समझ-बूझ होनी चाहिए उससे ख़ाली होते हैं) और जिसका इल्म उसे फ़ायदा न पहुंचाए तो उसकी जिहालत उसे नुक़सान पहुंचाएगी। क़ुरआन करीम को तुम (हक़ीक़त में) उस वक़्त पढ़ने वाले (शुमार) होगे, जब तक वह क़ुरआन तुम्हें (गुनाहों और बुराइयों से) रोकता रहे और अगर वह तुम्हें न रोके तो तुम उसको हक़ीक़त में पढ़ने वाले ही नहीं। (तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴾50﴿ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا عَنْ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ اَنَّهُ قَامَ لَيْلَةً بِمَكَّةَ مِنَ اللَّيْلِ فَقَالَ: اَللّٰهُمَّ هَلْ بَلَّغْتُ؟ ثَلَاثَ مَرَّاتٍ، فَقَامَ عُمَرُ بْنُ الْخَطَّابِ، وَكَانَ اَوَّاهًا، فَقَالَ اَللّٰهُمَّ نَعَمْ، وَ حَرَّضْتَ وَ جَهَدْتَ وَ نَصَحْتَ، فَقَالَ: لَيَظْهَرَنَّ الْاِيْمَانُ حَتّٰى يُرَدَّ الْكُفْرُ اِلٰى مَوَاطِنِهِ، وَلَتُخَاضَنَّ الْبِحَارُ بِالْاِسْلَامِ، وَلَيَاْتِيَنَّ عَلَى النَّاسِ زَمَانٌ يَتَعَلَّمُوْنَ فِيْهِ الْقُرْآنَ يَتَعَلَّمُوْنَهُ وَيَقْرَؤُوْنَهُ وَيَقُوْلُوْنَ: قَدْ قَرَاْنَا وَعَلِمْنَا، فَمَنْ ذَا الَّذِيْ هُوَ خَيْرٌ مِنَّا؟ (ثُمَّ قَالَ لِاَصْحَابِهِ) فَهَلْ فِيْ اُولٰئِكَ مِنْ خَيْرٍ؟ قَالُوْا: يَارَسُوْلَ اللهِ وَمَنْ اُولٰئِكَ؟ قَالَ اُولٰئِكَ مِنْكُمْ وَاُولٰئِكَ وَقُوْدُ النَّارِ.

رواه الطبراني في الكبير ورجاله ثقات إلا أن هند بنت الحارث الخثعمية التابعية لم أر من وثقها ولاجرحها، مجمع الزوائد ١/ ١٩١ طبع مؤسسة المعارف، بيروت وهند مقبولة، تقريب التهذيب

50. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ एक रात मक्का मुकर्रमा में खड़े हुए और तीन मर्तबा यह इर्शाद फ़रमाया : ऐ अल्लाह! क्या मैंने पहुंचा दिया? हज़रत उमर ﷺ जो बहुत (ज़्यादा अल्लाह तआ़ला की बारगाह में) आह व ज़ारी करने वाले थे, उठे और अ़र्ज़ किया : जी हां (मैं अल्लाह तआ़ला को गवाह बनाता हूं कि आपने पहुंचा दिया) आपने लोगों को इस्लाम के लिए ख़ूब उभारा और आपने इसके लिए ख़ूब कोशिश की और नसीहत फ़रमाई, तो आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : ईमान ज़रूर ग़ालिब होकर रहेगा, यहां तक कि कुफ़्र को उसके ठिकानों की तरफ़ लौटा दिया जाए, और यक़ीनन तुम इस्लाम को फैलाने

लिए समुन्दर का सफ़र भी करोगे और लोगों पर ज़रूर ऐसा ज़माना आएगा जिसमें लोग क़ुरआन करीम सीखेंगे, उसकी तिलावत करेंगे और कहेंगे हमने पढ़ लिया और जान लिया, अब हम से बेहतर कौन होगा? (नबी करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया) क्या उन लोगों में कोई ख़ैर हो सकती है? यानी उनमें ज़र्रा बराबर भी ख़ैर नहीं है और दावा है कि हमसे बेहतर कौन है? सहाबा ؓ ने अ़र्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! ये कौन लोग हैं? इर्शाद फ़रमाया : ये लोग तुम ही में से होंगे यानी इसी उम्मत में से होंगे और ये ही दोख़ज़ का ईंधन हैं। (तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿51﴾ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: كُنَّا جُلُوْسًا عِنْدَ بَابِ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ نَتَذَاكَرُ يَنْزِعُ هٰذَا بِآيَةٍ وَيَنْزِعُ هٰذَا بِآيَةٍ فَخَرَجَ عَلَيْنَا رَسُوْلُ اللهِ ﷺ كَأَنَّمَا يُفْقَأُ فِي وَجْهِهِ حَبُّ الرُّمَّانِ فَقَالَ: يَا هٰؤُلَاءِ بِهٰذَا بُعِثْتُمْ أَمْ بِهٰذَا أُمِرْتُمْ؟ لَا تَرْجِعُوْا بَعْدِيْ كُفَّارًا يَضْرِبُ بَعْضُكُمْ رِقَابَ بَعْضٍ. رواه الطبراني في الاوسط ورجاله ثقات اثبات، مجمع الزوائد ١/٢٨٩

51. हज़रत अनस ؓ रिवायत करते हैं कि हम रसूलुल्लाह ﷺ के दरवाज़े के पास बैठे हुए आपस में इस तौर पर मुज़ाकरा कर रहे थे कि एक शख़्स एक आयत को और दूसरा शख़्स दूसरी आयत को अपनी बात की दलील में पेश करता (इस तरह झगड़े की-सी शक्ल बन गई)। इतने में रसूलुल्लाह ﷺ तशरीफ़ लाए, आपका चेहरा मुबारक (गुस्से में) ऐसा सुर्ख़ हो रहा था, गोया आपके चेहरा मुबारक पर अनार के दाने निचोड़ दिए गए हों। आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : लोगो! क्या तुम इस (झगड़े) के लिए दुनिया में भेजे गए हो या तुम्हें उसका हुक्म दिया गया है? मेरे इस दुनिया से जाने के बाद झगड़ने की वजह से एक दूसरे की गरदनें मार कर काफ़िर न बन जाना (कि यह अमल कुफ़्र तक पहुंचा देता है)। (तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿52﴾ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ: أَنَّ عِيْسَى ابْنَ مَرْيَمَ عَلَيْهِ السَّلَامُ قَالَ: إِنَّمَا الْأُمُوْرُ ثَلَاثَةٌ: أَمْرٌ تَبَيَّنَ لَكَ رُشْدُهُ فَاتَّبِعْهُ، وَأَمْرٌ تَبَيَّنَ لَكَ غَيُّهُ فَاجْتَنِبْهُ، وَأَمْرٌ اُخْتُلِفَ فِيْهِ فَرُدَّهُ إِلَى عَالِمِهِ.

رواه الطبراني في الكبير ورجاله موثقون، مجمع الزوائد ١/ ٣٩٠

52. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास ؓ रसूलुल्लाह ﷺ का इर्शाद नक़ल करते हैं कि हज़रत ईसा ؑ ने फ़रमाया : उमूर तीन ही क़िस्म के होते हैं। एक तो वह, जिसका हक़ होना वाज़ेह हो, उसकी पैरवी करो, दूसरा वह जिसका ग़लत होना वाज़ेह

हो उससे बचो, तीसरा वह जिसका हक़ होना या ग़लत होना वाज़ेह न हो, उसको उसके जानने वाले यानी आ़लिम से पूछो। (तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)

﴿53﴾ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: اِتَّقُوا الْحَدِيْثَ عَنِّي إِلَّا مَا عَلِمْتُمْ، فَمَنْ كَذَبَ عَلَيَّ مُتَعَمِّدًا فَلْيَتَبَوَّأْ مَقْعَدَهُ مِنَ النَّارِ، وَ مَنْ قَالَ فِي الْقُرْآنِ بِرَأْيِهِ فَلْيَتَبَوَّأْ مَقْعَدَهُ مِنَ النَّارِ.

رواه الترمذي وقال: هذا حديث حسن باب ماجاء في الذي يفسر القران برايه رقم: ٢٩٥١

53. हज़रत इब्ने अ़ब्बास ﷻ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : मेरी तरफ़ निस्बत ब्यान करने में एहतियात करो। सिर्फ़ उसी हदीस को ब्यान करो जिसका हदीस होना तुम्हें मालूम हो। जिस शख़्स ने जान-बूझ-कर मेरी तरफ़ ग़लत हदीस मंसूब की, उसे अपना ठिकाना दोज़ख़ में बना लेना चाहिए। जिसने क़ुरआन करीम की तफ़्सीर में अपनी राय से कुछ कहा उसे अपना ठिकाना दोज़ख़ में बना लेना चाहिए। (तिर्मिज़ी)

﴿54﴾ عَنْ جُنْدُبٍ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: مَنْ قَالَ فِي كِتَابِ اللّٰهِ بِرَأْيِهِ فَأَصَابَ فَقَدْ أَخْطَأَ.

رواه ابو داؤد، باب الكلام في كتاب الله بلاعلم، رقم: ٣٦٥٢

54. हज़रत जुंदुब ﷻ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जिसने क़ुरआन करीम (की तफ़्सीर) में अपनी राय से कुछ कहा और वह हक़ीक़त में सही भी हो, तब भी उसने ग़लती की। (अबूदाऊद)

फ़ायदा : मतलब यह है कि जो शख़्स क़ुरआन करीम की तफ़्सीर अपनी अ़क़्ल और राय से करता है फिर इत्तिफ़ाक़न वह सही हो जाए, तब भी उसने ग़लती की, क्योंकि उसने उस तफ़्सीर के लिए न हदीसों की तरफ़ रुजूअ़ किया और न ही उलमा-ए-उम्मत की तरफ़ रुजूअ़ किया। (मज़ाहिरे हक़)

بسم الله الرحمن الرحيم

क़ुरआन करीम और हदीस शरीफ़ से असर लेना

क़ुरआनी आयतें

قَالَ تَعَالٰى: ﴿وَاِذَا سَمِعُوْا مَآ اُنْزِلَ اِلَى الرَّسُوْلِ تَرٰٓى اَعْيُنَهُمْ تَفِيْضُ مِنَ الدَّمْعِ مِمَّا عَرَفُوْا مِنَ الْحَقِّ﴾ [المائدة:٨٣]

अल्लाह तआला ने अपने रसूल ﷺ से इर्शाद फ़रमाया : और जब ये लोग इस किताब को सुनते हैं जो रसूल पर नाज़िल हुई है, तो आप (क़ुरआन करीम के तास्सुर से) उनकी आंखों को आंसुओं से बहता हुआ देखते हैं, उसकी वजह यह है कि उन्होंने हक़ को पहचान लिया। (माइदः 83)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿وَاِذَا قُرِئَ الْقُرْاٰنُ فَاسْتَمِعُوْا لَهٗ وَاَنْصِتُوْا لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ﴾ [الأعراف:٢٠٤]

अल्लाह तआला का इर्शाद है : और जब क़ुरआन पढ़ा जाए तो उसे कान लगा कर सुनो और चुप रहो, ताकि तुम पर रहम किया जाए। (आराफ़ 204)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿قَالَ فَاِنِ اتَّبَعْتَنِيْ فَلَا تَسْئَلْنِيْ عَنْ شَيْءٍ حَتّٰٓى اُحْدِثَ لَكَ مِنْهُ ذِكْرًا﴾ [الكهف:٧٠]

अल्लाह तआ़ला का इर्शाद है : उन बुज़ुर्ग ने हज़रत मूसा अलैहि० से फ़रमाया : अगर आप (इल्म हासिल करने के लिए) मेरे साथ रहना चाहते हैं तो इतना ख़्याल रहे कि आप किसी बात के बारे में पूछें नहीं, जब तक कि उसके मुतअल्लिक़ मैं ख़ुद ही न बता दूं। (कहफ़ : 70)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿فَبَشِّرْ عِبَادِ ۙ الَّذِيْنَ يَسْتَمِعُوْنَ الْقَوْلَ فَيَتَّبِعُوْنَ اَحْسَنَهٗ ۭ اُولٰۗىِٕكَ الَّذِيْنَ هَدٰىهُمُ اللّٰهُ وَاُولٰۗىِٕكَ هُمْ اُولُوا الْاَلْبَابِ﴾ [الزمر:١٧، ١٨]

अल्लाह तआ़ला ने अपने रसूल ﷺ से इर्शाद फ़रमाया : आप मेरे उन बन्दों को ख़ुशख़बरी सुना दीजिए जो इस कलामे इलाही को कान लगा कर सुनते हैं, फिर उसकी अच्छी बातों पर अ़मल करते हैं, यही लोग हैं जिनको अल्लाह तआ़ला ने हिदायत दी है और यही अक़्ल वाले हैं। (ज़ुमर : 17-18)

وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿اَللّٰهُ نَزَّلَ اَحْسَنَ الْحَدِيْثِ كِتٰبًا مُّتَشَابِهًا مَّثَانِيَ تَقْشَعِرُّ مِنْهُ جُلُوْدُ الَّذِيْنَ يَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ ۚ ثُمَّ تَلِيْنُ جُلُوْدُهُمْ وَقُلُوْبُهُمْ اِلٰى ذِكْرِ اللّٰهِ﴾ [الزمر:٢٣]

एक जगह इर्शाद है : अल्लाह तआ़ला ने बेहतरीन कलाम यानी क़ुरआन करीम नाज़िल फ़रमाया है, वह कलाम ऐसी किताब है जिसके मज़ामीन आपस में एक दूसरे से मिलते-जुलते हैं, उसकी बातें बार-बार दुहराई गई हैं, जो लोग अपने रब से डरते हैं उनके बदन इस किताब को सुनकर कांप उठते हैं, फिर उनके जिस्म और उनके दिल नर्म होकर अल्लाह तआ़ला की याद की तरफ़ मुतवज्जह हो जाते हैं। (ज़ुमर : 23)

नबी ﷺ की हदीसें

﴿55﴾ عَنْ عَبْدِ اللّٰهِ بْنِ مَسْعُوْدٍ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ لِيْ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: اِقْرَاْ عَلَيَّ، قُلْتُ: اَقْرَاُ عَلَيْكَ وَ عَلَيْكَ اُنْزِلَ؟ قَالَ فَاِنِّيْ اُحِبُّ اَنْ اَسْمَعَهٗ مِنْ غَيْرِيْ، فَقَرَاْتُ عَلَيْهِ سُوْرَةَ النِّسَاءِ حَتّٰى بَلَغْتُ ﴿فَكَيْفَ اِذَا جِئْنَا مِنْ كُلِّ اُمَّةٍ ۢ بِشَهِيْدٍ وَّجِئْنَا بِكَ عَلٰى هٰٓؤُلَاۗءِ شَهِيْدًا﴾ قَالَ: اَمْسِكْ، فَاِذَا عَيْنَاهُ تَذْرِفَانِ.

رواه البخاري، باب فكيف اذا جئنا من كلّ امة بشهيد... الآية رقم: ٤٥٨٢

55\. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद ﷺ फ़रमाते हैं कि मुझसे रसूलुल्लाह ﷺ ने

इर्शाद फ़रमाया : मुझे क़ुरआन पढ़कर सुनाओ। मैंने अर्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! क्या मैं आपको पढ़ कर सुनाऊं जबकि आप पर क़ुरआन उतरा है? आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : मैं इस बात को पसन्द करता हूं कि किसी दूसरे से क़ुरआन सुनूं। चुनांचे मैंने आपके सामने सूर : निसा पढ़ी, यहां तक कि जब मैं इस आयत पर पहुंचा तर्जुमा : उस वक़्त क्या हाल होगा जब हम हर उम्मत में से एक गवाह लाएंगे और आपको अपनी उम्मत पर गवाह बनाएंगे, तो आपने इर्शाद फ़रमाया : बस अब रुक जाओ। मैं आप की तरफ़ मुतवज्जह हुआ तो देखा कि आपके आंखों से आंसू जारी हैं। (बुख़ारी)

﴾56﴿ عَنْ اَبِیْ هُرَیْرَةَ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ یَبْلُغُ بِهِ النَّبِیَّ ﷺ قَالَ: اِذَا قَضَی اللّٰهُ الْاَمْرَ فِی السَّمَاءِ ضَرَبَتِ الْمَلَائِکَةُ بِاَجْنِحَتِهَا خُضْعَانًا لِقَوْلِهِ، کَاَنَّهُ سِلْسِلَةٌ عَلٰی صَفْوَانٍ فَاِذَا فُزِّعَ عَنْ قُلُوْبِهِمْ قَالُوْا: مَاذَا قَالَ رَبُّکُمْ؟ قَالُوْا: الْحَقَّ وَ هُوَ الْعَلِیُّ الْکَبِیْرُ.

رواه البخاری، باب قول الله تعالٰی و لا تنفع الشفاعة عنده الا لمن اذن لها الآية، رقم: ٧٤٨١

56. हज़रत अबू हुरैरह ؓ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जब अल्लाह तआ़ला आसमान में कोई हुक्म नाज़िल फ़रमाते हैं, तो फ़रिश्ते अल्लाह तआ़ला के हुक्म की हैबत व रौब की वजह से कांप उठते हैं और अपने परों को हिलाने लगते हैं। फ़रिश्तों को अल्लाह तआ़ला का इर्शाद इस तरह सुनाई देता है जैसे चिकने पत्थर पर ज़ंजीर मारने की आवाज़ होती है। फिर जब फ़रिश्तों के दिलों से घबराहट दूर कर दी जाती है, तो एक दूसरे से दरयाफ़्त करते हैं कि तुम्हारे परवरदिगार ने क्या हुक्म दिया? वे कहते हैं कि हक़ बात का हुक्म फ़रमाया, और वाक़ई वह आ़लीशान है, सबसे बड़ा है। (बुख़ारी)

﴾57﴿ عَنْ اَبِیْ سَلَمَةَ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمٰنِ بْنِ عَوْفٍ رَحِمَهُ اللّٰهُ قَالَ: اِلْتَقٰی عَبْدُ اللّٰهِ بْنُ عُمَرَ وَعَبْدُ اللّٰهِ بْنُ عَمْرِو بْنِ الْعَاصِ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُمْ عَلَی الْمَرْوَةِ فَتَحَدَّثَا ثُمَّ مَضٰی عَبْدُ اللّٰهِ بْنُ عَمْرٍو وَ بَقِیَ عَبْدُ اللّٰهِ بْنُ عُمَرَ یَبْکِیْ فَقَالَ لَهُ رَجُلٌ: مَا یُبْکِیْكَ یَا اَبَا عَبْدِ الرَّحْمٰنِ؟ قَالَ: هٰذَا. یَعْنِیْ عَبْدَ اللّٰهِ بْنَ عَمْرٍو. زَعَمَ اَنَّهُ سَمِعَ رَسُوْلَ اللّٰهِ ﷺ یَقُوْلُ: مَنْ کَانَ فِیْ قَلْبِهِ مِثْقَالُ حَبَّةٍ مِنْ کِبْرٍ کَبَّهُ اللّٰهُ لِوَجْهِهِ فِی النَّارِ.

رواه احمد و الطبرانی فی الکبیر ورجاله رجال الصحیح، مجمع الزوائد ١/٢٨٢

57. हज़रत अबू सलमा बिन अ़ब्दुर्रहमान बिन औ़फ़ रहमतुल्लाह अलैह फ़रमाते हैं

कि मरवा (पहाड़ी) पर हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर ﷺ और हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र बिन आ़स ﷺ की आपस में मुलाक़ात हुई। ये दोनों कुछ देर आपस में बात करते रहे। फिर हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र ﷺ चले गए और हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर ﷺ वहां रोते हुए ठहर गए। एक आदमी ने उनसे पूछा : अबू अ़ब्दुर्रहमान! आप क्यों रो रहे हैं? हज़रत इब्ने उमर ﷺ ने फ़रमाया : ये साहब, यानी हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र ﷺ अभी बताकर गए हैं कि उन्होंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : जिसके दिल में राई के दाने के बराबर भी तकब्बुर होगा, अल्लाह तआ़ला उसे चेहरे के बल आग में डाल देंगे। (मुस्नद अहमद, तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद)